

इस. उत्तर की भेटवर्णी स्वामी कुमानयजी ग १ विगमाउवावध्मारण (मलेर कोर् गानीबाद्देनस्या भागनीबाव अवस्था से ब्रस्त्रमः॥ निस्वास्त्रवेष्ठम् वस्त्रभः॥ न रिटाइसियसियाः।।मिह्निद्रिश्य नायतभः॥भाषानी सम्माग्रेडनियुक्तिय भक्तभाष्ट्रिया भेग्निस्थ बन्द्र मरावन मधनम् रिश्ममंडवाडें। मेमेमिस्गडें उपरथ्या यात्रवाउवम्बरागिगवाष्ट्रउगम्बन ब क्षेत्र वक्षेत्र मानवामित्र क्षेत्र सम्बन्धिम छा खेउपरा उब दिना भिष्ठ उने निर्वे नुउप्तयाच्याच्याच्याच्याच्याच्या छ या खाना भागा वा भागा वहा वहा भर्ग छ। नगतें ब्रुविद्ध क्षेत्र मनमन्द्र स्थान

भीषवडे के बमार्य हा विवास का महा में का उड़क उग्राहमा अवन्याकारण द्वरीण दिवारिय वैडिवितवीडितर्स्थडारियाकी विवस्तवी भुरमेर छाने प्रेनड वा नी। वड प्रमार छन्। भव्यमध्रवद्वायकाम्यस्वायवायम्य उत्रस्तरत्वाम्या निमार्थिया । रिडेप्रेप्रप्रियार्थि। मिश्रय्रिकारी दमीववेनीविराध्यस्यर्थस्यवाग्राम्यद्रा क्निकवेनउमगुडियां विवयिमक्वा उभाममंडमानक्यमानवयवाकावा) ॥४॥विम्यान्यान्यान्यान्यान्याः मर्गाभाउर व्याजा उपलब नियम खबड़े मुखबरणाभणमेंबवद्धरणमी ब्रिम्नमण्डे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उमियुवेभा घ्वाडिंगमभाभी वाग्रुभवी मुक्ते र याबर इंडे अंग्रेय विश्वसम्ब्रीम के वेदिय क्रीयाम्बर्डिकमुक्तिउधकारि।नेउ धरावधाराष्ट्रमिक्सम्भेक्वेयाराष्ट्रा धा रेंशाम्य बडरेग्र बेस्ट भेना भेरत है क्षास्त्रचेग्नाम्यक्षेणियदेवास्त्राम्यः । मा। ११। तरुणवास्त्रवेपरावषत्रवेपद्या वस्वभाराचामचेडबर्वेडचेग्मीराष्ट्रभार ॰ क्रिक्रागा हुउगा माराम्याय स्वारा हुड ।।। साम्याय स्वारा स ग्राम्योग्डीमवेड्वेमवाउठोग छिलेम १संह यत्र त्र विका विदेशका कर है। गराभाग उत्राववेवषाय्याग्यविष्टाम्ब्रिम्यथ् १ र्विधेवउउमम्प्रेक्षाष्ट्रिण ।। नजकामभाउ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर उद्वद्यमार्ग रेन हैं देना गरा भडेउबद्ययरायदाविकक्रकानेडिंगा गानगर्यत्वद्रस्यत्यवद्वतान्यं व **इत्रेमिट्रमा**क्षह्यीयाभाग्रुद्वण्ड उभेग्डीउउनेगा डिस्टानसहाग्रहार्स्स महा तरसारागभाष्ट्राक्षकार्विक्षात्रिका क्ष्यवभवर्गिय मणतृ ध्रमा ाष्ट्रकार मिल्येडयेमड्रवास्थ्रम्सार ॥ रागमाने सह क्रविष्य भवा उरी ने प्राथमि ह्मेर्जिन विकास के किया है वा विवास के मिल क्रमाने होन्या महारामा मान्या है। अत्येड रामानेड र रामानेड र रामानेड रामानेड रामणभस्यक्षमस्य

यमण्डिल्या मिगरिग्रिश्या ३ जिसारिमें अडियारिश भाषा अभया । कडित रिशा निकार्कतेन राष्ट्रिक तयुवसभे अधिक स्वात अध्याप उवारिका अवाष्ट्र विकास यह न जे गरे जनवयका जार में बारि मिकार दुका निजनसम्बन्धिक निम्हिन तर्गानभाष्ठराभिष्णामा उस्प्रधाना है। र्यति मिडकाबर्ध उउँ निर्मा गर्म उत्तरी मरम उन्गेउग्रमिकद्धतम्प्रकाषाद्याम्भा भववयवमापुबर्यमास्त्र गार्य देशकरा 1888677281177,01718672

व्यविनेष्ठकी यहका उग्रीपरी उपमाउग्यन्त्रा।११।।नग्रहाहार सहबीप से उव वर्ग हिल्ली से निर्मा हिणारि यमब्रवायहानवान्य प्राप्तिकामान मुख्याक्ष्मपर विष्कृतार्वि चे उर्चा है।। भेमरारिपार्यातनेडरेग्वेस्त्रमाराण्या 11971 चिराण्यसमार्भेष्वेषक्पार्धितहरी राम्बर्गिवर्यनम्यउँउउप्भारस्यात्रण्य उगाभववायनप्रनिमतववनउग्रिशावित उपरम्पयाम्ये उत्वर उरा के गरियन माउन्थरमबावबवडवाष्ट्रभुगरेगे। १४१) ."गत्रु"। गिरम्निमाउन्यस्त्रवणा हेर्

मनुश्रहमामङ्ग्रिभेडीमनीडर्क्नाउउठेगमा ४ नामीभरी भिड्मीभर्ड २ बंडामीभरिड्णाना निभाउपद्याख्य स्था विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य र्डिंगान्डम्मार्डिंगार्थेग्य द्वान्थित्र द्वान्थित्र द्वान्थित्र द्वान्थित्र द्वान्थित्र द्वान्थित्र द्वान्थित वक्षवे उबवानभन्ना इउँ ग्रेवं उपिभि उपवा वायनवन्त्रमभतेबवर छिं वयनव १ दारिववम्भश्रद्योग्रीवग्रदार्वक्षम् 722330" रहणासे बयु निपवार निपछ भेरिकस्प्रडाभारेपवरेगेड्र भवे में बरेगेड्र गर उदिग्छनागृष्टिरेउठोग द्यानिवगर्य मराग्रेडबायनडावेथायवभीवराभे किया उम्मारियवर्गे॥ तरु । बेडे बगद् उनर्यपिव॰ यनवेडी'वैरडरेंगा डिउग भने डियांनरावे

वर्जमबर्ग्य सम्बद्ध र विवरे वे दे रेड रेणियामराएगेमें बुबार्रेडेंबा वियामस्वाउठेगानानानाग्रह्मवीम्व उग्रिंशिनेवायनथ्य नम्मिरी अववाद्यनवारम्बर्गेर है।।। मूलउरियन उछवभउँधिनउभउँभिक्रेयामा। भुउडा रिरा हे जे उठेव स्मानु नगड स्वामा १५१॥ पुरायुम्बराष्ट्रियामनाम्बराय्रयस्य षबेनप्रनेतियम्डानग्डाद्रण्यनप्रकेष यभाउँ। मबस्नमाम इग्रामय विउथ डीबर्ग त्रिगभडिममबग्रमभडिममारद्यावन माभ्रत्रस्थर्धवउधवउत्रविकार्थ मं ५उडा। रियने उयवववाय्य विथना

। तरिक्रीनेष्टेबरेबजेउबववायन हैपनउजे प विशामनुग्रेउमब्गाने वर्गे देवरेवरेउम्बर्ध युन्रउचेउन्नज्ञानवउब्वनिष्ठारीयम्य उप्रवि वभाउववरियनीनवप्रमिग्राभीत्रप्ररे दिक्षी उप्रती । वाजे उनव उर्व जिया नियं के कि स्वापित के कि स्वापित के कि स्वापित के स्वापित के स्वापित के स्वापित के स्वापित के स्वापित के स ग्डिमामग्रेकडीभाउत्रमास्रेवभाउर ॰ रवेद एक क्षेत्र यर ग्ववग्राम्य अपिष्ठ ग्रम्य प्रमाणित्र विश्व विष्य विश्व यमउपेउम्बण्डबाज्मेथा भारती मबाड चैत्रिथा उत्र विभिन्न विभाग वि उपिउरगेष्ठमाउपाउगिभव्रतामरगोण्ड्या ग्रेबरेबरेउबरडी व्यथन उउने में मड्डेडबरडी

ਹੋडिंग अग्नेमवडिं ही में वैर्युता व्याडा वेथकाद्वराग्नाम्भेर्गिवसांभा हे गीए ने ने शैठी नि ठ वसल् घा उठ वी कुर्देगेडेमेमबडद्रेबिकीतक्रामें लत्र वा चेत्र का देवा व्यानिया ते देवा तिश्वनष्यभेगीडगंमस्यवावेविति गी ना डेवातमक्तियतडामाने वेम्भेनी वित्रांतरे वित्रां मिन्या ही अने डांभेमकुवारुपे डरीरो 'तरु में बाद्व अभी भारियो स्वाधी उत्वित्व ते विश्व ते क्टीएटिक्र गेडिहिब्रिक्टीविद्यां विद्यां विद्य व्यविज्योग्नित्रे वित्रे इत्वरि

इस्मवीभिष्ठीभग्रियीग्नमभेरेट ६ गानवने भावने डिनेड हैं उपित में प्रेडन भी नवा उदिगाण्डिया द्वीभगरेवी वस्क्रभीपथंवे ग्यायाचे उठे ठेउं ठे मरे थारे थी भाभ स्त्र १ उपअने र बरें डिबह्व समर्वी कर्ण डिंग ने व उवना विविद्या असम्मिन निष्ठिष्ठा । त्रवन्द्वीभागीमधीयोभेड्डिक्गाण्डिउमारिणव उ वे वे दी भेश्रवभन वीव जा की वेषा को ते युग्डीभयिकाभेमेमवनग्रते।।भयव ° यहाड्यर भगगीगम्प्रियं अवदेष्ठ थरभग्षयमिश्र दिन्द बार्बिम्ह मन्त्रवा वायनमीभरागिरगमियाधियधिर्भरा ग्वमिर्धिमृप्रियेमृष्यि विर्वे अस्त्रिये

में दिन्छर्छम्यवमार्यस्वेम सव्योग्रेमवा क्राणम् अधिक स्वास्त्र विश्वास्त्र क्षेत्र विश्वास्त्र विश्वास विष्वास विश्वास विश्वास विष्वास विश्वास विश्वास विष्वास विष्वास विश्वास विष्य विष्वास विष्यास व रेष्ट्रीवरतेष्ट्रमेश्वाग्येवायाग्ये ३११व रम्ब्रह्में ब्रह्में व्याधन उर्वेषे ब्रह्में भूति। नेवम्भेमयरववर्वायम् अग्रेवेस्यामे नेव उत्रवेगारिकाम्याम्याम्याम्यान्या विथे उत्रव भर्सवाग्वीबीयपाउउग्वर्रे वेर्भेरजेव विभार्भेड ज्यायन्यत्रिकेषेण ज्या भवेषे नियात्रवारो त्रेभेभथर्में छा। वाग्रवित्र निर्म् । उत्रवेद्य रशिष्ठिवागी ११ गत्रका गत्रका नेवर्धिय बीबाध्य अञ्जित्याका प्रीवमञ्चा प्रजे उने बार् अमुबरिराधिसाराभिमेक्षद्धम्बरीय "डि३" नंब देय करबी वन रात्य अनु अरी वेब दिरित

शक्षारेमवन्रमाधन्यवय्येडेनमारिक ? उम्बिल्यनिक दिया विविध्य कर वे भी सकार धानाग्रेडरीवममञ्दर्वघरेमें हुवा इन्जेशो न्यवाभीतन्तरवन्तरववेर्वभयतेभयोनेदेवी वर्ववर्दे वे ने बायने वे कि उत्तर के कि वा हित्रज्ञागरहुग्रह्मवायमवेसहरोभेने गमविरम्थडेबसेप्रेडमरेब्षपुउघमेमत ब्रेस्ट्रिंगाईशाम्य्रियायग्रीयगीवायु वस्वकाम्ब्रियस्य मार्ययात्रमाम्बर्भ ग्वायि स्थाने मान्से ध्यान मान्से स्थान स्थान उग्नब्भित्तवस्य स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्ययः स्ययः स्ययः स्ययः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्य मयमेमतने उभग्रेयाग्रेयाग्रेयाग्रेया जारीभेभक्षेबाग्डेबमङ्ग्यावैयाभक्षेबारी

यभेगेउज्धि स्वध्यीमेव्य स्ववेमे ।। खुरण उ ज्छिरबें प्रेनिय मगरा मिरे बार मिया रेवा कि ॥ तरुः। नजभवभवाष्मिवैद्येष्ठवाष्ट्रा । तरुः। उपेत्रभम्बर्धिरारिङार्ग्य विक्रिये विक्रम्य अन तरियेगा छित्र गाउँ बीभाइब उण्डी छार्चे उपे ानवाष्ट्रमार्द्रपाग्रिअभागमपभ र भपभ ३ भव्छ राजिभपवरीनिष्टाष्ट्रायमीबबरेडिउभव " अनुजंदिण १८॥ नजम् यस्य वार्थित्व व्की भयवरेण्डिमे मीन्य बडा दाववारे विषेत्र भे वर्गायतुग्राख्यवर्षेभपभर्वेद्यीयेवमे र्था । अध्यानिक विकास । उनेभग्यवेड्स्भग्रीयभीग्रीस्ट्येग्) हि

उभवाष्ट्रमिट्यारां विष्ठा गिरिंग्स्र सर्म क्रिब्रेनभाष्ट्र 3 विभिम्क्र उच्ड उच्छ भरत्र भवे वर्षाभाष्ट्रभामध्ययकाष्ट्रियावउष्ट्रियावीसथन ० उउद्वि उन्न विच्या विच्या भराग्यी वि ग्डीग्डथडीती डाभिरासम्थनभद्रमभद्रिये नेवव् । वम श्रम्भिम पुब्रव्वेष्ठिस र प्रवास उव मी अ उग्रेव्स्के विमेवके । १ र गारिजभास उबिभिमभरकभविग्छत्रेमेग्थबीभयवाष्टी वि इनिग्राड्यमिन्वडरायव्येष्ट्रेक व टउण्येवी मराब्र भरती गवी भारे क्षा में विभी उन्हें त्रेष्ट्रियदेमञ्जीगागभूष्रभयभवाष्ट्रामञ्चला रेंश्रिष्ठमगभग्यमभये नजरी रहु भवादि गरि ख्रुंद्वुग्डारेननिपप्यायम्बर्णिण २००)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

'नण्डानीभेगवदरिष्प्रभारते श्री वर्गनी य रेजिटिनेविमेनववराक्षरेनिभयभवास्त्रणारक्ष ने भरष्ये प्रभावष्य के अन्य ने ग्राम यनिने ते बम्भे उभेगैर हुथ उप्याण भेना बड़ा दरीरब्धें उबायनवर्गा भेडे इंग्लिस्य क्रिनीम ग्यवेमभार्यी वेभे भग्ये के किया के विकास के विता के विकास वीध्रीगर्मगर्भाग्रेण अध्यायवय्यमेगविष्ट थेक्कावरमार्थनित उपमारेभववडेम् र स्रम्भी वेउ के भित्रमें बार्मिय के मिल के मि रक्रवेडकेलियाभेवजेडाच्डुग्रवीडाचेल्ल गथवाग्में अवेदेशाग्राष्ठामाने विद्वविद्वी यास्रवेद्यावसरे विग्यस्य स्याने विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य

तमेग्री बुर्भि विवान् बरी मिश्री भाषिभारे डे र्रेथन भगतन्त्रीबादिमंडमप्रेम्प्रमाण्यतीम् ध रग्रे उगर्वनमेप्राउपामेगिनेभम्भणिगैर्व नतमीभिक्षभारते॥३१॥१९ छण्डिवण्डिसे उपनथे छ उमेबा ग्रुमधी बेमधी रेब के हुलग्भ छेदुरेयजनुरुरुथवादेषिभ् उड्डियाप्रियापे अभमुग्नोकोप्पणक्रप्यववीपिभुडीभ्रमिभग्ध बेनभारा विभाग्रेभयभवाष्ट्रम्। भवभयभवा अल्डिकारें १ "गर्मेर् उन्न उन यस्बी ध्रमने अग्रह्म अग्रह निग्य मेग मना सिभे प्रपाद इनमिभर्गा रागान ज्ञान प्रमाय स्थित विष्ट्रिया खिर्डे उत्तर । स्वित्र के कि स्वीत्र के कि स्वीत्र के स्वीत्र के स्वीत्र के स्वीत्र के स्वीत्र के स्वीत्र के स म्याम्बर्भे भग्ववी हर्उं उष्टी में भयभवे में

लोभग्ययाचे इसरी वाम निष्या वे उसरी अंग्रेग्यनीग्रेमेण हित्रणम्य र तववर्ष्यवम् रीग्रेभेष्मग्राम् इंग्लिंगम् इंग्लिंग स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स् उभयभाग्भीभग्य या उद्यमिग्र्थमार्गित्र भीगडेंघरिइभगविज्यित्र वित्र उर्जाण प्रश्न र ही र्भवापरमावनवेगाविष्ठग्राविष्ठाविष्ठवास्त्रव मवासीवेवयुग्स मवग्गव जैसाय गाउँ कार्य स्केग्वेयरभवन्गियग्डाने उपिथाउँ व थरेथउररीभेवेंतरविग विकारविश्वाक्ष नुस्त्रत्वेष्ठाथ्यद्वेष्ठाव्यवेष्ठद्येष्ठद्याक्ष्रभून व्याग्नेग्रवगाग्वगामेस्नुगृग्ग्नेग्रा गरीभगेष्ठग्रीभनगन्यवेगार ३ग्राष्ट्रिजेस्स

मध्रवीर्गरवडार्गां भरवर्षस्थवार्डरां १ ख्या वर्षित स्वीत्र क्षेत्र मानिक विषय के मान जवेबस्य वेस्र डेजावेबस्य बेबु भहे स डेजेण २४॥ श्वाचेर्क्षभववाध्योगम्याग्री नेडेरिडे में रवनरजेकाशानुरा निर्देश्यमार्थे वेवन्यर्भन किव्यमभादेवेमें छे उभभयभवाष्ट्रम वे संउवे छ वेर्रियम्प्रेरगिवस्ण्ये श्रीवाद्मावेरा। भवम अन्राम्बारी सुन्या है। अन्यान स्वाप्त करिये मध्रद्यारिष्ट्रैनग्राप्राक्षिम् वृथ्यम् अभवस्थिष वराष्ठ्रभारपामिभवाममिष्ठपन्नेजार्भेम्रहर वेदिमें जेष्टिमें मध्य गरुगा भवामधिवार अध्य वीजे ।। डिइ गारा सम्मार सरिमें राजि मिम्बरर पाग्रितमञ्भव विवन उभवन ने श्ववन वर्गेष

रमाउभवभवाडेगीभगरेउ वेवायमीय्यानह यमेनत्रजी निभक्ष्वम्ब्योग्रिमं घवराउभवा। अवारीमाद्री उद्यामाग्य वक्त उभवाईका। याज्ञ व १ सहस्व २ घर्ने नव ३ भावे डी ता वया घरमा चया सद्भाग्य र इमैग्राम्य ३ "अवश्रास्त्र है रेश्रणम्बरवेमगिष्ठिरवरेडुग्डरिनभगवद्यः) "मञ्चरम्य खननीरे भे भी बारी मुक्दि पानवा"। २४११) नजंभी नष्ट्य विष्णु दे असे विष्णु विष् अथरेनव्यस्थे भग्या नियम वर्षे म्या स्था नाम बरवेत्रप्रउजीनाभवषवंग्राप्रवर्धने मंत्राच्नाः स्गाततुगानवस्यिक्भारभाउज्ययसम्ब रवेषु हड्डी थर ने मारा हिया है भव व्यक्तित्रकोवल्या हित्र गान्य परीभारतम्य

दमुक्रमम्हरभाउउब्रेजम्बर्ग्य उन्नद्वैष्ट्री ११ भीभव वर्ष्ट्रिय जेगाव वारा प्रविच्या मेर्सिंगा ग्राम्भाव चुनि है सुधर्म सम्बद्ध स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स अयरागरियाभिसभायप्रिस्टिशे डेविध रात्रे वी विविध्व बहु सम्बर्भ महारेग महारेग महारेग स् वसेवी। श्रुविमियन्य्रेतस्रे मध्येष्ठा तरीण ष्यथातसेवी ११२ १ गोष्टि ज्ञान वर्षि से स्ट्रि रित्रमायरम्डेजीभयतेभयतेभगववववरेजेण्ण ० डेब्राम्बन्धस्यामग्रवस्रिकेणभवसद्यस् द्धरारे दुण निगम्य स्वेभवषन वसे मे बरेरी भे उग्रें स्वाय प्रस्तित विभिन्त वा उपरिक्षा विश्वाय विश्वाय विश्वाय विश्वाय विश्वाय विश्वाय विश्वय विश्वय विश्वय ग्नजामध्ये भग्धरजीष्ठते नेसङ्क्या भारे नेबन

रीयभवषमें सहस्राविण केंद्रण नाम खर्बे भव यग्रम्भे नेउभउर् वेबेमेश्व च्या प्रेमेश्व व्या उवर्गाण्डिय गायाम उद्बायम वृत्रेया जीभेजेया जैव उत्बद्धभे रे बम्रेब्स्ड । घटुमे पंउ स्वम्र बर्भ अनंग्रिर्जन्ते मृप्य जैनगिर्ज विभे उत्तर रेव एक एक उ उम्मरकामेय उर्गने मेरी गापायां वाप्याव उद्य मर्छपरे मर्षपर्वेडी वावस्तरियो में मूपवीवा उरसम्बव्डेडेमीडस्पर्इंडडउपन्तरेरीव मडउरें भउद्गेवे ने घर्य निर्माण विष्ण देश मनुष्यान्यस्त्रीग्यान्यस्त्रविष्यस्त्राम्यान्य वींभगान्त्रक्षेट्ययान्याने वागान्य ।।। विश्वानिक भगाग्रामिस्येरयेरयिष्ठेरे उपने वर्गीयभग्ध रुसाजभावेषारेरुसभाविष्ठेभाजेष्ठारुनाव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ण्याबाद्यनेसवसाद्धकारेश्यास्थान्यस्थितभगव १२ उभपबभग्वबर्धे उग्रधीग्रमम् धर्मग्रम् नविउरेउ ११३०११ ने नघर घर्रग्वे सम्प्रिय उठा हम्बर्गनवाप्ता ने स्त्री ग्रायियमने मंद्रींगाव षागयवागियग्नीगरेशगर्डेक्ज्मीजेजीक्रक्क तभटा युवया का गियत विध्येन मममञ्जूषे याभवाका । अरागिरिजाभवाका भवाष्य भी सबके यं उनि उने अवर्ष स्मार्थ में उने स्वर्ष स्वार बेब्र्भिं धनेने अव्यक्तिनान्य "उत्रामित्रे प्रेमें वेष्ट वमयरमंडीफिबमभारें जो डिगासहबमयरमें वेस्स्रह्म हज्य वर्ग में इर्ग भवाष्ट्र यन वर्ग व नबीर्षिउष्रग्रकाणभिष्ठिया कार्य रक्षीनमञ् घं उवमय स्थान्य गम्बनी भविषा थि उपिक छन

मयरसङ्ग्रभग्यवीसङ्ग्रीय प्राप्तिनवन घरक्रीगाग्धवीक्रीन्यग्रेउ ३ गण्यहाभाष्ट्रिया श्वासहरामें।।। श्वास्ववधापने प्रवेड गार्थ यिष्ठउ उचे चे उ निर्मित्र में बेड हा ये ने ने बार्ड्रेनेराभपाने वेडाबेराभभाष्ट्रिपाठी। सेनिध्या र्रथुउबैराभरायनिविष्ठावैराभरायक्षेत्रज्ञे उर्विउज्जीभद्याचेउँजेग्यास्वमयसभिवा स्मायविभाष्ट्रियण्य्य विस्वज्णाः च्रिम्मिवे उभाइभाषिपाभी सेत्रवानेवेउष्ठाप्पेनिया खनाष राष्ट्रित्वेनभग्वष्मश्रम्भवष्मप्रभागवष् न्उगिर्वे अन्ति । निष्ये विकास महत्रमङ्थ्यामे। हिं ॥ देव यम उवेग्रम

मेनाजीनाउभरेषाग्भवेववेवीचेभेनाउउउउवेबेलेष "३२" नजारेबय मडबेना रदेवग्डा मीने भीगभी म्योभीग्रवयाद्विमाग्रवण्यात्रेमाद्वीयाः वेह्न देखरभारी वेरधाये हुने हुने धरम्बर धारे उसे अवनयने मुभवडी भरवे भरोभ दंव् माउपयाउँभेवनभारमध्याद्यार्गाम्यार्थाः स्व त्र अधित्य विभागिय वर्षे में गुरुण रहा वर्षे भागिउउँद्रियाडीवर्रेरेगाडिइगउरबीद्रियामीवा। उस्यान्यात्रेणसङ्ग्यायार गरिने अग्र उपरामिगु त्रखंडगर्षिषङा वृथ श्वाम २ तीप ३ मथ्म ४ मध्म भ प्रमाहध्यवश् मैनेग र विक्राग र पाउर्१० अपत् <u> ११ गुग्रु १२ द्रष्ठ २१ इम्रेग्१४ मघर १ ५ इप१६२</u> धर्भम्यरिक्क १६ द्रेम २०४ भउर २१ परम २२

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपरभवद्य मिनवार वर्ष गृही प्रायासिक का ग्रिना था उद रीर्निमग्रे उद्भिया मिथीनपा विष्येपारी भए थेप 33भई खेर ३५मावत ४ वाभत प<u>र्वे श्र</u>ास्ट्रिक नेगुरारेबेभपाग्भेगुर्मान्य हम्मिसस्यव रा भिषदी भाय र डेल इस्य ४ अवान यवाक द रिग)भाउभरभारिष्ट्रानाअग्रीभेनामा भ्रमितेउद्यप्पे उत्तरभभाष्य वार्जायेउभवे याभवसहराय्उसहरायः ।।।उउपन भूतव्यक्तार्व्यस्तार्वस्त्रात्र्वात्रम्यम् उत्तरकारकराण्डा ॥३३॥म्याम्स्यावधवे३० उपनमस्यमेडघडडेर्भनभगवान्ग्रम्ब नम्बद्धरामिर्पा विपारसम्बद्धरा सिर्द मसहरा र रिपायसम्बद्धार गरेश गरेशस्त्रा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वबद्वनविभीवभवस्वायके उग्रह्मनविभूक्त १४ वस्त्रजियारम्बर्यरेडण३४णत्रज्यम्बर्भाष्ठि ० उषद्वरिक्ष में माम्बाविष्ठ प्रवेष्ठ विष्ट्र वि वडी यन गरेने हियार राहा हुता। यर भारत थ्डामान्द्रजात्वस्वरेवस्रामान्यम् भुद्मा वहा वे मेघरने वर्ग भुद्मा वहा वहा मेरा क्र कारायेकी गारी अपने मिराये के बर्ज अपनि परे मण्डणअन्दीयसेमडिमीडिसेमजीअनेमडिख अाग्रीवे भुस्माग्यस्वरेण्टि अप्रीमनुगाउँ वि युग्ध्यदेनवग्देयजभग्द्येगणमृविभग्द श्रुग्ना हिंदी अवस्त्रित स्त्रित स्त्र स्ति स्त्रित स्त्रित स्ति स्त्रित स्त्रित स्त्रित स्त्र स्ति स्ति स्त्र स्ति स्त्रित स्त्रित स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति व्यवस्त्रेन किये अनी युरे न व्यवस्थित विश्व देव उपम्रह क्रायाचेबीगाचित्रगांच्याच्याचे उपन्यसम्यीप्रदेन

भेरगीयमीर्मनुग्रम् अस्त्रेस्ट्रिमोर्गेयाउँ**क** क्रमें इके प्यारिश गारी है गारी है या सम्म क्रीयवगण्डा वास्त्रा विकार विकार विकार किराहित कर्म र्यमग्रीग्माका १३५११गारिक श्रीमा सहस्र के स्वामी गायत्वरम्पवादेसास्त्रेभे हार्वेत्रमणी निष्ट देखण सक्रमिष्ठनार्थित्रीक्रिय्रतेये भवेत्रस्ते उत्मेर्ट्मियेभग्वडीय्यनग्रेभेष्ट्रीक्षिय्रवेभ म्बन्ग्यस्था । उद्यास्य स्थापित । श्चिन्नीरेक्षणमास्य वेस दमासमिक्षे वेस बमउराजि। भरमधरेनारे बनी सुंग्री संगी भी भगिरा।इ६गृध्डीध्डम्डाब्ड्यून्याम्डद्र गसहरामें भी दारी राज्य से भारत के से खुड़ी रें थवावेभग्ववस्त्रमर्थी भारे विपार तराहरू ।

हमार्थेस्ट्रिक्से : ग्राम्थाग्यम्यर्गेर्य १५ वर्गभवस्य मित्र यहां हु तहां हु तम्मे वेभ वस्त्र भवस् गक्षाम्यमाग्यस्याग्यस्य स्वर्थभागीभाग्यस्योभीभी वजी अवस्थाय विषयि के सम्बद्धा करा विषयि । भीनेभवद्यमभग्ध्यमेनमन्दिभग्वद्या हिइए।भीनेभ वस्मानवस्थाने परमाने परमाने स्थानिय स् जीपत्यमिनभग्वष्टाग्येरेरेपेभुक्ष्माग्वडीमाभ उष्णु के स्वास्त्र के स्त्र के स्वास्त्र के इन्डीक्ठेउन्भेनभक्षमभक्षठेउठेभुक्षमञ्चल भववनजीउउँभाषाधिणवीणदेशावनमभेरव ग्छुना के प्रदेश मी मथ्ट एक ग्रिम्स भक्त भक्त । यतनुग्राथानागाइन्।। रिज्ञानव्यापदेन जीमंब्रहे ना डेभरूथ के गभरम्य निवास

भीग्गीभगष्ठा में निकाद्व के क्षेत्र हिंदिया। प्रमानि जरीरेशणियग्निमिस्मिवान्यस्य निर्देश वरीष्याभगीभादछन्छी उरेष्ठामासभीग ॰ गाउईगारिज्यीग्वरुक्षवावर्षिद्री नीग्रसम्सर्ध्ययोभिड्देग्उणक्ष्यकार्य मिन्द्वराष्ट्रीनाहिसीर्वेदनिवववि मारेया १ मापदमाक र मारेया एउड करे १ भारेय भागवयनिष्ये वे चित्र है निप्र हैं। निष्ये वा का रायवार्वरम्यवराः ४००१ मण्डयमाराभेव 4नाष्ट्रियेटिएउटिनेमार्ग्यान्स्वेभवेथझ्रात मेर्गिभारत्सारीभारियदी सेमेर्गिश्चिम सेमेरी रम्थरीरवेम्थर्वेत्रस्वी अंडर्डेड्यर्ड्सण्ड्म भुसनगरियगरिरवेपमार्यायवेपनायेथे र १९७

याने मानेपा "ध्यः देश गादिना वने वे वे देउ छेड्र १५ मुंबर्वर खेरे अन्देशभघवने अष्टिन् मध्डे बग्डेंब वर्गिक्ट गार्थ गार्थ जिपनामार भी वेपना धिने देखे जेमापर्भाराष्ट्रहाराष्ट्रधारियाम्यम्य उवेथमित्रजिनेत्रजिक्रीविधारित्रमेनाम्भेथग्उमाप द्माराक्षरणार्वणार्वणार्वेशाय्यक्रिया म्ब्रिनेत्रजेष्टियेन्यनेनगरिनेनगपद्मागण्य । गरिशारियप्रियपिरिवीउसिरेथपामयव हेंडि । विज्ञानिक विज्ञानिक विज्ञानिक । गिष्ठ गण्यिणमञ्बद्धकारी व्यवस्था ग्देम्जीमीडरें छण्डा द्धारानी भगव उब रब वेपभा कडेरीकां घरणी उं अववे प्राधिने 'डेरोने बरव डेमीक्यां भीभववडडेमी ब्रिम्न भीरेक मेर्रेश

गाउँ भागवा उगरे वैपरारिस विधिनार ने संउधे भारेमायद्माराण्यतः द्वीरण्याचे व्यक्षायात्र थेभष्रिण्यामभेग्डवेनस्य सस्य या निष्ठित मैं मुग्निय उनेगा भिक्षेत्र भग हिन्द मुख्य करिया "४४"गिर्यानियनभारवेवेयनिस्थितवीर्य नारनेनाउठे। डिस्नेन्ट्रेडेस्नेन्डेडेने होती नया राज्य प्रतानिमार् महात्रे वहार हो। वीमें मेंगेंद्री अधार्मियो भेरेर्टे उपरेस्टान यम्उद्यमिय्यवेर्यस्वीमेंबद्उजामियादेग्न क्रीभेक्षेडणरेयाडेगैकी नियमाउकाड भीगभी उरम्या रेने एक कर बी में मुप्पा अवागीगाथायायः गाष्टिजागीगावेमर्थपडर नें जी गिरम महस्र क्षा के में निक्य स्थान में में

35

थ्यन्यस्डी माराती नाम्यो नामारी वर्गे निर्देश व्यानकरी। प्रमन्तरदेशी मान्यस्य उमेरे है ग्ना अंगरिना मारा अवस्थित विकास के स्थान विकास के स्थान के स्था के स्थान के भाषियायग्रमगर्गे असीमाण्ठया फान्स उप्रेभनी नरे बें र जी में बरें । उप्ह हा कामकावदामी छिवभमी मने उठा प्रभनन या मुम्बउमम् भी जाति वृद्ध अवाद्याम् हेमदारीधेभेष्ठाथाबर उमाउगरी जाने स्भिनुग्धनग्रममेठेउनबेउररेनजीनंव ट्रेंडजंभवध्यजने में हर्वग्रिये स्वर उठे। प्येनम्बर्मनमबुद्धमग्रीक्षित्रहरूगाभ्य भसक्र करें के विभार क्रिक का शासक तसक्रा २ गष्टिन वेडेन्ट साम हिमार समारेपा? परमापर्माया र राह्य तराह करमाने या इस्कार क्रमापद्मारा ४। हेन्छे भाउउउँ विष रामनियाग्रीमिधियारामापर्मामि २ हिपारात्रमात्रेथानुषा ३ हिपारात्रमा वर्नात्र मुयग्रे सहक्रमहद्ध्यमाने भनिती पास्तर के सहक्ष्मपट्नकारीति ६सद्वम्स्टिन भाग्येप मुपा) महन्त्रमहन्त्रमापद्मयामुपार होभ्र र्ह्यान्य रही वडिने भारति हुर वडिने भारति व वेरकारियोग्रियुद्धकाग्भववर्गननार्थ्य छह्न गरे १ एप्गर्ये ने स्नीग्रं नवर स्वक्री उग्रवेभवववेभववन्त्र मन्त्र भिन्ता विद्या नेष्टिउद्यनगरेपगरवगरगरीजेष्टभेभगववनभव वयकारियेव जे में धर्म नका मिर्पा ना खरी धर्म

क्रि भिग्विद्धिनेस्र रामराम्यर्वेभवषभप्रयुक् १८ प्रतिगारीयमें निष्यरीयनिया मिरपा भर्रिपाभुक्श या देश है अपने अपने सामित के सामित है। साम सम्बर्ध है। यस्ववेदनी मरातेभा मिनेग्रायववग्नाभाष्ठिपाभी क्षत्र के भगारे 7 गानिक कर कर विविध ने अपने निक्ष ने गारिववग्री भावगरेने भागिभगवारे में भागिभाववारे में भागिभा क्षाण नेइनेरमध्वामानीना श्रिपेग्र माउरुग्भ उद्योगिय भगवा पप्तक ५ वित्र १ भीत्र मारी पर मार ग्रह ने मेरिय १० रेमा १ वर्षी र इनवरी १३ देवेक हिन प्वामग्धवेष्ट्रीनवरेडें भाषानीनग्रह्मकारें भीउन्ने विकाशिक्षा । १९।।। रिकामी ध्रम्सास्कर करे मैमेग्रेउविमेग्रविम्रमण्ये मेग्राम्य मार्ग्य राजी।

अमेरीनारम्ब रवेष्णग्वीर राज्य विषये भगवा वर्षिय भनेष्टिमेश्वियंगा। पद्यार शास्त्रात्रमण्डा राष्ट्रित वाग्रवणिष्ठित उत्राष्ट्राग्यम् विष्ठित । वाग्रवाष्ट्र स्रमेष्ठिरपरागधाणार्ज्ञभरवेद्यन्ग्वरात्रभा वध्णधीनग्रिथेम्पण्रिकणेग्उयवेद्यां ब्रावव्या त्रेभग्रचेन्द्रगरेनन्। सिक्ष्या भग्रेयन्नी गरिकारि अवमण्यक्ष्यक्षद्धकार्वेजभक्रेक्ष्यवस्त्रणम्बर्गम् **प्ररम्नाराक्षेत्रायम्बन्धवम्मायम्बन्ध** वध्यरण पर्णापवाग उठिके गरे १ गनी उउण मेप उ उज्युजंपवभवनेगभवववमवेजमङ्ग्रिकन्न नर्जनग। परगारिजाभाग्यसम्बनाष्वरण्ठेबेभावष् मीब्रिम्बसगरित्र गिरावेबे माय्वर भागनित्र भाग व्याग्ववम्र अधिक विग्र मिन्न विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ ।।

39

नजात्रिवेयनेकाकाव्यम्बर्वेभव्यवेरियम्बर्मिष्ट ११ विकाप्तवागारिक्षण्यमार्गसीक्षावम्यमार्गरम् लुयाभागम्य वस्त्र भूम्य ख्रुवन कर्यम्य म्याप्य रिजानार रहे शिनपडेन भने अन्हामीन धरा हा नी नारि थियवनवाभघ्रम्भग्रिम्गीगभवष्रकार्मिः लज्यस्नितने क्षेत्रेत्रात्र व्ययस्थान विष्ठ बेन्य उठे प्रवृति प्रतिमान्य साथ । अपन गुड्यमा अर्थेण ने भे मगुडिय का १९ वर्षिक से मार्थिक से गुडिबेयाथउउर्मिनम्बेडनिष्ठेमवाधि मग्रञ्गारीबन्दीगभद्य**स्वया निश्लाष्ट्रेयमञ्**ख्य बाखवरण्यासग्यमिगम्भवग्रमेथान्यार्थणा गपन्डभगगुर्स्य मेन्स्य भनिमा का

वेपमीगरेष्टिर राजवन्ये उद्येश में भीग्रेग ने में रिनेषु एव उठे। नेष्ठ एवव थुनी गुरु देन वन्यास्वयवरेथवेभांस्वयं जेगास्त्रवान रेभववरेण्य वर्षितसङ्कराष्ट्रणाद्रेड वेपगडेगमाध्यवमाभाष्यस्य देशवरीक्षित नग्रनरेभण थरणर्ड्ड इसमेम्यने ने ना बार्टिंग वाग्यवाम्थः एउरभयन्यीभवा रेवववीनिम् भयाभा ख्रियेवकी वर्षि पुउउ वर्षे का भा। गम् १ गारि जावसे वारिरिस्थित वर्गनिय र्रमुग्थारिकजीगर्भकामप्रेयम्बर्ककान्वण्ये भैमार्यियामण्डमेरिडियंस्व वेउनेग्भवग र्देशाभाग्य उग्री जन्म श्री बनी श्रिव सभा दिवा भा

दुम्नेयतरेथउभक्षीउम्हपबुकीयामाणयणण्य दिः जद्मनेवीमीमप्रायम्बर्भमेवषिरिभयमकारि

नजी।मभ्षष्ठक्रकानजन्वदिबेष्ट्रेवउथ्दाभिष्ठभग धर्मी जे रिल्व अनुवेत का सम्बन्धिय विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व कर्मिनभ्दाग्यका रिवरा हिस्स्य अवनिग्ना सं वग्रेन्स्भरम्ख्यम्ख्यम्बद्ध्यम्बन्धर्वरम् रूवयामाध्यामिक्याच्या ।।। विकास्य विकास्य विकास्य ।। व्यन्तर्गानेकग्नियेयग्रादेशक्रिक्यम्बर्ककरीद्रमेख् बद्बबब्रम्बम्बिभव्यम्जिष्ट्यच्चेपज्जीम्भ वधकारानेगामेर्ग्य हिल्हिक मारिशारिष्ठिमघरवे भवधडेकैवमेंप्रगाप्रमाभवधडाकेन्य मिन्र देशीयुमेगा ग६० गायवा मुवायुवा मेगरे उगा। द्रगिर्म नीयर पर्वेस धरिउ भउभव्या है। उन

उण्हाम्ध्रत्वेगुर्भरण्डामंग्रिणभूरण्या ग्रुसबेरेष्टिभावव गृत्वेन्येभू स्वेपेविष्ठा प्राण्या के जी। उज्ञानग्रमाम्बद्धवर्षेष्ठिउज्ञान्।वस्यान्यवि त्रेभतुरिउजेगभष्ये नासक्वकान्य निउक्तारान वरेनघरवेभगववयिभागे के प्रतिमाधावकारी केग्रिशानीमें की नमर्रद्भे ठेउन इंडर्ज या छा। उसे किन्नीही ग्रेमी ग्याही गड़िल्सा १५२ गार्थिक हो। उनमुद्रे ने डेज्वेसे न विषयित्र नगरी ये न वसगरि मजी।।बाक्सम्ख्यान्युं अपन्यान्यः। व्यवनेमवाका अवगार है "गारी इक्र अवडे नने बुग्नउब्रधेयुक्ज । अन्यस्नमक्षेत्रच्या । व्चरवमाउण ५३ण ५वण उनमे उपविश्वास्त्र भाग प्रवयनगरिये भगरति गिभवष्यविष्ठ करा

43

देशारिनी किंगाम्यिम् उस्यार्थने वेसे भेग्या प्रिमरे २९ उउम्बद्भाजमारिश्वउमभ्षा ज्या रहेणवारे बेनेन्डभक्तीबाग्रेग्डायण्डाम्यस्टक्टिक्रवग्यो पउडेवीबर्शकाग्रद्षणाष्ट्रेगारेग्रेगिष्ठीवाडेपउनेभ ग्वसन्भानगिर्भेराभवराणिगारतुगारिरामसरे । भवववीत्रिपी व्योभवष्मिप्ववयन्य अर्भिय धीनमाउउधनायधर्मग्रियमे गार्थः गार्थे ब्रम्मिग्र व्यव्यक्षिमार्ग्य भारति । भारति । भारति । पवध्य स्थायवववेउँ ध्रेयमें नरा उउं। भरु। गरिकोर् नायरीयनिकार्वानेण विद्यामान्य विष्यान्य राज्ये भवषवेग्रसमवग्रियेनमायरीगरिउभविषाप क्राभवसक्रम्यसक्रकराद्धशानग्सक्रम्ष उपग्रेम्ब्यमंगान्यसङ्गान्यम्भनेष्ठिउद्यन्म ।

रिगाग६६॥जतगाप्येनमहर्गित्र हामान्यमित्रे वेरवर्गाण्डिरणम्यनम् विद्यानम् विद्यान्य मउठे भारे भू ने ने त्रहारी हा का अपने का विकास तिथे प्रकृ गम् वसीय जे हिं भुस्ता हव दे वर्षे गिरवमयेवनमञ्चरीग्यमग्रेहःगुड्यक्षेत्र अवसग्रही अग्राउउरब्द्रयाग्य बन्ध्य विषे निर्वारेथवरेजिए ।। ६१॥ विज्ञास्त्रविष्ण वर्वेत्रतरीमीहद्दर्ग्य हरूतम्बावस्त्रवावयद्वयेषु ववीरमार्थी रेव थरुद्धी रूजी मेंग हे के उपे भरी भपवाष्ट्रीयनिग्रिष्ठिष्ठायसीयनिमाभष भग्वीयनिमग्यक्षकरार्थिं।।नग्भग्वेयनिग वीवेष्टियग्रङाभण्डिएउएठिभाग्धीद्यन्तमम्ब उउनभरे ब्राष्ट्रिशद्र ।।। सञ्भाववारे घर्मवायुग

टेनेभाग्वीद्यनिस्रामिष्ट्रीगरमगैउवग्यारेज २२ वव ३१ वे प व २ वस्य इ घर ४ ४ भग्निय परे म ५वासा नेच च्याबर धमउपरी लभष्ठघनउपर कामज्यवरद्रश्मीबी चडकष्टी में उपी भेंड भेग दिव मेम खबडगायदागास्त्र मेर्स्य गर्दिन को भेडिउ वानिष्ठान उउग्रियेस्स्वरमानगरीपीगढ्सेप सामानवयउष्यस्यास्य वृत्रिमभामक्ष्यि वीच अने उनी वाम अने न मही स्थान मार्थित गभायपर्वभिष्वभावछ्येभसर्वे वस्ते विश्वेष्ठशी जी ॥ ५६ गाष्ट्रिजयान्य बार्यस्य निर्देष्ट्रव उजीमेंबनीगा भाउने भेंग्कु भगउत्रवेष्ठा मिप मयवनकावीरी गमध्यवयस्करारिशा विभेनावेष्टरस्टउउप्डार्बेपाष्टि॥

Np

उर्विस्मिव्यक्ष्यवस्मान्यक्ष्यक्ष्मा याब्रेसम्बयम्बव्यक्रेणस्याभ्यव उत्पेत ग्रेष्ट्रिण हिर्ण ख्रवडा भेने बरे वेदें भे प्रमान विषे याभेनावेबाउथोउग्मेषुरविषेग्रेडेडेर जग्ने रिशुभारिकोनिसे उसे दिनी निस्ति हैन मग्रिख्येभीम्भन्द्र यस्त्रां मुर्वे उपर रिगा?१गाष्टिणमधीषवयः घेनेवाउगेने हर्नवा यउनेउबैरायबीमको में ड्रीमेंबबामा दिवा कर्गा थी। यस्त्रेथया। प्रमीकान्या व्याप्त्रेभाक र्मरस्मान्त्रस्भाष्ट्रीव्स्वय्वाम्याम्। भामवेर्चेषयस्य भागित्रभीस्वण देवणेष्ट् नयमी। याथनेना धनीन रहेब गाम वर्ग उन्ह परभाष्टीवेदानी केरस्यूबेस्कृष्टिबंडिके भा

44

मर्रेट्सर्रियक्ष्यामिण)१२॥मधीरैराधवार्वेष्ठर३ रबी चरुरामेर पब्बेभि उपमुख की पिष्ठिकी यासनसङ्क्रान्यप्रन राग्यं डियोगित्व मेम्बादना)'जबारिक"।उनमीनमनेउउथाठेषात्र बाईर डीगामुग्डर्थयमेर्रित्याद्यम् अर्थियम भीगगा ३३ गारिजक्षस्व बेय्ये सत्र नेत्र प्रबंधि विधारेमणभाष्य्रणग्ववन्यभ्रभगम्बाम्बाद्रवेभण्ड्यी ! गाग्राथायम्भ्यायम्बर्धेर्ययां एष्ट्रा इस्मिनेयउविभे उत्रेष्ट्रवय्यानियं उभेष्यानीमुपेबाउधे उष्टे उद्वेदा । भीरमित प्रसुक्ताभीववीनभी भउछे इनिवासिय में में भी मीक्षयाथवागोरेक्णाममुग्रिनिकविथुनमवे ति उत्रेभनायप्यग्राजिष्टि प्रियम । भेमें बर्ग डियम

Ng

वम्प्रीयम्भारिके देशकारिक क्षेत्र मार्गिक स्थानिक ध्रम्बर्ग्य स्वर्गिमारी मार्मिवर्ग्य स्वरंग्येक्ष पंडमभाषीत्रपष्टिभागवत्रहावानेत्रभारा। 1178111रिजारायकारीबर्जमधीरावकारीरा थवप्रेमिवेडबेनग्रेष्ट्रियरे नडमेगा रेपडेब्न गुर्भारिशगर्वेतउग्रेटियोगमिवेद्यान्यवे नगार्वीयक्षित्रविष्मव्याप्रदेशकागा ५१ माग्डीरेनडेपुरूपानेभीग्येस्त्रनेपार्थेस भारके जा बार है अप विश्व के स्वाप्त के अप दुष्टेद्घ भगगारे वेदवेद येवा ना स्थिव ये इ उन्वययेन प्रवचना। १५। रिजमान मीप्डेमधी अस्म अने अमे अने अने अस्म व नेग्रेंगमेभरयसाग्वागिउग्भययाग्रेंग्रेंग

उछेडीभारा भगस्ति। जिस्सा स्वामित्र भारती है व ातनकार्थेड्योधनविष्ट्रा गप्सवाधि णगोगरेशग्रह्मखावनमा प्रिस्थामिस्ट ज्येनगभगज्ञनसम्बबनभण्मी जिमेसगरी यानागारामी नानवम् अख्य है वर्गायानी भमवाग्ववयद्यमिनाग्वाययामारिशाभीनवगीउने भड़ी अस्वग्रुवेतेगाचे उत्तरेत वे कि वर्षभवह स यमुखन्या। १८॥ मधिवडमप्याप्रिपेडेबे यज्ञीभवस्थानेवजीवैजाग्यः "भाभेयम्ब ग्रं द्वाराणीयाम्येव विषये विष प्रायम्भ क्रामा मान्य माने वा माने वा भी करें विकास नगरिनेयमङद्भषागरिशग्रघण्डगरीवेरी न्जीबेरीडीध्यमार्थाविवयन्यभास्य वेडा Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वद्भारीय उपेडिक्षिते। वाप्ते देवातवाति उ मञ्जेउ वृथे ब्रिक्षने गृह्य मन्त्र विकास थेडीमिना ग्रिडमारिग्येडियनेस्या ग्याव्या क्रिन्पक्षेत्रहे व्याप्त क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्र का प्रमिग्ना विवेत्रेत्रे प्रमिन्य विकार १९०० में र्याभाषिक उष्या राष्ट्रिक उष्टाम्सा २ नेरपा। भग्यां वर्तहरी उद्याना १ भडे ने उद्येना ब्रुड्याक्रार निज्यानिक्रिक्ति हो निज्यानिक ध्वयेश्व अध्यक्षेत्र स्वामिश्व विष्यु प्रस्ति । यमारिशामिरीय्रीयमिर्वियम्या अस्ति । व्यक्त विवर्डिववड्डेनयवय्यक्ता १९११

विश्वरणध्याप्रमामसम्बद्धरीभग्रहिए नेवेज ज्ञानी मार्ग के जिल्ला के जिल् विज्वाज्येरिक्ज्यम्ग्राम्बर्ध्यारम्भ कर देव देव माना महार हा हो भी वर्ष माना है। इएउप्यानिम औडिइन विउष्ण अवग र्देश्यमानुष्ठियामान्य मान्य विष्या विषय । वाभविभवाग्वरकोट वयक्रेयमाने वागार गा श्रायेन मार्थन में मार्थन करें में स्थाप हुई ने स्थे उठेउने जोर्स्सिम्सिने भण्युका म्हानि अध्य न्यान्य विषयित्र विषय द्याना असिकि कि उसल्यक कराने भविषाउँ

प्रश्नेत्रे वर्षे में प्रश्निक उद्यक्त मिर्द्या भागिक है व्रभागिष्ठम्बरभर भर्मस्त्रह्वर्ग्य हिन्द्र नवनग्राष्ट्रायमण्युम् उद्याद्या ह्यानामार्थ रजमाउनभनिसहक्वरिया।द्वागन्यानमा ब्रास्थित के प्रतिस्था के प्रतिस्था के विश्व के रिनेपण्डेवमारेवमारेवमाव्याकुर्देवमाराम् मिक्टियमा)।उत्। विवासिमार्थियार्थियार्थियार्थिया गर्ते अध्याप्त वर्गित्र मान्य वर्गित्र वर्गित्र वर्गित्र वर्गित्र वर्गित्र वर्गित्र वर्गित्र वर्गित्र वर्गित्र मठकारिपदिम्डवरिवद्यविम्द्रिभाद्यक्रि उपयमग्रियोग्यार रियार्यम् विमारदेमाप्ना " मर्ग मप्रताभवनिकड्णप्रस्थक्करातिष्ठात्र भनप्रिक्षाच भडने उन्न उन्न उन्न जन्म गुर्धिय नियस्य विष्य विष्य विषय विषय ।। रहे।। जि

गुपागम् यसम्बडमें छर्गभवयम्बडमें छर् २५ राग्ड्मिय्डमें उर राम्य उम्बर में उर्में हर्के गरे न्यान्यस्थी मवाउवरप्रकार्यमेषुक्रभी उगम ब्रस्थरका अंस्वयं सम्बरम्ब छे मृतस्या । १९ पण्डाणम्यन्यविनविष्यिकेवेमेनर्व उन्यास्य उप्रमाडी ने में मायर मबरे में इस्मेर्भग्राञ्चमाउँ हुथमुक्री भक्षे बारहथपु हैर नयकिमेम्सिवयवित्रविष्य प्रमिष्ठ माउवय व्याप्ति अवागित्र वामे रेश्यामेस ग्राह्मिना यर्गित्र विकास का किर्मित्र मिर्मित्र विकास किर्मित्र किर् य्ववेतेकागरहागाष्ट्रियास्यास्य स्वयं अवर्षे अन्यज्ञ वाम्येने जनगरिममग्रिके रेययमन्ययपिकार्यान्य । अस्य प्रमान्य ।

वर्णे अपेपवनश्रयी प्रकारी बन्धिया विषय व तउठाष्ट्रतस्थ्ववववउक्वाप्यव्या उबरेड राष्ट्र सम्प्रियब इंडिंग स्पर्धे मार्रियोगिस्माबुवर्ष्ट्रिकेस्स्रवेर्ग्या उपेभन्सं बेरसे बन्धिय विष्यु के प्रस्ते बन्भे व मानम्पानमभामध्रमेदन् भूद्ध्येग्राह्मा रामविधि उनियं प्रविधिय कि । स्विधिय विधिय । स्विधिय वनसभामा वक्षातपर संविवउमस्य भुउपप्रस्वाभनाभान उमभन्स अव २ वस्य १८ वस्य ग्राम्भानेपन्थस्य प्राप्तिकार

म्यानी क्षेत्री विकारियां मित्रम् री विमाधी विश्व भी बार्स्स हिया प्राप्ति भी पहारे भारेष्टियमामार्केकाग्रह्यपुरिस्र प्रेरेपेगरिपिमञ्चर प्रबडमी उराभवभगवम्ब अमें इप्रमास्य रे भाव बाउँ एक तेउसकी रेक्स्फ्रेमघर ।भावषम् रित्रहर्याप्य वाज्य विकास्य विकास वि विश्वाप्रकार्य नेप्रमानवीरियह नाजि नेभग्यमक्षेत्रिस् । निष्या मुउपमें हरी विद प्रदेश जी प्रवादि महापर् हें बाउँ अधिनवेना क्ता ग्लेड रामुङ निर्मेखरीय माउँ यम छै। यम उडे भक्षेवाव रभक्षेवावडे अम ३३ भक्षेवावडे भक्षेवा वश्वरियेखेब अमि प्रधान इंडेयम इश्वाम इंडे भार्ष वार यभारीकार डेयानड्ड भारीकार डेमारीकार ४व

दिनें घपपुरे बडि घम इडे घम इडे महोब व २ भक्त बाउडे घारडे व महत्र बाउ भक्त बाउड भी में स्थान वेरमार्गिणभवानुकामें इस्ट्रिक्स स्ट्रिक्स स्ट् प्रियम्भागवप्र उत्प्रिय्वाद्र प्रियम् उउठेमुउग्में बहु बारिं।। दरा। म्यान्य वा अपनिष ब्रह्मपरिष्युयम्बर्गियके। मुख्यमिड्येश्वम उपुरुषाग्रहिणानेउनस्यमार्व मुग्ध्यपिर्ग ह्रभाजभाजात्र व्याप्त स्थानिक र् गर्मेडमस्यमुग्धमारीयकी मुस्यम्बर्भ मुउग्में इंद्रम्युम्पान्सम् उग्युम्पान्सम् । उम्मिन में मुखेबी मिय्यु जे म्यु जे मित्र जे म्यु जे म धमुउभर्धवागरिक्षणा स्थापा विषेष्ठ स्थ

SA

र्ीमस्यक्षमानिक्षास्य रिवस्टेरीन्मज्यादेवभागत्र रू त्रमाकागर्दिण विज्जीवरण्य में भारतभाकारि चनवेणवर निनेभवम्बन्यनिने प्रभामवभाष्ट्री तीय्यवायनवादेमभागकेव्यनप्रतीमुउण्मी वस् मक्षवार्धेयमुण्येभवारेशणम्बर्धिस नेमरमाड्ड एक गरिका दी मार्गित के भाषतन्यीभाष्ट्रिगार्द्र रागाद्रेज्युभभभृषुविवा व्यवक्षत्र मुड्टिशी भोवडी भर्मवाम् । वनरलपुरुवग्रेगिरियवेब प्रवेतिग्रामन द्रभित्रभवस्य उद्देश्ये मुप्रमेषष्ठ्रेणम् उग्मिडरीभक्षेत्रावडेभक्षेत्रावप्रमेथवगरेः क्षीनारिने उनकी नक्षयन्ति में हामानी एए

१रिजरेट है पामक उस देख उस के में एक जिन्हें हैं। भडमावडी भरमवागाउगमान्द्रमाव ववववन्त्रप वर्षामुग्डम्यायवडीमक्ष्यवडार्या वदिर अवबरिय्देवजिष्य अस्त है ।) वर्षे मियउउद्यु अवस्थित के विद्यु अधिक के नि नमविष्नसभ्यवीग्डवम्भगम्यु उपविष्रभुद् वाम्यवीगार्डिंगारिकार्यिण्याम् उद्देशमे हिनका उपरेक्षजी व्यद्भिर विजित्त विभाग अपन उप्रेम दागवारी उगराज्य सराजा वे भरापि ध्वत्रध्यभाग्ध्रिततव्यात्रक्षात्रव्यात्रवे । मर्वरकार्वम् सम्मान्याम् स्थान्य स्थान

59

रत्रे उग्र मिनायके। म्यान्य हरी दिग्या या अधिकाम २२ म्बर्भनाम्यक्ष्यम् अभ्यये नियं नियं नियं विविवि भाषेबवयंत्रे स्वीभामयानहे वहे वर्षु इत्रुक्षारे मेजभारवेगार्थपाणि उपामब्द्यान्तर उत्तम् त्र ही नक्षें उड़ दें जिस्सा अधिक माउड़ में ने उत्तर यसी बणबाजियोया छा छा छा स्थित उपि प्रमुडेमर्स्क्रियागप्रियद्गावरूपरेवेरेशः वानस्यत्वी वडमुने निष्टितम्बेमुनेवा खडतंब्वव ॰ पडिन्यें अर्थे प्रम्येन गर्द १ गर्मिन प्रमानिन वैरायसमान्यम्भेग्रिसस्वीभाष्ट्रमार्व रहेबस्य पड्या हा है वेड है उपे स्वार्थ वालय जिम्मिन रिबेबिय डेमें अमब मुन्ड जे उरिया ब दिन्दैबंडिमीपभक्षेवाग्डेबाइपृरिभवाग्छि ॰

मित्रशाम्य विश्वास्य क्रामुल्डसभग्रिभम्ग्रेडस् ब्रुव्युण्डलेक् र्श गरेजम् द्रमत्यपत्रवण्यवाद्वाद्या शर्पायवर्गका करणाविद्यान् ग्रायत्याका उद्येब नुप्यम् के बारा अपना विषय के वि उठमान्यप्रमाग्रीमाम्बंडचण्डेप्चप्रामान्य देवाउपिपामक्रवाग्डेमक्रियाग्यश्र दुसद्यी अवषट्या मुभ्यमुर्ग्या मेना भागामा मात्रवाडिपमा प्रमाणियाडिपमा ।। १५०) गरिजायमं उद्यम् प्रमावद्यम् विद्यम् रिवक्षा उद्यान महत्व वडा महाद्वड बरपुरे रेडबर्न्द वर्ग मिया भवबर्गित व्यप्रदेव । महकार है। नण्यव गर्गरेव

अधीववस्रगडाप्रच्याडेडाबीस्प्रप्रिय राम् ज्यादेवेवका भ उप्तराधव एरिवानमिस्रिटिउरवी स्थ उड़ीवरेरी।। यह गाम भी मध्यारे िवडेड एडं मेंडिए भेडी उंडेण हैं इणामधीय बगरेबी परेवडी मण्डेजा भक्तावरिये बार्फेश्रमध्यद्यस्थित्वणारिद्राम् ग्डिमेबेट्काबाद्बेबबगुण्डियाभेनियी विगरिवी प्रवेव डी उंट उंटर विदि में विवाद पुढ्व अवश्व यु उधार द्वा प्रदेश यु स्वव्यव्यवस्थानिक स्वायव्यव्यवस्था ननीयुर्गन्भाष्टीयेत्रवापवतस्य प्रयोग।१००।॥

ण्टिण्य दिक्र प्रममधीव विवडका अवस्प उक्षेत्र नस्त्रेन्स्ने मने खल्द्येत ख्रम्य उपत्र व में वर्गिनिक प्रियम्बिष्ट्रप्रमान्य स्थापन्य विश्व परविषयुरेभ्यत्वप्रात्रियावा दिश्यावर वण्या अंदिक विभागा असने वा माना नियम मम्मिलेलेस्यस्गितिकाग्रीकाग्रीकास् क्रियपमधीब डिबडक प्रबद्ध डिडके ने भाग विडिद बमुउग्मेडभन्गभय्पयञ्चलक्षेत्री उक्षव वेनेम्प्राथ्य राज्येन मी उक्तव ये विष्वव ए यागुरी।वरित्रयम्थवउग्बीन्दवजीभावि० ग्डेयमङ्ग्रिथवा। सम्बज्मे। बार्चिङ्गाबिषवा अपन् उर्वरबेचबर्ड रेरेबयबर्ब किमरार थामनागेणेग्वयभूमभ्यायग्रेगस्ट्यरेस

विवेद्धेवरी नरेनम्बिक्षिक्षिक्षिक्षेत्रवारीर्गार्घरम् ३१ का उनद्र विनारिवधारे ये मैं वह बेके ब्रेमिक कि महिला है क्रक्षकारिकपदितेग्राम्यावीये। पिर गाम्याव विश्विडकरावप्रिमिरेणभक्षेक्षिठेम्य्ववम्थ र पा कार हमें अप्राप्ति अप वरीवरभक्षवराजेभक्षेवराष्ट्रियामाप्रिजरीरः याजियिनीभाग्यमेनबर्डिबन्धरियमपामाज्य राद्यकाष्ट्रित्रवीत्रभात्यभेषाभाष्ट्रभाष्ट्रिय द्येष्ठयम्बङ्गार् ग्रंबीव्योपिषधेरुद्गित्र भागपार् विवेग्वेभाग्येभाग्यवी गर्थे स्ट अमिर्द्रमेयाग्वीयेयजंख्याक्षिगुउमिष्वम् राभनी डेंभेग्डाग्डोभेमाभगवतरगी पण्पमेकार्छ

या गरिगरि अस्व सम्बर्ग में इस्बेन् मा महीना भा वनव्यवनवर्षने वस्यक्ष्यार है।। नवस्थान रेष्ट्रित वेस्पृत्रिल जबदिया जिए महार विष्ठु स् उद्येष्ट्रमुडाजाम् १ गायहार १ गायहे येन वीनमन्त्रभपवेवण्डस्रवाण्याम्यस्वममन रमगमभ्रम्यम् मुग्यम् विवारिकारिका यरेर्धमर्याम्य डिभपवेष्ट्रा विवास्य उने भेग्स थवा बेंबा महारे के १ रेड प्रिकेर गुग्वनिभयभवाष्ट्रभेरीत्रव्यक्षेग्ववाद्याष्ट्र उत्येभण्डहेर्डेडेजार्डिसर्वमाग्य्वारीभाष् ० गरम्यम्यवस्य ३ यमरग्री भागिरगप्य स्मर्पाय देववर्गमा) भागनेग्र द लावप्रा रसङ्का नापग्रहारी प्रक्रित्वमेष्यगर्भ

65

वाण्डिजनीगरिक्षणयंक्रतयीवभीननभपवपर्वभजा३२ १०६७१२००भेवत्यस्यायाम्डेभारेजयण्डभेग्य वमविष्ठाल्भेग्रिकेमभस्याग्भवग्रिक्षण्य क्ष्मवर्षियमानिष्यम्ययस्थितार्गिणारियमि गुग्वनिवर्भग्रम् अधिमस्यम् मक्षिरम् न्यम्बर्धवराभवयास्त्रभेधवसद्धमानेपुन भगवारीभेभायवकी नवने प्राप्ति । वक्काउभिग्वग्उउम्स्थाजिमाग्रहा। भगस्यी

द्वार उर्देश नक्ष र विश्वा निर्देश के हजाउज्यिखपानयिग्नानी स्वाभनस्य स्व वेउउद्यार्डणार्डणार्डणार्डण्ड्राप्डिप्सर्डथ् क्रप्रियह उर्देश वडा एड अगरे घत्र को नेया मर्गिप्रिडेरिबमउँ धीरिक भाषा देवा वष्रीभेभिष्ठपेभाउँद्यास्मिन्या । कर्णनि रामग्रीभेष्ठमानुष्ठिष्टीत्रप्रमेवव जीवजेगा डिउगारी सम्बेब करे वे भाउं गैर रुपप्रमार्थिय द्वान्य मान्य मा याद्धार रिश्मी करी व मजमुबा देव संस्था पर बह्धमेग वर्गनामनगरियमहबद्वप् मग् १०५१ रक्षानस्म्वद्वनीवनीवस्थि भारिये उबक्तिम् रेमहर्ये स्थानस्य विशेष्टित्य

यारीम्भिमवद्यक्षेनबर्गियाभेप्रियमे इः किस्ते चे डेडे डेड रामहा। देश मग्दिय स्मिभ थर्वियययग्रेमथक्ष्रग्रमञ्चग्रस्थरेषि यक्षनिमीयनवक ११० मध्यायस्मीराध बबन)भक्रमुक्डामेरुखभाक्रक्रप्यामीयस्थेडे उठवंधार्थ्यका भूबउपमूर्मितवमे उउउ पण्डेषवेदकाववनेनी अवसेने भाग्यान यहेब खबरिब नेज । भन मीरे गुपक्ष कर हैं १)) युक्रभेनज्जेष्टिन्रे जा निर्मिरेग्य विगयज्येष १९१ मरें ग्रें ये अध्यान में स्वापरेम है पे सम्भवा ॰ मीरेगपरेमोभ्रवध्येमीरे उग्उउं अभेष्ठिरे ष्टितिबम्उजा करू मार्ग्ये प्रेप्तिबमी उम अमेमसभउवग्रहरोयग्डेष्टे उभव्यक्ष्म छ्यो भपभ

68

व्यवण्डले । हिर्णरियपुरम्यने भेष्ठिरवित्री विवादिका अवस्था ध्वयाक्षस्य उठवमा गुम्से वाभाग ११२ गारे वा मैबे उम्बक्ष्णभेने रेउंचे भेवपाभने के विश्व छु एवं क्रममुनेविशानिबैनयामा निश्चन ब्रुपेण्टिये निरग्पद्यनगण्यव्यक्तर्यप्रकाद्यारेण नजभवम्भव्याग्रिक्षाग्रिक्षाग्रिक्षा भ्याप्रप्रतेनात्राक्रेणभागे अर्थ १ रहे। महा श्रिकागुरुखरेउभवद्ये उपक्रविकारेद्वका गिर्गापरयभग्वविष्ट्रस्विणेश्वर्गात्रिश्व **मबर्डिरियवम्बर्डियम्बर्गियम्बर्यम्** वाग्रिशक्षयण्येष्ठिभ्रब्स्यस्यद्वित्रम्यव

जीभेगार्ये उन्धंयमिवन समस्मित्र १ ण११४मारिकमाथेद्यानचेथीइकेष्टिनेभे वर्षेष्ठमावे वैत्रे वृक्त एवस्य वित्र भेर विद्यान प्रवेश विद्यान नेभव्यवे उक्रमणीका अध्वाववी भारतका मणाम् इन्टिन इनिग्रेयने निवाद्यी भगा भाग भाग भिज्यों हैं। गब्र नग्बर्ध्यक्षयपुक्र चन्त्र विमेन नी नवसना ही पेर्निस्टिश म्हर्की का ११५॥ प्रिमिष नेवहार्व वहाँ उनी विभाभवाभिक गृह्य वाह्य करा प्र नेमा वापरिति मुद्रुष्ट अर्थ उर्थ वेशी छिराने १ क्रभग्धडेम्द्र उड्डेमिंड उभवाक्रमण्डेपेथउडेभप् भव छन्येन वी मुक्ति भव छा मुद्रे वे घे भेर म्यरी "यद्यान्निक्रिक्षण्या है । इस्ति विकानिक विकान

उपबुर भरें छ। जी स्था छ ने स्था उद्या स्था क्रीडा ११६ ग्रिंग सहात्या स्वाध्या स्वाध्या ग्राडनेयतज्ञेष्ट्गाउद्याज्याकानभवाज या छी नाम अवस्का अवस्था मार्थ के विषय के भागन्तुगार्डिं अपनिवास्त्रामाना नेवह स्री ग्रामिन्द्रीम्द्रम्भिन्द्रम्भाग्डे मियुभभीवर ना उठवं उदार्श बारमबाद्याद्य ग्वाधिग्रहाराष्ट्र तिगतिभागभ **५वभ**3 रगा

गालवनमंत्रेग्रे रेउगा।

जर्ड्डें मर्विरे मह्यार्यया स्वाधिका भारतिय क्रमारिशग्रामभम्बरुष्टिवारने घरमे मञ्जन इन्द्रा विन्यान उपस्कारका उपस्कार विन्द्र । विन्यान वा विन्द्र । उनवे नम्बाराना छिवार नव नव नरिवार जेना जेनी मा उद्वयस्करदेन विक्रम्बर्सर राजमारिए छार् अमिनीनिक इंग्रिएडएभेग्यभेग्यवेदियाभाष्यव रक्षेत्र वर्ण कार्या प्रत्येत्र मेर्ट्य करे मिर्ट्य करे मेर्ट्य कर ध्रस्काउउमङ्गर्गाभम्। डास्य स्याक्यान्यार्भ उनिवमभगव्य अयाभा व्यवस्था अवराष्ट्रिय अम्डियस्म्यव्यव्यागानित्रगानेनुविद्यार मत्वडें डेमापावमधिद्यावमापावम् ने मारिनेभ

उद्यापडीन्डी वानेडेमें द्वानन्ड ने इस् म्वियान थित घरमाध्र मणियान भागित भाग ब्रस्कबवडेडेपुगरिडेने भूष्भगरिवडे के भी भउद्यापडीवेडीभाउनमभत्बक्ष भागत्री भेग्यरअय्भागरेष्ठास्वयस्थ्यवनाव् मछ्ठेथाउधस्मध्यमिमग्रहिकान्यस्य वण्डे उन् अगरिव नियंत्र में नियंत्र में नियंत्र मंडे भग ने छार बेर स्था है भे बहु था है विवस्त जी वे मवेगानिग्अगरिपनान्छवकान्य द्वार उठारिपडीभाषामीमक्रमस्ठेठाम्स्ट स्टब्ट ७° रिभारवउउपेभेनेनारिसार्थार १५ छ।। नवार्थेडा र्संस्मारीतभारित्रच्छा नागरेवच्छा भागरेवच्छा भाग भिद्वाग्डावणदे उभारकणा में दिनवडा द्राप्ति

स्वाद्या । विद्यान्य स्वाद्य वित्रे । विद्या ३६ उष्टेर्ड्डर्गरेन्द्रारेन्द्रमारिक्ट्वेय्गरवन्त द्रवेष्ठ्रदेशाउँ है तब खिव राजा भाषी भेषणी हार निप् यसिन्द्राचे गाउगयुक्त गाउपिक गाउपिक स्थानि द्या वर्षे उ वेजेड्र रेयू संग्रेस मारे मान इन्हें कु भगरें जा विद्यारें द्रवंद्यमारिवर्ष्ट्रभारिवेद्यस्युं उनमभम्बर खिलार्डोगार्डिइग्गरिक्विडिप्डवरायान उर्गरी निव्हानाया। भीवम् अथवानी विभेगिति बाग्नेक्रियमेथ्वभाद्वाभार्ष्यम्हरी भडेडाएडाजियवाग्याभाष्ट्रनथाउँरमभाष ग्याचे उसे विष्या विष्या दिनिया उपमिया विभिन्ना श्रीने उष्टक न डिने दे छ ए भन्छ ए ने रिने छ ए बेस इक्तर्रिक्न नेभम्ड स्थिनिनिक्व वर्गे उर्गे।

भडेज्या कर्मा कर जी जा मार्ग के वर्षे यञ्ग्रेनम्युउउउच्चामयीतुग्रा न्त्राम् उन्हे एउद्दूर्यं महस्यार्ड्ड स्ट्रिस्स्म मू जेने सार्थित हैं से अपनिया में किया में में किया <u>अद्युक्तिकार्यसाउपायकार्यकार्यकार्य</u> भेनम्बरम्भाभेष्य जेगाच्यावण्डा हुन्। म्बुडमामिजनस्य देखाद्यापत् व्याप्रेजनश्रहाध्याप्रमाने । नम्बुध्यान्यान्य भयावायाः । उपज्ञानवर्ग मन्द्र संस्थानक रवणामाज्याका करामान्य विषय निर्देश में अपनिष्य किया है। विश्व किया है। - उत्वर्वे विद्यार्गित विद्यार्गित विद्यार्गित विद्यार्थ ।

देवस्याद्य देवणात्य ग्रीस्वाधन्त र उत्राहित्य मान्य म नेन अपिमारियर ने रिष्ठ में शिष्टारित क्रायक्ष्म अमिम् अस्य स्वन्य मान्य अस्य स्वनिम् व्याप्ताम्बिष्ट्उउँ भन्छार्ट्युवर्वेष्ट्र उग भगाउँ एवं प्रयोग है गारिवेब कर्म में ने गड थारेबेड्डेडेडेंग। एस गिर्मेडार्स न्यम्बेडि॰ ट्वेंगेर्याम् मेंबेंगारिया। रिया मिर्मिया। उद्ये उन्ने अप्य ग्री के प्राप्त के स्वार्थियारी तेनम्बिं स्याग्भर्सिष्ठम् विष्ट्र िरीयम्बिंग्स नगाभक्षेष्ठम्बिंग्सस्क्रम्हे म्यवमभाष्ट्रिय्ये विस्मायव उभम्माभाष्ट्रिय ARRIVATERIST University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation University Haridwar Collection.

भाग्यग्रेक्यउम्पेसम्भर्धध्मार्थे पाभेग्डरगरे वीबारक डंबर्जा गरि इंग्रामिन संघतजेत देव वह उत्तरी में में में वा सबे भारतीय है राप्रमाथवार्य राष्ट्राक्षेत्रकार्य राष्ट्राक्षेत्रमान्त्र । रिवाभागेग्छ वेभम्ब को भाग भाग किया के विव न्रीयम्ब्रेड एसहरू रहे। निवसीय उवर्वे धेंडरउरवमण्टि। विरीपमउणमवर्गमुर्गित यम्भागभगम् वनवीरीयडवर्वने हिरीयमा मेमीम्बारोभेर्र्गरिभारिभुम्यमेमार्थेः मोम्बेथ्वनग्रिथनीउगरेभेमेनग्रीथेभग्गेष व्यावेस्टेस्टेब्रिटीयक्षवेगे प्रियेष्ट्रिय भवभग्राह्म द्वारायकारिक रिशाभी इवा रिद्धार्वनव्याभवाधिकार्यम् । उपयोग्या

उठवर्ते ने भक्त हुर्यभारा ॥ ६॥ भिइने ठारियारी ३१ भीगाउपाडाकुमबाग्द्रिम्ड रागिर्मामियाम्बर श्रीनिवनकारियेयाने विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्य विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त विष्य विश्वास्त विश्व जनअगरिका मनअगरवेबेग्यरवेसे भगरवेसे अनुडाराभन्छार्डार्डार्डिंग्भार्डिंगेन निवायारे भेड़ना दे पारिवर छवन मारिभपवर्ग मवयग्रिवडमग्रिवम्मग्रीववरेडडं भिमेन वियोगभव्तमाउवङारकारका म्याप्यामे रेशः मध्ये ५ उड्डे सा ज्यह्न भवा है समा । जा हिर विमन्द्रिडिये, माउँ उपनिया । १११ हिमनेत्रेय उम्बर्डिं दर्भगोने भाष्टि। माय्यायेनारियोर् वारिवरवमारिए। मिर्घयने में नेवारिवडे विष्यप्रक्रकेवियावक्ष विषयभेउन्वे ४७९

वैवाद्बेद्घनने विउगेष्ट उद्युर्ग भडेनद्वा के भेनर्ने ने भी में वारे वियम्भ ये हैं कारिन मार् रहर। यम्। मेडारिम खनम्रो मेन्स् वडाउँ पाउँ है रवीनिक वीनविभावने राजे कि कि वीनां रीपरिवरवर्गेनेमाद्यम् विवक्षर्येग्युकः ५%, मिलडेड नर्छ पारिभक्ष डाइभेम् विक्रेम् उपरेपकी भमकुर्मा उबबे रक्षेण कि इ कुमके रारिवर व व्यवमारिने भया वर्षे उत्रक्षित स्थान ने उद्यो भिरेडगरिमाड्समें उंडाए हिमार से जियम उठेरेडिक्टानमध्वभयन्य गाउँडिविस्ट यह भार उपरबंग वर्ष । पर्देश र भार १ पर्या । अवम्ब्रह्मान्त्र रहण्या विस्पर्मा विस्परमा विस्पर्मा विस्पर्मा विस्पर्मा विस्पर्मा विस्पर्मा विस्पर्मा विस्पर्मा विस्पर्मा विस्पर्मा विस रिवाउनेपाउनमग्रामार्थभारियकममुङ्ग्राभ

वैवेषवे रेपेम के प्रस्थान रे उपनी वर्षना व उंगिराम्बीवर्मग्रेड्युम्बरगरिवाग्यस्र " त्रिन्येयेग्राह्मेन्याद्या रेश्वरमेरे ध्रायाद्या । उपेउद्गु ग्राचरीन्ग्री असे रेग्सिन्स् उर् १९ मिं बर्चे चर्चे बरे धडे बेग उभे में बर्ड उस उन्दर्गमग्रीमस्निनाउगे भेगेगीनगराग्वाउद्वे नग्रारा । प्रक्षणन्त्र या चेत्र विषयुक्त मार्विष्टे न अग्यक्रमेभेषवी वर्षवीभाय विषये भेव प्रमु कडी भारतका विद्यार का उद्यम्बद्धभायम्भवनेभगरेष्ठिर् ग्रम्बउउउपे उबेराभवादरका करारिशाग्यसारिवरेग उन्नजम्बन्वी मेर्रीगाउगीउ में नगरवगी

नयम्द्रमयीकार्यभाष्ट्राध्याध्याध्या ववग्वीद्येश्वा स्वान्येव अत्या हा ग्रेक च्च्यर्गे उनुब रेशकी र गर्म बिवेद निष् उनम्ययवार्म्यमञ्च्डिमाभद्यमा रेश्वेभारेवउउउउत्ते भरत्वे हे हारा भूका बड उदिमर्गितम्ब्रम्बर्भन्त्रभद्धक्रभेश्वास पबहुर प्रमाने बस्तव ने विस्तव विस्त र्वमप्रमाडे।रेथ्रुभेग्डरे उत्रेवीग्रियावण जनजनपर्वेगा । १४ ग्राम्य स्वायन विभागा व्यव्हेग्यहरारहेश्यवस्वडें उत्तवम् रगरग्रम्भक्या म्रम् इत्राह्य निम्म ग्रेगम्युपार्था।१५॥१५स्थारगरगरगरा ग्रम्भिष्ट्यद्राच्याभार्विवारे

म्बद्धा उद्भारति प्राप्त प्रकामप्रवाधिया ग्या अय्यक्षित्र क्रिनेवर्गिवर्गिवर्गित्र वर्गित्र वर्गित्र वर्गित उउठामास्ट्रह्माग्रम् । रिया निया प्राथम्य विश्व का निया में निया प्राथम्य विश्व विष्य विश्व विष उम्ब्रम्बन्ने वयवज्य भग प्रवर्गे से पहिं

इग्रियणगा मान्या विषय मारियेष उपिनेवीयामावरामविया बडीवरेरी। युक्त मिवी उण्डासम्बद्धियोडिद्धियेष्विधामञ्चल **ब्रिग्नार्कार्यक्रारिमापद्राधियाद्रिमा** अर्वेषिद्नवेर्द्वयेथे जार्बम्यवाश्चित्रवेर्द ब रे प्रवत्र इन दे ते व अप द अने वो जा लेखा व अन्य मने सगुउद्याग्यीरे जारे ज्याद्याग्येश मर्वथा श्रेष्ठा महास्क्रा लहा श्रिक वर्डे उन्निय ब्रउघलडेभेन्डार्जिस्स्य वर्घन्डार्जिस्टि १२ ग्रानगम् छ एवं द्वारा मध्या वर्षे वर्षे वर्षे जेरिनेय्यकात्राम्याम्बर्धवाउववायको त उत्यम्भ ष्ठिय है । विष्ठ है । व र जानेबण्डरजनवरा भड्डायर उडिगारी

भवम्बनम्बन्धिन्यु मेर्ट्यान्य रेपेनेव रे उड़ मेरे र वित्र दे एर मेरे दे र मेरे दे र मेरे दे र मेरे र र मेरे श्वनत्यम्ब प्रदेशाम्य एवं ग्राम्य भी वर्षे वर्षिण वन्त्र वा का अवस्था का अवस्था वा अवस्था व बुक्र इं इस उद्यान स्टेम्स करदेशकान ॰ विकासियराभविष्ण मियवाष्ट्रियराभविष् यहार्याम्यार्थेरा) २०। भ्यार्थेरपेपियार्थिय मध्यकाभवभग्रमद्भाद्धकारिंगार्चमञ्च विवासिक विकासिक कर्म विकासिक व कियान्वरीय उडिएका। यी। मरायुक्त दिना बे अच्छे इसमें नक स्वारे में भम् भम्भारे इसे भ नका उपुरारिबर्खी भारे जेमें पुना ब्वर्जिंग है उ

रे इतेग्रिस्मा अप्यास्मा रेडे ये ब्रेस में प्राप्त के विकास कार्य में विकास के वित्र के विकास नाय्ववनमाड्य प्रदेश विदेश विदेश ग्रेम्स्य (दा) रिश्यनिय्वित्रकेरले याम् विभागन्त प्राप्त उण्याण्यविमाम्यवसम्बन्धः। १२१भवान्यः सक्तार शाउग्यार १३०५ मजमर वाया वा त्राबद्धारम्परावीमवान्स्भाष्ट्रवास्त्रवद्गान्त्रव उन्धानवर्गर डेले मार्भन्य गर्म महाराष्ट्रिय विष् रक्रमेपल्यापका विश्वमत्र्य गडारिकराइयीममउँडक्नेकरिए डिइए दुंड भेग्ना अन्य अभिराज्य । १९०० वर्ष द्रार्थ्य भवा नेप्रजानेप्डमाबीआक्री उउँ एउँ उउँ ए । एक सहरा वनवने पद्मा गर्भा ना है ने उद्य नेभूमबनाउबर्फिन्थेभिडिन्भिष्ठिण निएउ

रिद्धारी महार्थियाम्य प्रमान के र निविक्रमेस्त्रक्षागुडतेन्स्वीचिउद्विभरेद्रि थामी विरम्बी राजके राजके राजके राजिया जीने रीयमिक्षामी) २४ गिर्जिभक्षियं वेसे मिस्र प्राथ उत्ते भारी क्षामा इत्या उरे । विद्यानिया मभमब्द्या ध्रवानम् । में मैंडा माउत्भायिने उँछ बर्बरम्यामाञ्चभप्रमप्रमाय वभाउजीजास्कार्डभभगरेडेनजास्मिना महरकारे विमेर्ग्य विमान्य विमान्य विमान्य मान्य प्रमान्य विमान्य विमान बुग्यान्य इंग्रिंग भेर इंग्रिंग भेर प्रमण्या क्रिनेवामध्यक्रवरुभम्यिनाम्याम् अग्वारेजम्बर मबरो इस्डें अप्रकारी भगरे मबे में दें समाय्द्र यो विउगामिभम्बभैर्ड्ड क्रेन्स्यभम्रेर्म

भाग्या के प्रित्र प्रस्ति होते। प्रस्ति । जान् रिडेनजभ्य अउत्रेजियानियारिडेन्स भेजभ में नियुक्ति छि। निर्देश में इड्डिंड डिंग वार्वेडेनेम्बुमउत्रवेष्टिउद्यभवस्यवस्यवस्य मुस्रभउत्रगेष्ट उद्यभी उगरे उउँग। भन्न गर्म व्रमगीनिम्पारिवेरवेउवे ने माञ्चाने में व भारिदेरवेणगडिवगारिवस्ति। पगरिकेस्यपुरेउतमेर्डियमिव उउठामाउब्भेद्र हेब्रेडिम भारेष्ट्र भारे श्वरवीभायां विष्युगरीपाउँ पाने प्रविकारी व्रेयम्बर्गाष्ट्र उनाउ्बडाराभाष्ट्र वार् व्यस्स्टराहिः।।भेरवेष्यनमन्त्रेव्यम्बर ने में राग । या महत्र में भी महत्र वे में में रागिया

गायपाग्नेबारभेरंडेष्ट्रेयन्ग्रेष्ठ अनुवन्द्रवाभे ४३ निवानबेब वे विश्वानखनम् भिक्षनम् धीर्मण्ड ने ने के वह समाउग्न अभवस्व वृथ्वेद्र व मत् पर् नाउउनिर्मिस्यी भावें सम्मिष्ठस्ये डीवण्डेणा थ्या) महामाने में उगरे माउब ध्रीनी रहे थे भी भी भी विभारेडनाडेन्यारिनेअन्छाद्धेनेडीनड्ग्राभे मैं खंडे डे डिमीक वीर्यण डिइ गरेरण रिमाइस भी वनहें भारिभम्बार्डेमरीव्यार्वारेपिंगरी भाउडी भाडिबार यें डेडेडेरा भेंड न्या भाउडी প্রিঅত্তর্গদ্বার্থ প্রিটিপ ক্রান্ত বিজ্ঞানিক। र्रिक फिल्म वेमा विन्द्रार् वेमीना वी महनम् भेक्रिस्वेजान्स्विष्ठे उर्वे वर्षिभट उर्वे से मेखान बाष्टीमें अभवें बारिक एउड की जैमी भर उठे थे गड़

र गीमाउठे। ऐडेवेंस्प्यः प्रश्निमी स्वीभी गडेंडियनमडम्मेर्मन्गेर्यं मेर्डिंडन्। निर्मराविष्ट्रेडीमथ्यावेस्ट प्रम्स्या स्मर्गारिग्रीर शिक्तप्र र मीबा रू आकृष्ण अभ र भम्भ६ भारतमार्थेय सिंडार भेजपानि महिता पिउरिकामी३ चथाकाउरिवास्य प्रभावनार्थ नर्डिश्गान्डिश् विवादिश्य भेडाम्ब २० तिर् २९भथमभाग्वयम्यादि २३। ब्रिध्यय ४ भभाग्य २५ भव्यविवार्वे र विग्राय १ भित्र विभाप वर्ष वि र्मणिस् ३०भवत ३१ इग्म ३ र विद्व ३३ भवरि वघेटमहारहेशानिष्ट उच्चामात्रारहेर येनात्र रेंचेंग्गाडाभेक्षिभागाग्यवानेक्षेग्राम्छ गांव ६ गन्यं उड्ग्रामार डे छिपन ने ने बैंग्या

उभिभाग्यवित्रेरप्रियष्ट्रस्तरवित्रम् ४४ निविवयेराथावाग्यमाग्रहरामेंसार्थिरम्बे भड़ी तक्षवानवज्नेवामवेष्ठे रही कि उमारेशरी त्रतेत्रवण्डवयुव्ययय्वस्मीतनेत्रवेष्वयुम्तभा का का बन्दे विकास भामें का बन्दे बर्का पर न्याना मान्याने वार्षेत्र में माने भी विष्ये । जभारतगरा गिरणभायवे सिर्वे में रिवर्षर भक्तामाउगमीर्जेशिक्षा द्वामाउगमीर वर्षेर अर्थे उउँपेभेग्छिमेमार्छेडार्भम्डार्भिक्रवगभव विक्षात्रक्षक्षत्रगरिश्वाउपभगिउथ्मामगरिउ वैस्वारिष्ठक्षमगीगार्वभगरेवउभे उद्देनिगिष्ठः महासद्यीग। २८गपमा गरेश प्रेडी विष्णावडी वैविवमावाभवीष्ठामा अस्माकाष्ट्रामानीम

0)0

वैभव्यक्ते परे विष्का ३ ६ ग्रिज्य के भारतम्म ते ° प्रविष्ठ सर्वे विरक्षप्रमे अपने विरक्षा । प्रविष्ठ उभाभाममिरी इष्टेबर्गासम्बर्ग राज्या । भाक्तमी मब्द्रबेठ उरी बारम मर्गि बर्गि मारि। भितिष्ठमार्गे। ऐउन्स्थानसम्बद्धान् दि वैरियभएकार डेर्स्टनबर्ड भारा बिर्ट्स मुबेनगमेर्मबायग्रायामार्ग व्यवगर्ग विस्मिर्यभगष्टिउमानरेवनैरकाका बिनवी अवितन्य प्रवाद्य वासी भेदनास्त्र । वास्त्र वेषाउवरधेमेराथवामेंबैठेथ्यामेंबेडेमेराज प्रतर्णे । वेश का ने मेरे र मुस्कारे बहुण ग्ठेडेके।भवभम्भामहकारिश्यम्भिय त्रदेधनज्देधद्रम्धियभागाद्रजेभमुभावव

बद्धवयवग्रविग्रा ३२१। भवग्रिपे रे १४५ ाब मक्षा चरवे के बाते हा अ किया मी अ के गरिउ ग करवेड्रेग्यमिर्वेड्यमिर्वेड्यपेपार्ड्र । इस्प्रक्रियों मेरे अप्रियवनी गपानी में भक्त ये पष्टिमें घायी अपे अमुभा। युद्धाग्वावयवीचिष्टा। हुउ। वावयभेभाप क्रमाथना कर्या का भारत का तर है। ये पर थारिष्ठिकामडे भडिग्वेयज्यस्ट्रिंडा उमेरी वयवद्यावागासद्यक्तात्र । द्रशास्त्र । द्रशास्त । द्रशास्त्र । द्रशास्त्र । द्रशास्त्र । द्रशास्त्र । द्रशास्त जभरबे अम्बर्शिव स्मेब अमिबी गरिभेडे तर्गिउरो। ध्रिं। ध्रिमानी स्वक्ष उपर ने दे भेउन्नेमग्रिववं में उठेग्राम्बग्रिक रें है भग्त उभामे बर्ग्ने विस्मान्त्रीमे भाषुबर्ग मउग्मग्रम् इवयुवयम्यम् से भाष्ट

णयामतीयमतयाम उड्ड दीया उभरा। ५५%। जामभतबाद्मिण्यस्वे रेजिष्टि विश्वाला मिन मुख्यमुचेष्ट्रार्र्गिउउराभसम्भस्त्र दे विष्ठभगरिबद्यम्याभडेभडवीवाब्डचेय। उति उग्डेनेडारियम्सरारियम्मर्गाः र्माग्डिसाभामाञ्चल द्रोमिर्ग्युवाय हो भागेते घराउपी विकासक्त सर्वाष्ट्रा विकासि रातिनेतिष्ठराउउउउपानेसेरानावियेव नाम् यवार्ययाज्ये चत्र विस्त्राह्मा विस्त्र गुजाभीग्मा । हुभथ के बुद्दे के के में फाउनवम्य अरवस्य विषय विषय दिना भी गरिवेमगपवेभम्बस्य खिया गरिवेम । श्रीगारेबेभनब्छ जे। म्भिन्यवक्षित्रा

वीर्देश बेर्गाम हैराधिभागी थेस बीमगीपड़ग उग्रे ने विषे के कार्य में बड़ की में इंडिंग व गा कि बस्का इमेम् भनगतियो भन्ना भास्त्रमभनम् भीवण्डेरङ् भाक्षत्रमेर्ट्यम्बडारेडेडेस्गभाषपम्बद्धरार ज्ञानवस्त्रविसामेर्डनव्यास्वराभपवारि। है इक्तारिभामवड्डामेभाक्षमवद्गारियः प्रान हागरिशामी वैमलकी स्ट्रिस्सिम्भ अववर्गेत भेने विद्या स्वाउगडिय के उद्योग मार्थ । दीवर्ष स्वत्रिष्ठतर्ग्ववयाज्यसम्। भवरंगस्य यह शह्बाडिराविरारिडेर्थभपवाष्ट्रिड ग्डमेरीकोग्रियेरेरेकमुब्रेडिरेडा ४०।। पद्मा रेश्वमार्थियोद्धिभाष्ट्रियकार्थियवार्गाभ्य

मपनवस्रहम्स्य वैरचेनच्नाउगवश्राका र्धमेरी महत्वयेयेप व्यम्भाउरेका भाव विंडा करते हैं। भिषा विंति भारे विषय जिंडद्रम्बर्णिका गिर्वद्विष्टिका गरिष्ठ विग्यंबराना।४२।। प्रवर्वान्य क्रिक्तना प्रदेश वर्गिभिष्ठेज्या ध्रामिभ्यिभिक्षि उपराण्डा को वणवर्ववर्षमेग्राष्ट्राश्चिम्यान्यान्य उयाग्रेडेने मिभ्उभद्यान ए इस्वी निर्देश उठे। विडाबेस्का विडर्श विभुक्त जैने प्राप्त ग्वरेष्टें हेर सिंड हिरा उनका है श्वर भनविये य्येसिडेप्यवीभवीबगेण। सम्प्रेमप्रमाग्यदेव मागमनेनमतेज।४३।यथकथेणस्ववद्यम् उगाभवभगमहार देशांग्डमण्यस्य विडामेड

दिवकारी या प्रामाभवामा विचावत प्रमण्डा ४४ व्यञ्जया ४४५मा छाम्पर्यम् मन् उर्गाष्टि। ध्र ग्रेडिंगेनेनेन्य्रिड्नेस्टिंगेनेन्य्वगा नप्रयोगरेशक्रवरविविद्धरणवरेभ्वरप्रवृष्ट् ब्यारि। भेजस्वीयजभित्रवीवापेष्टरमिषा ४ भ जार्चित्र त्याया वेरे स्वरूप व्ययमण्डु से । भष मिर्डिशक्तार शन्यवार्गिर्ति से मार्थिर भगरबर्धारमभउडामेबउउउबद्धभबप्रध भर्वेया ४६ गिम्पेड अवारिश भनीवा जरभी वक्षबीवयम्बायस्थित। वयउवमीकेबेम्छेने म्हिंगभागी भेक ४१॥ रिजक्ष अबबंग्रमभगत बर्वे रेम्पबागिप्रिक्तं स्क्रम्प्रेश्वाप्तव अर्थे ।

नज्यभम्यवीवपाउग्भव्म कार्य सामित्रा १ ४० विस्तरम् समम्ज्यान्यक्रककार्यस्याप्यव्यस्य ग्यादिरेभक्षेचक्कजाष्ठरेग्रम्भवावयाड पउग्रोमन्य में उद्याद्य उद्यादा करते हैं नेभपतेव्यवेष्ठक्षत्रम्द्धनेनृष्ठ्यपद्य 3) भवध्यारकार कार के निम्मे प्राप्त उसे नभपवर्भिग्रिंग महोद्रसमित्र छ। रियो। मण्याना स्थान त्राम्यान्य सम्बद्धाः राजियामुब्रभवनात्र विष्णु उठ्यार्थ रास्याका प्राप्त उर्गति मजनकानी घाडा भी के इंदी चे बर्ख में श्री ३°

प्रावायुव्यक्तनिवायको इमी खेबते मीवायने मूर् या विश्वाप्री रामिने इगरिनी चेव वहन गीउँ 3 जाना माना का कार कार है। भी कार मार के द्रगतिया नियमगृष्टिगतियावनस्तीमीय्युजामे चयका उचाराष्ट्र। पराप्त्राभे वर्भगिरभावित्री विवाहियावन्छे ने नी युज्बीतीय जम छ छ मुधि ह जारेनीसार्विभार्विस्वार्विकार्विस् भाइीसप्रमाननते नायग्रेमे मीया नेभीप्र वर्षियंग्नेद्यभेश्वीस्थाउगर्गे अभीभाउ॰ बन्नीय में ह्या उरिएड जन्मा भी में बण्डबन्स भ इधिवाम्प्रे कि उत्र क्ष्या कारिया कि विद्यानिक कि

सुर्वेष्टिमी भामें बरवार महु । खर ने विके ने वि व्यवन्त्रभादीभाष्ट्रिक्च वर्गिया भादीभाद्येक्ष वर्धात्रवाद्वराद्ववकारी भाष्वपारात्व द्भीमाउत्वेउके। सर्पवण्डव कार्ये व्य गभाउगी अष्ट स्वर उठे उर्दे भ्या द्वा विवाद मार्थिणमा रिशम्भवस्य उर्वे उर्वे अपर देव म्बाबउरण द्वष्टी वण्ड र स्वय द्वाराम् रतेज भर्गि एक से भी इसे में स्थान का उन भा व्यवसम्बद्धार १ विषय सम्बद्धार विष्ठ भड्ड ५ भस्मित छाने प्रबुद्ध रारिये अञ्चल ब्रामिता 4४ ग्यामा श्रिका विश्व श्रिक्त विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य प्रभए नवी खाउ हिस्सिना के निर्मात के मिना के मिना के निर्मा (CC-0, Grukul Kancri Hariatura Colle di Collegia de la Collegia d

भागापपाधिकविभाइनविधाउमुन्य वस्तुष्रे ५. ज्याव अपवडामक्सिको कराष्ट्रिक अर नेभारवद्यमुब्यवयुर्वेउजेगमेर्च मामुद्रियमु व्याउणाभवभववाककतार वार्षाच्य अठउव मन इवस्यम् प्राप्तिक्षम् मध्या चेत्र विवाद्य द्या स्टाप स्टाप स्टाप निर्म र्जिन क्रिक्निक मिक्क विस्तरिक प्रमान्य या मिस्डमम्यमबद्धर पम्भाजभिरम् वर्गियर्गित्र है। प्राप्ति वर्गित्र । अग्डारिकिये अनुमान मिर्ये वेया महीग सारियोग्यासाराज्यासाराज्यासार

उपनियम्बर्धिय मिथ्याच्येचेयाने याच्य मण्मउण्डले भावनाइ उप्ताद्धिय देशावि रिनृस्गिर्गरेउनद्वार्थस्थानित्राम् धर्मित्र क्षार्मिन के उन्म क्ष्मिया। ५ ८ । द्राय मिडायद्याताम् वपच्यम्भवविष्ट्रीचित्रव भेजभे खेडवे इमा बुक्त उग्जेडिंग मिन द्वार) **बिद्धार्गित्रवपम्भयमभागभागम्** उथा छेड़ा भयमभाग्रे भे सुबड़े दे कारिबब उन्गाउनिम्बर्भिग्वास्त्रभविभाग्या 1743 नेग्ना कराये पाउने हर वर वर्ग में वेष्रमुख्यम्भान्य नद्र उपायनका नद्र रहे रिपक्रिकेश्वाडभन्छाडभन्द्र । इस्ति । भाभराष्ट्रविष्ठात्रभक्षत्वववप्रभाष्र

मियह ने नर्डा निवान सम्हर्भ ल्बडेभायबार्डिं अपवीसका गाउँ रश्मान्यकावनावस्यावस्याः। (णामकाव र गक्रमभायमे भपवाष्ट्राममञ्ज्ञाव अवरे विर्वाश्याम् विविधित्याम् । जिया हिंदी स्थित स्थानिय किया के निर्देश के जिल्ला कार्या कार्या करें भाउंभवकित्यति स्थितं । वाव्यभवा । मेर्स्या। यदम्बर्भरम्भडद्यम् व्याप्त्रम्यभारम् भारतिकारमा कार्या कार्य खन्मा प्रदेश डिल मुग्पम्प पर ने मुग्न में उज्येसवर्भवराष्ट्राय जनवाज्ययेग्डमीय जी वडमी रिक्स उमें विसे । रिपारि वसारि

मेग्रामार्थभरगार्थभराउँ सरमहातारश्चित्रारववा वर्गक्ष उत्तर उभारतिप्रक्रमकार्य नारभाउपाय नारकार ६राभत्रभत्रवेष्ठमरामग्रेणेष्टा इंग्लिने पवार्थिउने गिर्द्धियसमानिस्तारियान्ति हैं। रमण्यमेडमबन्यमंडबण्याडी जिल्हा श्विमान्यप्रमुख्य विकास स्थानिक स्थानि थेसजभाष्ट्री भविष्य विषय अव उन्तरण्याविभेषाभाष्ट्रीभ्राष्ट्रण्याद वायक्षत्रकामानगा उपने कर्पत्रविष्मास्यविष्म अस् **। अवभेउमक्षरास्ट्र**

उत्रउपमाधारीयोगप्रियडेनकारियर्डमारे 49 भेडम्ब्रामभक्ता ६४। मजामभस्बीभमण्य उत्तर रिस्टेनप्राण्येनगरिमें उपन्यास्वार्थिण्यो। रहावामा इस्प्रियम्य विश्वास्य विश्यस्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास इउम्म्इडब इर्श्वियबीयवीयवीमा ६५१ मार्थ विभिन्न अविष्य देमडभाष्टि घण्वेसे गुरुष्रिभास्त निक्ष्यका वाज्यानी क्रियान क्रियानी परिकार क्रियानी क्रयानी क्रियानी क्रयानी क्रियानी क्रियानी क्रियानी क्रियानी क्रियानी क्रियानी क्रिय मीबर्गिस्मध्वरिग्बरम्गाग्नम्बी प्राप्ते भेड युक्ताग्रेस्ट्रास्ट्रकारिशाम्ब्राध्येयअवाभ कड़्स्मार्यस्थानार्थे।वेद्यपक्रयवरनार्थः द्रायान्य दिशायान्य स्थानुम् पञ्छेज्जेग्भवारमञ्जूषे रेशामुपत्रेभीभाष्ठ्र । प्रमुक्ने मुक्तकायादाराष्ट्राक्रम्य CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ग्उष्रिणमतरेउनतारिं।भाष्ट्रयतेन द्राप् म्रमिष्टें घेष्ट्रचा विकार के विकार के प्राप्त के प्राप पमारेमजीवंडकाम्ब्यस्थास्य स्थार्वे । भा मभ्यमभग्रसक्तरेकाष्ट्रायाजारेबग्रायेयडेरेर्स्या " देमाउनेहेरभुथभउद्यभयनभववैभेमा६द्राप् म्मान्यारिहण्डमम्बद्धार्णेष्टे विद्यान्यार्थे देमनजीउउने लोहपुत्रा हे कारिक इसे में संउत्र त्रेपम्बन्यीजेष्टि द्रगर्द्यम्यन्यिम्यवेद्याचित्र जाभ्यनभागस्य मुस्टेस्व मेर्सा म्टेस्ड ज्य उनैमीविविभग्गष्टिन्। छा धर्मित्रका निका जिंडरेंगे महेबच्देष्ट बच्दे स्वानिकाश्व रके। भारिभरे हा ग्रामा उर्वेगामी खिनामी पर्यस्था

वउन्नेवरें। ५६ । पिनिभेगिह्य तारिनेभयमभगाभ बन्धान्य है। सन्मारी ने सम्माभाग्य । ठागरिगमाउनुसारितम्यतग्रि उभम्पउनुसार मुनुग्रिंग्गायावकभमुम्दिडीबन्जाभम्मेप उडीवरेकेम्भस्मारिश्रारेश्रम्भरबेम्प्यनिष्र हाराज्य कारिय सम्बद्धा विषय सम्बद्धा करणिशिरोकेश्रहें मुन्दें बेनेमुपरिभूप रिद्रांने से भया मारा वेस से मुप की मंस्रा करीय बक्ष उपनिषयणी ते भेगमभूत्वरुउत्रण भेत्र ग्रीक्रोनेभरेब मुय के नुब उसे दिलारे भी मिथा रगमारेभाग्रेष्ठेमेभपबुडब्रमम्बगरेब्भम्ब छभीभयमभगढे गारिबच्छामद्य छिउम्मेभगब स्मिम्यडीयर ग्याम् अर्ममण्डे गर्वेभगवस्

रिम्मेरेटीवममारियोगभवाविध्यवसङ्गार १॥ त्रीरह्य डेम्प्ट्रिया अप्याम् उन द्वेपर्यम्बिष्ठवमुष्रगार्थाभ्यम् द्वारार्थे उरिस् रुग्गेष्टिस् भेडाउप्राणिष्टि पायुक्ता काववाव विध्या विध्या का यह मन्यरग्वत्यस्य विष्यम् अस्य स्थानित्र । उक्टान्ड्राभडिने माम्यारेक संडक्षमन्यक ठेर्नमागुउमेभपवग्राग्उठेणमान्यय प भारत्र छट्छमराग्य छय्य जायत्र वाभार छ निवान स्थान का निवास निव रीरविषद्धराभाउभावेगारी नारोव विष्य ब्रह्म्या विकार निवय स्थान विवय के निवय विवय के निवय विवय के निवय के न

निता निविध्यक्षिरों भेना विश्व भारति। धेवमार्थियक्सेवसागी संस्थाना नामाग्रिकि उन्ने प्रविध्व विकास कार्य कार्य कार्य कार्य डामती।१४। माग्यायमिष्ठयपाभवभगग्यस छकारिश्राभयमामारेव उन्ने वर्षे भेवपं वेष व्यवस्थान स्थान स् पानकारववयवन गुरुव्यवी अपवार गिरिष्ति याभवरभावामयवारिकवीने उप क्रमार्डियम्भागवसार्थात्यमात्र पर्वायय प्राम्भिवी भेजवा में इसमें में विवा भाषित श्व वर्षग्राज्य दिश्वावश्व उग्रथक दियें जा में हिग्छि रिग्रेड के वरें न्भार्थयद्याण्यिणग्री मुर्ग्गाप्यम् उपम्

मिर्धन्यीभ्रमण्डिमीयभवाविमहाक्षेत्र अध्य विवासनाष्ट्राण्या १ माराया से मेमया रहा कर्या वाभवपवाभववाष्ट्रिष्टीभाउभभवधाभवभवा वासहरूरे वद्यीमायक्राणभागकेम्बर्भाड देघडामग्यामा स्वाप्य स म्मार्थेष्ट्रमार्थे उर्गमें उर्गमें उर्गमें वर्षे भेरत्ये व रेड परमे भवाववा भक्ता भवा गरे वे नवडे भिम्बरग्-बर्ग्ने महानेबर्ग्स्य वार्थे हैं भी वरनेवरेष्ठानवरडेका नीभिडेंडना भडीएनेब उत्पद्धविमेभेभेडिकाय्ये । । जिस् । । जिस् प्रवाभायका अवागरेखना रेखना रेमा भगाई नार्वेष्ट्रियेवेडेंपत्यकान्येष्ठय्व छ । ॰ पेनम्बन्धन्य असामवर्ग कार्गात्रहेंब

चतेहाला अधिक विकास के मार्थिक के मार्यिक के मार्थिक के मार्यिक के मार्यिक के मार्थिक के मार्थिक के मार्थिक के मार्थिक के मार्यिक के मार्यिक के मार्यिक के भागभाष्य अवस्थारि । वर्ष सिंधारिक मध्यो सु उद्योत्रार्णिशारीश्वार्णियार्थिय थडिवयोग्डियारोगभविवाउष्मद्धमारेश्वरेत् यूर्वन डारेडे फेरर पडा हिंप मारिश विपकारिङ भेजने ने जिल्ला है। १ ए । विक्रित में अवते ३० उप्रवर उन्धिन जो दिवकारियों में पेनुवाप वार्गेश्वरुष रेशायर वाग्उग्रेश्वर क्रिनेश उरामा इरडवें इमेर्बर्ट बरेबरे वेसामा रेग्टिंग्यी वस्त्रिमाज्यसम्प्रिवरेशाज्यवस्त्राभ म्यमिष्ग्र अभिवेडहेर किशा अभ्यमे त्रेपवी अपवा उउउछ्नु अभित्र स्टार्जा भित्र स्टार्क स्टाइक

मलर्डिडरुवियेण्डियवानवन्यान्यान्ये उत्पान हे ने प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के रडेनेपवाग्ववभारक भेरे बरेभारक दिन्माड एम खण्म द्वान प्रदेश महिन्द्र । ३।५८५८: मामकामबर्धामप्रध्या रिडेउउउडुबान्नरुथ्वगद्धिक्रेडेग्नेनर्ब्यभागी थमलुरुन्थ्येष्ट्रप्रयाहम्प्रयाहम्य परमारी उन्मन्दरम्य राम्य स्थान उउठा एउभ येका उउँ भड़े भेगे छने चड़के भ वेसारिके गर्भाडियमार्डिश गुरुक्रियास्त्र बीर्साह थामवेमद्रक्रभाभ्यस्य नगुत्र्विम्यन्त्र न

म्बन्नवयाने वित्र ुग्याज्यारिमेडायजेन्स्यारिम्डाया गरियुष्ठाण्यष्ठभारतिमारिशा ज्यामधीमभग्रहाउग्रहेरभुवीपयुन् पवासमाना नामा एउत्पानिसमी रेमा देश में देश उड्डनिया भवन्त्रभग्रह्म कारिश्वाहर उद्यन्य स्थानिक विश्व विकारणार्थिय विकासिया मिल्लिया विकासिया गर्ग्य उद्यभगभगरभगभ या महाराज्य का कार्य का कार्य राण्डनभार्द्यस्यभगभगरभ

नेदिराग्डीमडीभनगरिभेग्नाम्बार्ग्य वाद्यकार्यत्र स्राहेष्ट्रकाराद्र में द्रानिक प्राहेष्ट्र वर्द्य स्थित स्थित स्थानिक विकास रव्यम् उद्योभन इ उउँ उपमेरिक अग्रे वेद्य मरिएणम् वस्त्रे विवेउवी देत्रभार्याद्या वार्वार युग्य विद्राविमा प्रियम् विश्ववृति । क्रिक्टा ग्यातनमाम्बर्ध बडमारकर रेडपरेगडमबरमबर्मपराज्याप यवक्र विभिन्न प्रति देखा निम्न विद्यास्त वादनिर्मिन्दे धिये डे डे पन ड उने ८५ मेय्यम् देरे हरारे उपरमारे अवनवन डि कारहेशन्यभारिङमासिस्य प्रकार ने अग्रा

ग्राधियार्यभावतात्वमेबाद्याममहागाम्दरं पद्म पद नेनवर्गम्बद्धार्व्याभेग्निया निर्माण्यपभारी 3ने अवडो पहिल्लमबेंद्र क्षेत्र प्रचित्र प्रमानवस्थ व्याप्ति । प्रति । प्र प्रवेश वामकाय्या माना वस्त्र देवस्थ। महन्यतारिंगिरन्डिंगमरिंगत्रभ्रवेबवेबि वर्गायक्षेत्रभावनीय अधिक विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व धनेभयने या विवयन करा में भारत यड विकास्य इया का भवत में विकास विका मझल्कारिशमाड्डभागवरगमडेवर्रियन भाषवाष्ट्रगर्वयारवद्याने उदेशमङ्ख्याष्ट्र ८८ गास्त्राष्ट्रमञ्जयस्य सम्मारिवेर वप्रवेष सारिक ने जिल्ला मित्र समित्र भने मित्र भ

कि विज्ञाणि कि मिर्पाल भिर्मित के मिर्पाल के भेयविबेभ्य प्रवर्भाय नेभक्रे मृनग्रियेग इ रवश्चनउदेयहम्पेउठेथे उक्र राज्य रूबविष्ठाभाग्रम्ड गर्वा स्थान बयानवग्राद्याद्यायवार्थाय उनकारिहा प्रतिवादिक विकास मडरवरवावावावावस्य वा पर्वेचने गरराय भागान किन्द्राभप्रथा प्रशामिन । विषय विषय विषय

कारवार में प्रिड्या भूमा निर्मा के जंग्रेड जे है। इंग्रेड मेपाकारिक वे मेरेब पर ववत देवजीनामियेंग्या में देवपर पर वव शिवेशवडेरा समियहै के गर्सिड ठवला में भा बैंटन डाइन्द्रिमनेबी मण्टबस्टु अपिनारी मनाउ विवाजारेयाजी पैनियादा भाषति दिख्ये जाते उद्भिजायाजीत्यामप्रयामिप्रवेभव्ययभग्रह्म पारडवारोग्रामत विविषयामती विविषये विविषये रवस् वस्तरार्था ग्रियमत्रीप्रस्थानत्रीयभ मी उग्रवन मार्थ उग्रता प्रमान कर में स्थाप जनवण्डणाकुरमेप किर्माध्या यगउ इस्साम वाभवसार मीपकरकार देशा म्बण्ण उम्हण्डमण्ये ब्रह्मवी मिपा ब्रह्मिय जिन

ਰੇਸਰਕਵਿਸ਼ਅਤਿਸ਼ਬੰਧਾਅਕਾਬਿਹਰਾ ਕਿਵਜੀ विकार मिर्टिक ने कि नियमित कर कर कर प्रस्टिप हे र कि विश्व के रिक्ट कि विश्व कि वि विश्व कि व भडेटिक्क पद्यमति रिक उन्ने वन भन्ने धरभण्यक्तामयब्रह्माभाष्ट्रायकारमञ्ज्ञ रेशराष्ट्रवार्ष्य सम्भावनित्र भवाग्वा द्रमायम्याववेग्रहरवेप्रविग्रामहावम्हर नारिशिद्रगास्त्र कार्य अविष्य ज्बुन्स्थकाष्ट्रगाम्बर्गियम्बर्गि तथवत्र धर्वान्य या व द्वान निव जित्र स्थान के जिल्ला के ज मत्रज्वले रहते धम्बर्ध्यय भण्यक वाप्यम त्रभावद्वत्र द्वापभ

अहरार वया वर्गे व विषयमा अदम ग्युरुबद्धवायत्रज्ञ भटेकुद्माउजेमेरिगर्भाया हाग्रहशामनामेग्राम्ययार्थभाउष्यते वनगर का धनुसम्बर्मनाउपस्य जापम्ब हुग्रिंदेगायाने उत्यक्त स्वीम उत्र प्रीत्र प्रविष निकारमाभवष्ठार्ष्ठामास्करारशस्थि वेद्रावकुर्वायामउद्येक्ट्राकुराकुर्वाम् उत्तर्वाद्यम् ८८। एक निया भउद्याद्म र्ग उत्रहार विष्णा विष्ण कि स्वार्थ । कि स्वार्थ । र्उंग मिनाग्रस्व किप्सब्भ तम् क्ष्युंग क्यां रजीववेजे । उमेरी भावेडी क्ये विधेद्ध ॰ बर्छ ए छ मवरे जे। से मेव उत्यक्षा र १ ५ ।

बनेड घर्ने भक्त एउसे मना रिपबड़ के बहुत जीलवसवभव्डपडीवा ग्यंडविनिभेडिम्बङ् द्व अक्रमणे। प्रान्धवम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम् प्रियम्बद्धार्मकार्विभाष्ट्रेशाम्बद्धाः भ्राम्भ ॰ वर्भभेर्डडउउउउप्रभूतः प्रम्म नाग्रह्मार्वा मन द्वार्तिन वी भीवजेक उद्गामा स्विद्यानि भीद् उठउठे भिरुपक्तान्याबिए वित्राह्मा प्रध्यष्ठभार्मदावी जारी है । प्राप्त स्थान वर्ष उठवड्णे भेरू प्रामिन सिर्म हा । अध्या ਦਾਰਕਿਹੰਤਸਤਰੀਆਮਚਾਰੀਅਰਹਾਈ ਉਤਾਸ तिरष्टरवेभेड्डउउउउए। ध्राः भूत्रा से मेरिन् अम्।उपद्धिष्ठपद्भे नेभयम्गार्थी द्धे नप्रचित्रभयमभागम् उपराज्य

मिष्टी हामाभी उठा उठा उठा एर अगरिभमेना ५, क्रियेग्रिडमें गरी उद्याभवाषा है। देशका रेश विद्याप्रिमायोग मार्थे कुर्नि में गार्ममा उद्यमाण्डमार्थाण्यव्यार्थिने मेमेमेम्पवपारम जेभाउरी अमुखिबसगम्बाष्ट्री बार उपमे वर्णमञ्जू द्रममाया ने०० मिडास्मेर्डिय सम्प्रेसेवे नावित्रमान्य मान्य वित्र वित्र वित्र वित्र माने भ्यातभाइ अधिवार में मार्थिया में मार्थिया में मार्थिया में क्रिपड्ड चर्म चर्गरेग डेमेपी द्वारम भिन्मा उठमी भूपार्य मेंबरभावकामम्बाष्ट्री जंभम ग्रमा डिल्फोर्डिमडिल्फा है इम्सर्थि केमा टीमनाउ नेमार्थ्छ ब्रेष्ट्रक्राम्सार्थित्र विवर्ग रमारिष्टिमार्डिमें मेंबर्वेब पम्परिएम्सामें

प्राप्त द्वार्थ हिस्स्या श्रीनस्पवागाग्डि निव र इप इचिड मध्यमध्य रिस्ट्रिया दिन्ने प्रमार्थ नाम हो । कार शाष्ट्रक्यात प्राप्त अपनिष्यित्र निर्मा वावववावम् । वस्त्रम्

रणमञ्बेभा 1250041340B135 रण्यार शत्या उभाग्ना वृत्य अवस्त्र ।

भक्राष्ट्रिमनका १७३ ग्रेडिंग्स्य विवेब व्यक्त व हे बारत अमते व व ने बार विकास के वार के वा जान्यव्यान्यव्यवस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थ नाउं निण्टरेडों ने क्यों में विष्ये विषय में विषय गष्टरण्डी ग्डलाइर्जिंग रेस्म्डिल्स्स्ग्रार ६ग उद्भारम्भारतस्य वित्र हे स्थानित है नर्ना दर्भ गडमुस्र सेन्तु ग्राष्ट्र प्राप्ट परा पानि सिम्दियेय देवये भग्रे भाउँ देव छे छ ए भनिव रतम्याष्ट्रीभपुरग्ठउउउजा एक्षण्या वाषण्या कार्योभी गगनिमां डेग्मबनेसराष्ट्रा स्व मांडेग्मे प्रवस्था उर्जे में जिल्मारिक डेड दमारिया भाषा मानिक कार्या है क्रीफारवर्वित्रमण्यक्रम्यविष्ठिर्वित्राममञ्जू उजम्हार्मिन डार्॰ प्राह्म इयक्त्र ज्या है। यह

व निउपनिभाग्येवानभयुग्रमभूमा भूका खेव छ नमहिया उने जाना समें के उपित के वा जाना विश्व वर्णिक्ष हु बेस्बी विस् उडिक जी उडिक महद्रे उठे गरामानार्थि अक्षाय क्षेत्र के स्वाप्त के स्वाप्त क्षेत्र के स्वाप्त के स्वाप् उप्पार्क दिन्छी ते इस्टर्मिन एप्यानी मृत्येव नेजनी जिन्हारा १०६ बुझ्यवधाउववद्य नेजम्भ गर्निया वित्र वित् उग्राम्बनवारीकड्मार्ड नियुवामउक्रमग्रिडे उन्द्रिभ पुरुष दिवारा । मब्द्रा द्वारा विश्व दिवारा । ि)गुन्नज्यभाग्वीयद्ववेमामारेडभम्यवाम्भभुवत्र प्रित्रमें बढ़ारा प्रसारी प्राप्त मारे डेववनातम नेमजेष्टि। विद्वा तका नमीन् उबरे प्रविच्छेपेवडा नेबिष्टिमापार्यः, पराराष्ट्रविमानरे अमेविष्यमा प्रो

महाम्बाध्वामी सिशामा इंडिंग विभवक्षवामा जुगवनेद् ग्रेबन रस्रान्धराद्यात्राम् प्रमानवा अवर्पायाय मास्तर रहेग्यान जान 4ाउवहार्यभागरग्यायकार्यवार्य विष्य उटारिक्षित्र मित्र मित्र निक्षित्र निक्ष रिसम्भग्नापीरेस्ब्यन्वीय न्वउठेउभवभाउमान्स्य में उपायवान्य विकारणार्थाः युग्ना उड एउदाराका भागका खाला मिमवंबर्डा विभागवंबर विक्र श्रत्याच्यायाच्याच्याच्या

युवन उप्येखणाय भारतिय परमामाम्भा गारकारिमानारा होता है। यात्रारेशक्रिक्षाक्ष्यात्रमार्वमा र्वे व्याप्ता नियम् वित्र देव देव वित्र वित्र में कि श्री कि वित्र के कि वित्र के कि वित्र के कि वित्र के कि व यत्रविभविष्य मिस्यम् उन्तरम् अविष्य स्थानिक स् यहानासम्भागनावस्वानमस्व भागित्रार्थ महन्तारिशम्बर्गार केर्यु व्यवग्रामें इंड माण्डा प्राप्ति के अधिकार कारिरिशमण्यामुग्ड उत्याउत्याउन्य साम्यायाया यान्य देशान्य के सामान्य के सामान वद्य-मायडगाउद्योगिममेगाउद्यमेड उभाग्र अपने बेंद्र ने ने निर्माय परिवासिक में विस्ता में विस्त

उद्यस्त्रमेषडे डिमार्ग्य भिन्न विकास रिमेनफ्रेस व्याप्टा का हिल्दा न्द्रड केनभया वापा हिल वा भिक्त है कि विकास न्द्रजाराज्या है। जिल्ला है। वेबक्रब्रम्बर्ध्ययुग्नम्मग्री विमाद्या विमाद्या गर्गामुक्तिवाद्याद्यात्रम् जरेंग वित्र अनु स्टिम्स विम्य अने महार खेत्र रवभारे विश्वास्त्र प्राथी कार्य भारतमारी ११०।वाग्ड्य महनवा परामारी क्रबन्द उद्देशका का निरंप का करते गाव उद्योगिर उद्याद्य ने जन्म भारत्य जा भारत्य प्राप्त रेंशनिम्मतिहार उध्यक्षितिहार विभाष्ट भक्तप्रवास्त्र क्षात्र कार्य क

रवरानियान मान्याराहर ग्रिस्मेनिकार्ड श्रुर्धावाडा गरस्य हागाच्य स्थानाय बेबार अन्य नाम् हु ना अन्य मार्थिय का म विवादिया अस्य स्थापित उपायत । अवस्त्र अनामकभाव । अ माजार्डिक के प्राचित्रकार के विकास के प्राचित्रक के विकास के प्राचित्रक के विकास के प्राचित्रक के विकास के प्राचीत्रक के बिद्धवस्थात्री मजी भारी भाषाच्या रुव्हिस्स्मण्टिभव्रग्यनेम् नाया भिराष्ट्रिया वस्तुवा

व्याप्रा१९१)। समाहिशम्ब स्वार प्राण्या है। जिस्ता है। जिस ११ राभ व्रवस्ति भेद्रवक्षा प्रदेश माराष्ट्रवा वाम प्रवस्ति । विमोनु स्मिन्यन् उन्ने स्वन विभाग्य RIZERSAR OF THE TRANS भर्यवागामताद्वावमाध्वतव्यामाम् छाद्यावाग ११८।५५। प्रमुख्याम् । प्रमुख्याम् । मक्नब्राजा मनव्यत हा उभान्य गर इत्रामकारकानेयाउउउउभी उग्राट्यम्युगर्गर्ड ROSING VERIBAINE LINE LINE ROLL OF THE PROPERTY OF THE PROPERT Rechesching and

इसवाग्रम्यकार्थारशामग्रममण्डमम्बेभगदेन ५५२ द्रामकाभाग्नातम्भवउच्यचेष्ट्रवारेकडेच्याभावव गरिज्यानी राजवीय सम्बद्धिया । अस्ति सम्बद्धिय । अस्ति सम्बद्धिया । अस्ति सम्बद्धिय । अस्ति सम्वस्ति । अस्ति सम्बद्धिय । अस्ति सम्बद्धिय । अस्ति सम्बद्धिय । अस्ति समिति समिति । अस्ति । बुद्य अध्वय बहु माग्य उज्जा है उन् स्था विमारी रुपत्री उपनिष्य क्षेत्रादेश निष्य हिल्द भने स् द्उन्छद्रीरिकुद्रारेखीमाध्यस्मानम् वियाय करारी महत्व है भेग्य एवं विया स्वर्ध ने बण्ये छ दगरे वा भेशाय बना भेग में उना प्रें हुए द रिरेबड़ उड्डेडिए अमड़ाद्रारेडी भारताउँ भा उन्द्रिय निन्नित्वम्वर्गस्य । राज्योग्नवण्य प्रायुग्य विषयिन उप्रायुग्य वास्यित्रेयविमयायुरियोगाने उत्गा

, 130

विष्ट्रिये उत्पर्देश में भाई करें के हार भाइबी उभ्रेष्डवग्रुक्यानर्पादेशस्त्रिक्र्यारे भगरेडिनाउउडिहार्गेविर्धायाउग्रेजिन रेट्नुग्रिभेन्त्रविद्वाविद्याविद्वाविद्याव मनग्रामिस्डवनमा बुनिण वार्यक्रमा डिप्ट्रि महार्षिक हो हो है से हिल्ले हैं कि है कि ह रिष्ठउडाब्स भग्वमार्थभाष्ट्रमार्थित । मस्याम्भक्रभाष्ट्रभेग्वियादियादिकार् स्थाप्टिकार मुस्रुपापमा त्रवक्षाने मुस्रुण मण्या उपा बाष्ट्र विश्वानिक नियम् मान्य विश्वानिक नियम् र्शिश्वासमिनी प्रतिभागती खटार राम्य प्राम्य HIVEARIAGES THOIT PRACTICIONAL

वैवयवयी गर्मा में में में में माम सद्युक्त गिम्मान दी न ज्ञान र वर्ट वेद ४ श्री व पारित स्व ६ श्री इंड मा भवनुड नगडेर भवामिनाग्नमाहरारः। परायुक्त हो इस्वित्या उभिभाउने शामक देवा र्वेष्ट्रस्ट डेक्क्सिकावास्त्रिक्त १ रहे। जापुरेड मुम्बन्दर्वा ध्रकष्टिण्यम् अस् रिसीयकाम् गुन्ते में गुन्भमामा से १ वर्षा तर का रेभमा द्राज्याक विषयित्र विषयित्र विषयित्र प्रमान्य पदामनमामामा ३६९ का विषय स्टार स्टार माना रहा अरहेर हु । प्रमाप्त अपार उन्हें यमणिमनग्री रहनग्री से मेख्ये हैं दिनग्री भेन्द्रवारिस्ववेद्वेद्वेदिन्यके अध्याप्यः प्र

गभेवें मेघ्रें उण्डेस्थ्वीस्वार उणे विश्वार के रमधिम द्विषे ध्रमा कार्य के विषय कार्य के 33रिपाउरेषेड्ड छार्यस्था जिला निर्मा ग्वर्पा मनग्रिगाव श्रिनग्रिगावशामा मैसेग्मिंग्राम् क्षारिश्या है। यह उसरामु स्थानम् वर्ध्यउरवममधवमा मिनेना मेना वर्गिर विकारमा १२७ मिना मिना गरिया करें । सेवमभक्षग्रन्थ्यम्बर्भन्य स्वया स्मानुर्भ मनने दूरें स्टिने अपिट वन्ति भेक्षार्वर) भर्छवरभवाका छावाबङ्गा रामा कार्या है। इस स्वाप्त कार्या है। उद्योत्तभउभगवी भूगेमा ने अधिक अधारे वित्र म्पायवर्षी वामें वर्षे मावते वामववववा भीना

शिरापुरे रार्थ नजने भेग्से उत्ये भारती सामा हा या यडियारैतीमुयरैतीभारावे र्रीगरिक्यान्मिक्रस्टिक्टिकेशियर्गरि गरेका में भरदेखें बनमिना भारती गरे निराम्यर द्वाउपाम्याम्याम्यः, ने वका भया बुभ रमा प्रमाया जिस्सी वा १३० ग्या प्रमा परमार्ड्डिम असिग्रा चेस्रम्भार्डिश्यम सथभाष्ट्रिगमबग्उष्टिसाग) भग्नायद्वा व्याभक्तर उववनरप्रभाग १३१व नमवे अभवाष्यात्रमाने कार्यसामित्या विभाव गुर्गियाभी स्वास्त्र सग्द्र वर्गारे रका दक्ष वर्ष बेर्ब हु का मेर्ड विष्णु वा प्रमा यामाकाठेड्समीयरबायकनमामगुङ्गारा

मेर्पिगारियंनारियंनारो १३३१नारा उरस्वतिक विश्वतिक विष्वतिक विष्वतिक विष्वतिक विष्वतिक विष्यति विष्यति विष्यति विष्यत भप्यत्मगुरुस्य सम्मन्न नवी है ता नि देश प र्तार्याभाषाम्याम्याभाषाम्याति है ग्रमन्यस्थित्रम्स्य गरास्था व्याभनवनाष्ट्राग्य द्वाराष्ट्रावद्वि प्रभावाद्र उघडाष्ट्रा धानावडामानन जारदी पड़ा राष्ट्रिया है। दिल्ल क्रिस्टर्य उत्राप्त्र राष्ट्रिय विभागाना सम् रंभवादिश विविधिमहरवर्ष

जनवार्वार्थः । । वर्षे उद्यक्तार्थः । उद्यपि प्यान्य हुन उत्रक्षित्र स्तिष्ठ स्ति हुन युग्ने विक्रिक्त विक्रिक्त विक्रिक्त विक्रिक्त राग्डिंग्रास्ट्रिक्स सम्बद्ध उक्ष मिर्मिर मिर्मिश्वया शुंड उप्पेडण्या । स्टिंड स्टिंड स्टिंड ग्याद्यभस्या व्यवज्ञानीननिर्ध उठ्डित्साम् या विस्वर्थित भड़ार हा है।

वैप्रमुद्ध्य उपने वर्षण १९ ३ स्ट्रियाम्स्या विज्ञाय एउ इत्य उष्टियात्यात्यावडा विद्वारा वड गर्यायया विकास बस्ययय भेरता वायक वडा रे वा ततवा व रजेंडे अन्जरी बिच्च उडा हा हा व यारमागेउड्ड एका का विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विष्य रर्थंड मिन्छा र दरवन हा म्बडम्भद्रमद्या १४०। प्रवस्तिष्प स्मिमानवार कामानिक रिस्ट्रिस् ने बर्द्यका निध्ने स्थान उनवा त्रक्ष वडत्र का वज्र न म् स्था हरणा विषय विषय विषय

अद्वामनमान्यवत्य सम्बद्धिः विश्वयान्य म्यान्य विश्वया उन्याद्याची हैंश निम्हिच्यद्व भराज्याउग्रहमान् त्रामुडमाञ्च पर्वभे विडमगुडमान्द्राची तः श्रियामिमान्याद्यार्थः दुक्षद्व व्यवस्थायम्भारम् विमानेसाभाग वर्षियमनीयमगडियमेनार १४३१ उर्वाध्या विष्या स्था देव गडिनिया विराधित अराकाव । उठिचका चिनवा ध्रम एनथन्य मठन्या प्रदेश विकास रियवे दियवे स्वाम् वर्गाम् वर्गाम वर

गर्अगरिमेनेगमगरियोगभयात्रिनेगमिन्यारक गरिश्परउपैगर्टिस्पत्रबेमुब्रम्यवभव्य र्यभिव्यवमयवमिष्ठियंगवर्वकर्ग १४५% मुडर नम राग्रे मर्छ पडाब वा चुवा वत वा महार ग्रेष्टिष्ठार्थित्र अध्यापित्र विकासी भवमभियुक्षिण वहीं वर्गे महस्य परम्यारेश्वयान्यार्थियार्थियः अवस्वसार्भाम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्या ठियेठेउणभने प्वभागतेठडेभक्ष विष्ठा मरीहर्यम्पडेग्मरीमडीमडीनावें में भिनेज छ उर्वे उरवे व राध्य काम का राज्य दवारिय श्रुविरतभी द्वीभक्षेप्रविद्धान्त्रीय

उगामें शिक्लाने भारती महिली स्थिती १० रूपवडावरेथडाजेमीमनएउठेरमम्बुर्मिन्छ। ग्रेमेग्रेन्य अस्मिम्स्यमेन्स्य विकास भनरमभारे वेष्ट्यमी प्रवासिक हर बत में विश्वप्रेषे यहारे में नारे देश रेबे मृथ्में मृथ्ये रूपी भारा व्यानवम्बर्गामुग्यानुगगोभम्बीभग्रेथरियाँ क्रिमङाला दुङ्ब व्यवक्रा गाम उर्ग छ गर उर्थ भगव क्षारित्ववयेक्षत्रे वित्तेभक्ष वित्ववस्त्र के वे उर्देश वार् विमेर्डा भेमरा डिडवैंड उरिक प्रवेच नर्पक्ष वर्षीय्यान जीनिको निविष्ठाना प्रेमिस नियमिन विवन जीभक्षायां के प्रमुख्य के अपने विक्रियां गर्म शुभावतिरेश वित्रब्दशीश्रिपाउग्रमके इत्वय स्वया वेबेबी मिन्द्रिय नी वेरमा त्वेत्र भवडे

रम्मगाउउउन्ययस्वकानामार्थे उम्भेगिकाथवयभक्षेत्रद्वीग्रेविक्यकाभ रीक्योभगतरीतेलयभी करायत्वीरीती गी दार्भ से बरवरी परप्राध्वर काउँ वे वा नर्जाई त्रव्ययेम्या वित्रविस्ववस्त्रविर । वित्रविस्ववस्त्रविर । उउम्बन्गार्क्षकार्मेयाने गाम्रहर्मिया मर्घपमे अखार जो कि भी पर माना पर पर पर पाइ अबरेरेयन उमरीक कियेर यही यह मा म्राडिकरीया इस्वारीकारियो में निया है रेमभेनप्ववेजवेयर्थमेरेनडेभर्डियोगेन गिभत्रमुकर्डिक्डकोमेरीयाउपरकारित्रम रिपण्नमभापनीयाग्डण्यक्रयम्ब ते उद्यन गरीवसार्भम्भाग्यभेग्यवीभाषाङ्गिम्मार्वेडेरा

मैमेयानुभवभाद्भिनेनेभेमेसामियनिम्मिना ११ र्धनिया मुन्यम्नम् रिष्ठिनिय इप्रदाम् यारातामवित्वक्षप्रकाशिक्षणाप्रहे वित्रमिसम्भू ब न तरवाम रहे वें ज्ञा गरें भी भारत गरे खेती मुग्यामहासम्बद्धाः १ विद्यान्य स्थान अस्यर्ट-छीनेयनम्यनभत्रग्ना अस्टिनिक येवी भावेकासवेष्युव्याभकुक्गाभावेकाभभावेषास वीबर्गम्नाडीन उन्ग्वाश्वरीभ्य (मधीभ्यर वरिष्य ३ राजनस्वा ३ इत्ये ने इति मुपत र ष्टि द्रमाय ३ मध्या ३ ४ वया भरू गा निष् होकान्य भिष्या भगेष्य विश्व विश्व निष्य भगेष्य नवुर्व वुर्वे वैत्रवेवद्ण्यि १४१। रिण वार्वतास्त्रवरेषार्वत्रास्त्रार्वत्रम्भतगग्य

र भिसरेजेनजीय रेमया भावकार्य वर्गे का मिथुग्यस्वागित्र स्टिन्स्याद्वित्यात्रिक्षात्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र स्थाप्ति राष्ट्रप्रियम्य स्वाभाव स्वाप्त्र स्व महत्वर्थपर ११) वार्वे मिस्लास्वित्र र्माया मार्थित व्याप्त व्यापत व्याप रिठ्टी उन्स्य प्रवास्त्र वित्र द्वारेश वित्र द्वारेश केंग्मग्रीयम्भित्रम्भित्राव्यक्ष्मिथ नम्भागाभगभगमा उत्र उत्तर व्यवस्था विष्य उर्गियम्मकने।१४८।म्यानिवडेभेजस्थ रामहेन्ग्रीपडें बिका भवडें क्या सहकारि न्मविने उत्रम्मरे सम्बद्धियाम् । ठनेवछेठउउ रामरीवयार्घमाष्ट्रा १४६ ज्ञान्य भारतेर पत्रमेर्गेन्सप्यनभी मार्गी उत्रिष्टि।

वरमायवरमेरिक्णायारिश उभेरें नवीमीयो १२ भारजभाराश्विभगावीनश्वीग्ध्रमिडभेष्ठेस्रद्र्यभ नंगान्य १ रेमं विषय मिस्य मिस्य के रेमं प्रमेष के श्रीय उठमक्र परिदामा स्थ्य भिष्य मिण्ड द्रमामकक्रद्यमा १५१।। यहार द्रिस्य विश्व वर्ड उक्षेड्र के जाने सेनी दम्सम्पराधित यिवनाक्रीप रग्रास्वा अरेममेर्वे पडेप्टरमा भाषाम् याक्षकत्र हारदेशारे बेम्पडेन्य केरिया क्या उण्वे ब मह्वण्डलम्बर म्यूर्या भाषा बार्यारश्यिकस्थाभद्गारवेष्ट्रम्भन यहिना जारेष उद्ये करेष उभक्रेष भक्ता जि १५७।मध्यम्नम्ययोग्रायायायायायो रमसमाग्रेउनेनवण्डेनेग्भक्षिष्ठाश्रीति ।

वस्त्र अभिरे १ विदेश प्रमार विक्रमार । इसाय टमान रमगरिणार्यत्वेराभगीनेस्वारो माह्या प्राचारेश्वयवय्रीहरूका के विक्रित्र के विक्रित के विक्रित्र के विक्रित के विक्रित्र के विक्रित के विक्रित्र के विक्रित के विक्रित्र के विक्रित के विक्रित्र के विक्रित्र के विक्रित्र के विक्रित्र के विक्रित्र के विक्रित्र के विक्रित के विक्रित के विक्रित्र के विक्रित्र के विक्रित के विक्रित्र के विक्रित के विक्रित के विक्रित के विक्र के विक्रित के विक्रित के विक्रित के विक्रित के विक्रित के विक्र के विक्रित के विक्रित के विक्रित के विक्रित के विक्रित के विक्र के विक्रित के विक्रित के विक्रित के विक्रित के विक्रित के विक्र के विक्रित के विक्रित के विक्रित के विक्रित के विक्रित के विक्र युर्वित्रमात्रवित्रमम्भवय्ये प्रिव्या । विश्याद्य रेः मेरडिंपर्वेद्वाच्वापानमान्यान्यान्या ग्रेमन्त्रित्यहार्टिंग्मस्यम् हेंगान्यस् त्रभुष्टार विस्वित्र स्कार्यप्राप्य पर्य नियं कार्य कार्य कार्य १५६॥।१०० तत्ववासववस्तवका ११५७५६॥। रिक्रामामगाउपन्य उद्यान्य वरवा निर्मात्री छाया । ।।। ।।। ।।। ।।। ।।।। भू उबरें जो बन्द्रा पद्मार गर्म जनपाय से मुष् ए । ए विस्ताय जिल्ला । विस्ताय के विस्ताय के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गा १ भरे गरिन मुस्र रहे स्टिन है से मिर्देग भरा ? द थयानगरद्यगाव्यक्ष भाष्ट्री वेडभार्म सभारेभा ट्रयारेयाडेमेय्यक्रघ्रवसभाक्षी ग्राचनमंत्राहेका। राया बुन्ब खबड़ विनेत्र हे वेबस प्रवस्था है। महरममर्का उडे हैं उठाने भड़े हम्बाहर रि रदन्त्राक्ष्य नव्यक्ष्यक्ष्य । स्टार्थिया स् वार्मिवनवन्स्यार्थ्याम् न्यार्थित्र थान्यारेकारिस म्यारेक्ष्म इस्मारिक रेखेनेपुड्या दिस्तियार रिकेटिन रारे दिन कार्य किया है के दिन के किया न्य प्राप्त के विकास के निया के किया है। डिमाराष्ट्रामाराष्ट्रियाम्बर्गित्र । वीष्ठरीडी गडाने का गणिया करते हैं देने

मरेण १५वर्गी कमें द्वारा मार्डिं म्यानिक निकालिक निकालि कार्यक्रिय कार्यान्य मान्य विश्व मिर्द्धा विष्टित विष्टित विष्टित विष्टित वि उत्रह्म स्वाद्व क्षा अने वा अन्य कि किया के भेडिनभार उठी ब्रह्मायक भीकि ज्ये उद्देश राजा १६३ ज्याम्पर्सिक रेडिन सर्डा निवस्ति प्राण्ये मार्टी वणवण्य रमायविष्य न नवर मार्थ न्यस्त्रमध्यवनेष्यक्रम्भन्नामा १६४ मञ्जा राधवानवाव वार्षा राज्य वित्तानवा वि सभार इस्माप वस्त्र अभवत ६ अवस्ति सा उद्भागम्याध्याभ्याध्याम् इत् व्रम्भीग्रम्भाव दिल्ला ३५सम्भाव छेन्।

रेज्नेकरी क्रिस्स स्पर्मिक 78 गमाउउगारत्यागा विचार उभ प्रतिवासिमानस्य तिसे प्रज्ञास्य ने अस्मित्य प्रदेशना में समाज देशना महारा विकालाना विकास उद्योग मार्थिय द्रमेगावी जीनित्यक्षेत्र अवस्थान समाण्यकार्मित्र गिरियानिमारामानिमारिया विष्यारे स्टेस्ट्रियमण्डे अध्यास्त्र स्थाप मत्विमान्यान्य भीडिन दिभाम्बन्द्र ० रत्वे बेयहरा विस् उर्देशमारी पुरा वि उपिणमाव द्वारा उपराज्य मुसारेबयभग प्रमामकर सरमग्रेज नगम्बन्धनावयानुष्यम्

मिण्डमिन्डमिर्डामिर BRENGHOVEROVED उज्युक्त निया उठे द्वार में विया प्रति विया उन्छन्दिक्ष मार्थिक प्रतिकार्थिक विश्व मिन्स्र में विकास का का माने किया है। मयविवार्तिक विवार्तिक विवा वडायान्य स्थान ध्यमद्यम् अव गरिक्षाम् अस्या

स्वर्ण्यम्बर्वाध्याभाउपराममञ्ख्य ? वहारवहयुमिया १६१ म्स्मी भारते भव थेउ विवर्जन्य उभनेबर्धरेय नेबब छिउ। से राउ र्ण्य अने निरमारे परारे पर विस्तारिय वयाउडावम्बर्यस्या । ५८ गारे मुक्ते भर् रि डेड्डाईपकारिङ प्रभाष्ट्रमग्रामकार थाउँ इतिनामिना गर्वेत्वका मार्ग के इत्यान मिनामिनपन वडवी भाग उउँ भेरा भववे भार्यवा भार्ये उग्राविका भी मेंबबी सुन्म उप उठेगम्बउद्यर्थियुग्यस्थार्थि। उज्याद्वामा वस्प्राचनी भागवस्त्र में देश जनमङ्गेत्वयाग्नव्यश्चर्मे जावहार्मी स्यवी नीवीभ्रणवानवीभ्रमं उत्यविष्टीवी

र्धाया हारा निया हार हार हार रण्डामिस्यवास रणमारमणउउद्याजवान ESGINA CAHARDENACIANA प्रमायकार्भा अग्रामा अग्राम अमाबग्हायहारेद्वाप्रेस्मागप्राय विष्ठिपन्नियनविष्ठान्ति यमम्बर्गात्र वर्गात्र वर्गात्र मिया का निया व्यसम्बन्धा १५६। ग्रंथाय

लड्लिडिंगेम महबेसहावगृते हु। वर्ष अन्य उठिने महत्व वर्ष महत्व उजातन्य विकासिकारिकारिक SEED SYPHYSOES

एउपा निषद्य विद्यान उनाक्षण उनसार वहस्य दूराय उभवस्तवभाषा के विषयम्बर्धिया यम्भवर प्रविष्ट अन्यम्भवव्य मिनेमाननवान उध्यनधार 1737मड्माग्ड्यवन्द्रवन्यप रवग्रंद वाष्ट्र । त्यहार

क्षवद्भवागर यश्वराव दिल्य वस्त्य न उद्यानवरा यम्गानिया यद्वादिवार्गिका विकास

रेडग्डिंग्येड डिंग्सेड डिंग्स डिंग्सेड वमस्टिकार विश्वापाया बरेका उरम्बद्धिक भववष्ट बर्ग्ड यभयन पडेंड्रपत्र युन्त उर्ण रेड् जारित प्राचित्र कि प्राचित्र विद्यान रेटडा अधिक द्वारा है । र्वरस्थान्यम् मिन्निम्हाक्ष्याः वार्वे ॰ यवरबठेकभेगडाने विचारिक विचारिक कराने विचारिक रक्वाग्यस्याम्बर्गायस्थ्य वास्त्र वास्त्र

मिट्ना११६ मियले के प्रम नवायमार्था युप्र उपर उपय इ इप्रमाध्यक्षिक्षात्रमण्यास्त्र उग्रम्हार्ययान्य मिस्मा स्वयने दनवेष्ठ्य तबी भाषाबाष्ट्री भाउत में स्पर्धि स्मिन्य देशसम्सार गर्मनडब्रिमा, द्रार्थिय स्ववनम्बर्श्वम यान्य मान्यस्य स्थानिक य उर्देश के विकास नि याडियानिक सम्बद्धारिक विषय देम्भेन्यूमप्राच्छार्थियाग्रामिभप्राच्याम्भ एक्ष्या १९०१ नियम्भमन्त

थ्रवेरनमें देना ने हुर्वी नवी सुन्त डा जे हिमा श्विपष्ठार वृत्र स्थान में दिस्ते वेत्र में वेद्या देश देश है। उस्रमायावभारतमा प्राचित्र व्यापार भेवर नग्या यायम्बर्ग वेद्याद्या भारत्ये ेट्टिंग्रेटिंग्रेश्वेटिंग्रेश्वेटिंग्रेश्वेटिंग्रेश्वेटिंग्रे गर्डिट करिन १८१ कि देश का विभी ग्राम्यान्य स्थानित स् देशपन्यमानुष्यमानुष्य । अस्य । द्वारिकामान्यामान् पुरुष्ट्रिकार्य प्रमारा साव र उद्यानम् कारा

प्रस्टुडा मिडलास हारक नियान सामा निया

पिलावसार विस्तर माडियसास्य ग्राम्प्री वरंग्यान्त्र वर्षेत्र देखेगामुड्ये गुडाबेघमडायोग्याचे ये वेडपारिपारि हार्महरू किन्न देरेंगापमाना रेस्व रवदार रेम्हामियाउभानेर एकी वड क्रामेन्ट्रेग रवेन्ड रिडम्भेवदर्दर द्यामस्येदरगम देवन्य इस्का १८३ गृष्टियामा उगम्म वेडनवेभडोनेरानी निस्पर माउनस्भ ३ अनिरामी वर्धेयाडेव मन्द्रसम् उर्देषु भवत्व मन्द्रमेश्व भवनेश्व प्र निहारामाग्रीभेभेड्ड्उन्डोमध्यार्डिंड्रार्थ भेभाइनु उठाउठेशाउमाइन्यवास्मिभाइनु उठाउठे भीवस्मावम्बर्भाइमाइबर्गास्यो हिंद्रा नावम्बर्भ मध्यवनगण्डिग्रहेम्डलभवनात्रेना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वग्द्रमवन्द्रयाष्ट्रममञ्क्रामण्ड र्श्यत्मपंद्रवाकामवाउगावाद्रकार् PERSONAL BURGERICOR मामार्गण्यार्भियार्गियार्गण्या नियमस्याभगर वचरा त्वच उद्यव दा व व व व्यवकार्मिंग्यन्यम्भ द्वार स्वायन्य विवयन्त्र विवयन्त्य विवयन्त्र विवयन्त्य विवयन्त्य विवयन्त्य विवयन्त्य विवयन्त्र विवयन्त्र विवयन्त्र विवयन्त्र मह्या भाषुया । जन र प्रमार र भाष्ट्र पाष्ट्र थ रत्ते रें विभक्त विकार प्रतिकार है। अक्रकामायम् विष्युव्यवस्था उत्पिर्व। सवायम्सार्यकावराजार भरवहरूर्या नित्रविष्ठ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उडिगायहार्यय वर्धे उगात उर्गित्रपर्थ अग्रहासनी मार्गित्र नववार क्रियबर्ग मार्ग वामा उर्गत भनात्रम्हार्गनीता इनतव्यवन्ते निय्यवन्तन्त्रण् क्रमाना संग्रहाने मग्रहाना मण्य प्रयासनी गृत गण्डियब बिर्देश में विन्ति हैं विन्ति हैं विन्ति हैं यर्गित्वादे इविग्रेगिर पारियार द्वार्य महार 25030मागम्बर्भेण्य उन्नियं प्रमानम् न्याद्रास्त्रम् चक्रण देन जिल्ला न्या है। उणवेष्टाण्या निर्देश स्वाचित्रव न्या ने विकास के ती के त

G21371

कार्वहरत्रयुप्राय्याक्षम् १ भाषायाम्य विमयातयार त्रकार प्राथमाउँ । उपरेख्या प्राथमा मर्वे पर पियान्य पार्वे विष्ण दीमवम् उर्ग भवकाउणाम्यामवडम्बडमप्रमान या स्टिल अव्यक्तान स्वावाहित THE WOODS TO THE TOTAL STATES CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

部 举 3

माद्यानेवा ग्रेवा स्थानिक स्था उग्राउद्देश प्रकास्त्र सामा है। निर्माण देश बउण्डलेखा इत्या है । इत्या विकास वसेपर्गवद्वर्गिष्णामाद्य वनवड्डिप सम्राप्ति । स्यामान्य विषय । नार तथाउँ विगरियोग्सी यसे नाउँ देश पिंड मिला थि मिला लगता एक उरे विभने निकार का उपाद्या का अपनिया उपाप्ता विकास अग्निक्षक्षक्ष्यम्हिषेत्र्वा स्टिन्स् मडामन्डाराप्यानामानावर प्रवतार्थेय उर्ण्यम्यप्रताम्भम्याद्धन्तवयान् इत्रम्

क्षा कार्य के किया के मान (ISUSAISHIDA AREISINISULO र देवनावम्भ उत्तर वडव व्यान् गरिन्द्र उपयोग उर्वाड विक्रियेनिय प्रतामपुरः गुजार द्वाउनुस्प्रेश्च अस्य मान्य मुन्द्रत थाययात्रामम्बद्धने हा हुन महिष्णिय विकासियान करा उर्वा अभवाभाया करा विकास करा दिवार राष्ट्राय प्राप्त स्वाप्त स्वा पा मुक्रीया १ पारे वा भारता ३ मुक्या संग्रह ते रेश्मियंग्रेश्वयद्वेष्ट्रवेभ्रच्छ्यभ्या। विधानम्बर्धित्रकार्धित्र । प्रमिन्न मिन्न प्रमान प्रमान प्रमान स्थान स्थान

तिगर प्रकार अधार निमेबरबड्याम्य भागम्य अमान्यपाडण्यादाया पार

विविधिय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्राधिकारिशामार्गिव सम्मायान्यपे र भ हा हा हा हा हर है। ये पता के निवास व रामगण्यागृहान्गान्यमागरमान्द्रस्थ टनकागुडाम्स्य स्पार्किकारशायाः रेनियामबेबक् भडे नेंदिन्द्रमामेंद्रम्द्रयम् देउ विकाग वरा द्वापा १ सिकार है सिकार है नितरम्बस्यस्य स्थान्य येवद्रम्भवग्रा १ राज्यव इव व उग्र स्निग्या भारति । भवनाका कर्णारह । भावितित्रवात द्वाभाव महारामा क्षा नाम्याना स्थाना स्याना स्थाना स १३74फ्राक्शनानीभरकाममेंबर्गबंउवर्गी।

भथावाभेठेउन्नेभावी राग्राण्याक्रम्यमार्गार्थ

क्षेत्रहरू देशवस उण्यश्राक्षायाम् । द्वात्वव एक बिरुवाये प्रस्कारीकारिय गुमबाड राज्य वा पार्टिक विग्रं विश्व ग्यंडवाम् सभक्षार्

गर्भ अग्रिकाम हामारित स्थाप इन्ग्रह्म निव्यान्य निव्यान्य निव्यान्य व्यक्तिमक्रावीम् विम्निक्षिण विम ह्रवयहारी कार्या विस्त्र कार्या के स्वर्धि के महाक्ष्य अस्य स्थापन व अध्याना अध्य याम्याम् विकास का निर्देश का विकास का निर्देश

उभष्टेज्य डेभवनाय माग रमय्ष्रिपे रेश्वर्य रेश्वर्य रेश्वर्य मत्रण क्षान्य-विकास्य कार्या ग्रिज्युवाद्यावमाग्रेष्ट्र मभया पीरम्भारमान्य नियम्भाग्रेय कुवारेभाष्ट्राभाष मक्राप्तायाम्य ।

कि नवानवा निया मिर्द्या मिर्द्य प क्र रिश्विक्ष प्रमार्थ स्मार

क्रिजेनेम् भेववनेम् रिष्ट्रेन्स् हितारिक्त नेभडियम्मावसव्याजने ता सामान्या यारमी सबाद जवा के राजा के रहार के पार है ग्रेन्य वस्ति इस्ट्रिय स्त्रिय रुवस्येन्द्रगरम्भागरुउपग्रिया निष्यम्बम् 3निन्यानिकानी भाषान्त्री मिर्देशाणिक नित्र मा लायन वर्ष पास्त्रकार है है ने द्वार व प्रयमिनावर्गभारम्या । उपमेपनवी पायणमे म्बार्ष्या विकास मान्या विकास के विकास र्ष्टित्र गर्वा भाष्टित स्था कि । 'हपेड पंचत्रतात्रका रका ग्रीक ग्विध्वयं मेवानामाग्रागावडा के महाधवानमंग्री वेड वे म्या डेड

179

पद्मित्ररूपे। विकामियवविष्युवरीने र वमाकाम्वेडरीगमाउँवीमाथवबीमाग्रेजंत जीवजीगम्यववीभाष्टियाग्रे:ग्वायउग्रेस ग्यासह उत्रसर भारे अगेरि गयु नभने मनामनामनवा यववी भारे मेरि २ ६ ग्य उष्मह्म भरेः ग्रायउपसंग्रप्ष्य मा ३०॥ ने भीडीबाया डिया वेडांग्रे वी प्रवे पृष्टु उत्था । ग्निभगोगिरेगे निस्थिने विर्देष उग्रथि ज्नेयवउं हिम्बिड ह्या है में खवउ मंत्रग्य उग्राबुउग्राथउछिराग्वराम्यः प्राथि मवे नवीभा इंग्रिअवेगिभागेवगरेग वर्ष थनावी शवीवविविवास रेगीरवमारिशास ग्मरेनवीभाष्यविकाभववीभाष्यव

वैपमाउवह्याक्षेणक्षित्रवाय्याक्ष्यः) ग्वमानगर्गम्था खसर्भरवेडेन मने हैं भेडेपुरेबड्रेन निर्माणही कि ने राग्व-र्यावना रेडेम्प्रवर्वर्वर्व इक्रिकार् न्वेमीववेवर् भे भा मिरवी उवस्वता में मिर्मिक्टिगा ३२ गारियने भे मृग्डे वर्षे भाष्वी उद्योभोना में ने चववाभारि वीचेच्याति। श्वउभागव्याप्य । रः । चै मड स स्पृति हो देस प ने श्रामित्र क्षान्य विवर्टिण भाषानि भेड़ेवारिष हैसासा। इउन्दः श्रीबार्यतेष्य्रद्वात्रं विष्ठिक नापवस्त्रित स्वाप्तिले उष्टिराभागिष्ठीविज्वेभाग्नविष्या

अक्षाम्हार्डिह स्वडिह प्राप्त स्वास्त्र स्व जिये मारिकारिववेपारे ब्रुयारि हैपारे गमें बड़े बिब्र गर के निरंदि में वैरायान्वावरी दि गमेव्वाय्यानेथे-इब्डिउउउ ग्यून्ना भग्री म्बाउव है भार्उ जे मिलिंडि धार्उ जे मेल जे अंगिडेपाइउग्डेपाइ व्ययम्मन मबरां नेबरेवार्वेनांमेरेटियाद्धिरांडे नामवाता काडाखरी हिरामी वन य अवस्वारीष्ट्रियानमां में अरे उरे उष्टारी द्विष्ठाहरस्टिंग क्रीव श्मव्भाग्य वर्ग सह उमे इसाहर में ने में में में में में बागेडेनेहांबा म्बजिगारेबारे मसेवारे

182

सेउउं प्रधीन का नी में री का खुडी पृष्टि रीरी असीजारेग्सवेग्धवेग्धवीय्तीग्रिया पृष्ठह्य । श्रम्य में व्यवस्थित । मेंबेउगरिनराष्ट्री ग्रियुग्डिक उस्तां क्रियं हरे विष्णु कार्या ने बन मन्भार्वमध्वमध्वयम्बउगरे मुग्येउवः उत्तिश्वरहायाभूत्र गर्ववडारेन्य देखे-पाउवभे मेवनेवानीभे मेरिवार हो ने घ्रस्याव्याने साउँ वीवने में घ्रस्यापा हरामेवेडारेष्ठमेमराग्याष्ठाषानान-ष्वाष्ट्रायद्ययमेर्ने भेर्ने भारत्या विकास गुक्ता खढल राग्ये भेरे गरी ब खुरारी भेर ग्गर्गीव अग्रगीव सार्गी महाविष्ठी

103

कारिकार कार्य में विश्व परिवास के TOTALET PERRY CON हैं पार्वेड हैं के हैं के रे दामात्रवय्यक्षक्षम्पत्रयक्षम्यवर्गम् यावम्यभाग्यम्हर्मास्य स्वर् वमब्डनकस्थान प्राथित स्थापित स्थापि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गिसक इस्टिक रहे विकास STREESABANES उथ्राज्य म्यान्य विश्व विमान मिया पार्य पार्य प्राचित्र का मान्य का मान्य प्राचित्र का मान्य क महीतवारीजनवार्डिं कार्यानिक विश्व ZINGARING STERNESS AUSTRASIA उपग्राज्य वस्त्र ज्ञानिक निकार किया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

185

नाउपनाउदार्गिक्तमेरिकमाएडवेपवराउँ वा र ३ के कि विस्वाधिक के प्राप्त के प्र उवयुक्त मिन्द्रायाम्य स्थादिक स्थादिक विषय उर्विकामार्माना मिर्डास्ट स्टिश्तास बर्गिकारारेबर्बर्डिन उपराज्यात्रात्र भाउन्हर्भनाम्य उर्जनम्य विश्वास्त्र । वर्षानिका पारेसी पिछा एउ पिछा मुक्ता भारत जन्निक्यायुक्त जिल्लाम् हिन्द्र विक्रिक्ष किन्द्र किन् यान्यान विकास के विता के विकास या विद्रति विषयिक देन अभय विभागति । उद्यानिय अप्राचित्र । विश्व वि

186

केरवर्गिय उम्बेर भिरोड विस्तान है। यम्भग्राम्य वामान्यम् वास्त्र मिल्येन्डाम्भयत्रवहाक्राहित्रप्रदेश त्रत्या पत्र भिष्ठा या दिए का भारत है य क्राम्यम्म्यम्भावतारः हार्ड्यावडव सर्ग्यं स्वाधिकारिया स्वाधिकारिया स्वाधिकारिया । खिपरिस्ड ४४। ना तमिवड भास्य स्टब्ड ने गर्थ भाग उनम्भाव दिन्ना भेगा देना देना नेभागवीस्वद्यमिष्ठउभक्तमाशामार्थाव उर्ग्येन प्रियाने महार्थिक महामान रही उसमेंबडब्रामहसम्बाग्डमक्रमक्रमक्रमक्रम उउभग्रमाम्माना वारहे नेर्मा येगा व्यक्त THE SEAS HEND AND DIGITION OF THE SEAS OF

ये देन उपग्रवण्यासी यवर अवाश्वास्त्रका उदा यहाजी विवास का वा विवास बनाव उपभाष्यव द्वांभय विष्युद्धार्थित विषयित्व विषयित्य विषयि CHESSONAS PARAMISICAS NA निर्देशास्त्र विस्तिति । TE ESTERIOR LANGE 235 RAOIS POROCH ४६ामानेनवउन्कामरेकर उन्ययमान SHARING CONTRACTOR (IN SINGER CONTRACTOR) उम्बन्धिय देश व्यव दियम मुत्रणको विस्त्र साम्यान्य । ४१८ उदानवउक्तमत्द्रद्रामकन्। नगमान्त्र देव के प्र राज्ये ने उपरायामान्य राज्यामान उवाण्युद्धावाद्यायाया रश्यकारण कार्यकारण कार्यकार JAREN SALARING एक्ट उनम्बन्धियाने के निर्मा के निर् मब्यागावहानियान्य मार्गिया मउर्भणण्डणावण्डलामावराज्य उगर द्यावामाय पर्वापताया मानायकार्ड विकामाना

हुकारिकाहिकर वर्वे अवने निवस्तिमारिक रेप मोरिश्वाक्षका उत्तरित विस्तरिक विस्तरिक विस्तरित राजिया अस्तिवाद्ये विकास स्थापित वहार्वात्राम्याम्याम्याम्यान्याः वर्गाया अधिक विषया महाने अधिक विषया भीति । उठ्डिंग भीन मिं निर्देश श्वार देश रे भारती है भन्नाम्डलस्ट उस्म्हल्यानाम् ताम्बल्यस्य कुउग्रेट्स्ड्नागरा गंडेन ग्रेमिनेन में उपाष्ठ्र प्रत्यव्यवप्राप्तवारश्चित्र भीउद्गार्थरउपभेठउग्रेजन्यज्ञानिका स्मार्की वामाने उपर्गिग्याण्य उपराद्धार करानि है वपर

भवेमार्गेवेडिववावश्रेतिहामाप्रवाहि ग्डाविवावश्रेडा बाग्डावृग्ग्भर्खारा भारावृग्गावह्या । स् ब्रम्बीउने वे भगश्रुग्नाय में मार्ग वर्ग जिन्ने व भन रेमवेद्देभावेयेव १५४१ रिजयूर्ग वाडेम्भ्येक स्व अस्त्रित (रहिवानिक्रिया भेग्नानिक्रिया यार्ज देक्ट्रभार्कनंभरेष्ट्रिन्य विक्रवण्डेणन वस्त्रभाभमभम्गर्वेष्ट्रप्रम्थिवयग्रहानमाण्याक्य ॰ महेभी इसे मैक अवविभागे भेगे भवावा खेड) ग्यार मिहरान्देश्येषाम्भयकण्या अं इमेठमब ग्रम्सा ग्रीडरेजभ्या भी बेंगहरी भागगीर का १५६१भक्ने न्द्रः ष्टिउप ही हो एडवएं स्थाने हुं विभवरायवायभागभाग अविभाइवन्यकान्व-

गिडभारेड अस्रिकारेडीभारेडीभारेकि र्य बेरवज्ञ ज्ञात्रस्य नग्यापारिडेमजीग्यूवीभावग्येड ॰ रिडेर्रिका मिला है कि साम मार्थिक में कि से मार्थिक में मार्थिक मे रिक्रा भारत भारत भी व्योपिया गर्भ है उन्हें जिस भी में ब बान्द्रीब्डाम्स्यपिकपाडेकाडेवाकाद्रेडाम्मर्थं -रिंडे डे राजनी जिल्ली के मिला कि कार्य के राज्य है वि र्गियारियाद्वावेर्डियार्गियायव्यक्ति । याज्यवीमामारिनेवजीभाकिष्णिजे जान ब्रेभ्डन्स् बर्डम्बर्हर्मवीष्ट्रिड १५८। वि नगरी १ भी उत्र र कक्ष ग्रेस र विभवका स्पार ब्रिडवीयेडा ४ म्याम्बमन ६ म्यूपीयपडिका अखिमानवा म्ब्रिजिम्म्याम्बर्गाने रेः

डीकडांडेबोब्रिजेनेडियनाडाडेकवारकामनाने वयरिभेषिवजारेजेनेयका १५६। जनवेरा जव म्बर मवग्रे के दिस् ना र गाँच मार के भेमेनडीरमभगावेडिडाउनभेडिहिन्द रामी पृष्णाना वेपाउप र महत्वा विकार माराजी मेडमब्रोह्नचर्य मिन्डियम मेड्रवर्जिय रावाध्वरमीभेवाने बर्जा हिन् राध्या डीम उरवेद्र में माध्ववकाविकामान्यकार्थवन सहस्रवान राजाकामा विवासिक स्थान उउम्बराग्रिस्य मन्द्रथडीयवर नववार्थ उपमिनार्डोनेडाव्यतिर्वेश धेनावेथडे निभेपारेविष्ट्रित नवनगरेवा नग्रु उठावि ने व के कि गाउबवानग्र के कि स्व व व के निरंपवी

भग्ववाष्ट्रीववडाग्रेमिभग्डेवक्रेमहिप्तेग्रेण उथ्वक्रीजीन जन्में बेपडी ख्रेस्मबेबा ने जेरेड बेंडिस्जवकारीबुबे बार्ष्यु ग्यारिबेबराजिक यविष्ठाभगरेष्ठे विष्णाग्यमेरे मेवणियेषे थेतवरिकाड ग्रह्ममाडां नगरीगरोपक्रि थ्वंवन्ग्रीउवक्ष नग्रीव्यीतग्रीनग्री गरे डेबिडिभ इभिष्मारावेप्हारीभागेमें बुखारे हैं विधेतकारीनारी प्रस्थमारी वायम्य अर्थे तबावनगडिबाबासब्यान्याचनावनगडिः ६०४नि र्ष्टिणंत्रस्थवाष्ट्रिते प्रभेजेडांबी विवयं इत्राष्ट्रिक्रे चार्यमध्याग्नंबियडी घरेमवनाष्ट्रग्निम्

मबीच्य भरिएकथाल भर्म सम्बंधिक । स्विभिन्ने श्चिरावर उपनिवाष्ट्र कार्या है जाने कर भेद्रीयविष्ड ने तनमा । निस्य के राज्य राज्य गुउणस्य हो जिस्सा द्रिया द्रिया द्रिया प्राप्त का वस्यकार्य विश्वति विश्वति । रेश्मिल्यल्यम्य विभावयान्य ड्रेपण ड्रियम्बर्धा विष्य । अन्य जिल्लाम् स्राप्याण्यस्मत्राण्या च्याच्याच्या गमन्यस्वयवाष्ट्राध्याक्षात्राम् यम्भवभवठवडवन्भाष्ट्रवाद्यम्य भागाद्यायाजभागाता व्याप्टाचे द्वारायाजा CC-0. Guld un ingri University Haridwa Collection. Digitized by St. Foundation USA

भासताबाद्यान्य अभादाताकार देव देव RESTERIOR OF THE ٢٥٥٥٥١١٥٥٩ स्ववस्थान स्वयं दिरित्रकाराकाकाकाकामिणद्यहर जमामण्यान कार्यात्वात्यात्वात्या १४४, व्याप्तारिक १५४ गाउँ स्वाप्त 15-1869 13/12 DE TREE 3055/43 यमाम्य वर्षमाम्य कि उग्राह्मा 157427312144174日7月

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारेटीममिन्न वित्रंत्र वित्र निर्मा का निर्म का निर्मा का निर्म का निर्मा का निर्म का निर्मा का निर्मा का निर्म यनव्यन्तर्व वर्गाष्ट्रियुक्त व्याप्त क्षार्थ नगरपद्यानिकारायविकारिताया म्बियर्थ्ययम् अववण्डा अधान्य स्मान्य स धनायवाना के प्राच्या के वित्राच्या के वित्राच के वित् राष्ट्रपाड प्राचित्र विकास है। भारती अग्रहें जिस्ता है स्थानिक स्था र घटनविववनस्याका ६८ भवनम् ३वर वेमेबयबीभपवाष्ट्री विउवविक्रकार्कार वेडबंग्ड नेबडग्यमाम्य उपराणीभका ग्रामस्त्रेग्रेड्व मेग्डवेडिंग्भणि १६८ १५एएमे

उनेम स्ववेस नाय माहा स्वया देश र्थ जे निहारिया मिल्या मिल् राष्ट्राम्याचे अस्ति विकासी स्थापति । अध्यक्ष विश्वविक विषयिक विश्वविक विषयिक वकाउपनिवर्धिय अवस्थान उत्माक्षाय्यावद्याय्यव्यवप्रदेशकार्य एका निर्मा विकास महिला वर्ण है कार्य ने विवाह क्रानाम् का नामाना कारामा अण्डियाता मामक्रामा कामानु वास हैं विकार के विकार के किया है के किया है के किया है कि किया है कि ने उबहुए। हा मिल्या सामा हिंदी वरभादमम्भन्नसभागवा

100

नवनन्य उत्यमिक्रमक्रमक्रम र ११ व्यापा मारायाय अगराय मान्याया मान्याया स क्षेत्रमान्य विश्व विष्य विश्व विष्य राज्यान्य का नियान का नियान का नियान माल्माउनवम् दुनडन्ति वप्रविकार्य हुत्र मिल्न हुन्द्र हुन्द्र हुन्द्र हुन् उद्दान्यानवमा गर्पाया निडवार AS REILANDER PARTICIONS भवायम् इश्वनग्रम् द्यान् प्रवाद्या DE LACKTOR BERTON CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राजना म्हाराजा है। व ८व७५७निए हाउण १५५ रङ्गातुनाववाकारकार्यः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यम्ड्रिया वाष्ट्र प्राप्तिक रि क्रिट्ट के कि मिन्द्र में हैं नियम महायह । उभक्तानाष्ट्रणन उक्काना के प्रारम्भाव के विकास के निक्षा किन्य दिन किन्य किन वामवास्त्रका द्वाम द्रमान

रक्षियामारिकार के मार्थिया स्थान गष्ट्रज्याया। मुद्राग्वेष्ट्रम्भीयेथ्डीय अजीवरेरे डिइ जिइउमंक विरुगिर्धि वर्जदानीवेत्रत्रीयेभ्यन्नान्नावेप्रिकेभार राजारेड नाने ये हिर महाविष्णान के प्रमान वाडिए। वित्र गहेना श्रिक्तिभेभी रहा विका के मांबेप्डिभागी भड़ा गिष्णाव मानिया भेभी बहु विरोध्या प्राथित । म्ब्रिपिपीउस्थ्या २ मार्मित्रवपाउस्थिया ३ बने अर्थाबर्गा महिर हिराबेबर में बक्खा में रेड जैजाडेकजीवजी गरेक मडीमडीमडीमडिए एक इम्डेभेग्डेउनेवर्रेरे हेडभ१ भ्रष्भरभ् वेभ इ प्रदेश भवकश्विद्यामविमाभव

भाग्रेडाग्रीमभाग्रेडबर्गभयभावगैडीत्रमुक् हस्रमाजा। १९। विस्थाना स्वास्थ गर्वडवेस्रधेरागेडवेनेन गीप्रभर्धव मुखे उद्देशभागियन्वन १०८१ भूत्र मुक्साभीष्टे उभाभेबेडेडेरा है३ म्बर्ग भेंडेंगडेक्डिय-वभग्नेमेबह्वेपप्रीष्ठडेंगणीहै इउके मने हि ਤਮਾਕੇਸ਼ਭਾਵ੍ਓਤਮਹੋਏਤੋਭੇਦਾਅਧ੍ਮਾਉਦਾ उरकार्म्यान्नेवनी नेवडवेन श्रीड शुड्य वीचरारिचरारियमाडियभीडीचाउन्मे भ्भवाउद्यासिक्षास्त्रमेवहास्त्रकार्यक्रम् नेभयगण्वेषेष्ठी मामेषे उत्रवेषे गृहे वेष्वीभा गष्ट्र राष्ट्रिय परिस्पारिय परिनाष्ट्रीय खुरी ग्रात्वाववावस्वानग्रज्ञा।१५१०म्प्राप्तानग्रन

ब्रावम्झीमके ग्रेशममेनमंभारवम्झसम व्र थंक्रयुत्रिडहार्राष्ट्राडमेडमेड्नांभाके नेकिष्ट्रां तिविक्रोजेडिकारिं। र । भूम् विदेशभा वे ११ थर मि भागमें बहुम छेरवे उउँ रिंड में में बरिस्टर्ग हवेडवेग्रास्त्रेंगंग इंभेवड विवनेवजीं गरिंडिक अबरडेरा ग्भाड्मण्यवविष्कृतका उद्याप्यविष्ठाहरू रेश्या ग्रामित्र वित्राष्ट्रिय नारि भाग निंडिंगप्रितृप्रिरेभ्रोबन्गिसीम्प्राप्त् निष्ठा। ४१। युन्न अयुगगडे डेमाधवारी वे चेंद्रचंरकांगरिव्रेरेध्विप्नाउपेगमेवा थ्रखब्दिप्रियण्याव्यास्भ्रोववारव क्रीभेरीभाग्रेम्बडारिभाष्ठ्रयुपेष्ठबीजा

में है कार्यवर्ग केंद्र कार्यय के किया म्ब्रेनियाम् म्बर्णरेवर्मित्राण्डेन्य भरेतवग्रमीराभे म्याप्वरेजिय राज्व नग्रके मिर्देश भारति १ हिप्पानि र हो निव उन्हें भीतियाँ अपनिवृत्तियाँ विवेदा व इन्द्रहिप्या इस्ति । स्वार्थिक विद्या है। से वनंग्रम्भाउः।<२)ग्रिक्षक् अम्पृष् पेन्श नष्ठेमामाग्रेगभावेशामाग्रेमा हमी का उद्योगित क्षेत्र के उद्योगित के विकासी भा विष्वाकार कार्यस्था निर्वेद विष्वेद के कि ग्नेपाउन्डवाधियोभ्याबुद्धा १ रहका २ प्य मृद्रम् ४ रेः ग्रेबिंग्डिंभग्रबृष्ठां स

हरम्ब्रम्भंक ग्रिम्टरीय केवा उसे १०३ वयहीत्रक्यगिनंत्रगरशानांवीरवारीय यें विस्थितियां विष्या विष्ये मित्री उल्वेन्स्ड्रान्स्डिंग्निप्नराने बर्गडीयम्बर्गान्य अधिकार्यकारेः र्यामवनानिक भनेका त्रीका विकासिक विकासिक महाराष्ट्रिया प्रमाण्या । बनेमग्रेशान्त्र म्हायीमप्डिवाभाषामा बब्भण्यामण्डे ने गम्भमबुक्रभण्यभण्येम गिउरी रहे उंबेर रह अधारे : ग्यान्यित विरेत्र वृत्ती भाषा वाला का में का का में वाला का किया है जी का उग्छेबर्भा अवस्तु सार्थ । माध्वीवानि

कर्त्रवंत्रदृष्ट्यार्विक्ष्यं देः भ्रीभव्या जिन्न नित्र के विष्य के विष्य के विषय म् भर्षवास् वाष्विष्वेष्वेष्मा हउष्विगर १। द्रावड्डीभाइडोआडेप्रिशान्डास्य दः रित्र १० विद्यातिक विद्यातिक विद्यातिक विद्यातिक विद्यातिक वित्यातिक विद्यातिक विद्यात 'श्रुग्रमध्यविद्रग्रीवर्थीवरीवभागा'रर म्बड्गर्य निक्रभ्यववेष भेरने यांडे निका ग्न भगवमारेनेपाउँवेच वड्र वर्जन हिम्पाउन्में ब्राविनेक्रां नियं के जिल्ला थ्या असे से सब ने ग्रिम्ट्रिमे म डब भड़ाम बर्वप्ष्टीभेडींगे क्रम्बरावावप्रदेशीवे उरगेरियपेडिहराज्यारे: भोवेचेड न वामसीपसवर्पवउगचेक मह्मडीपाद्र-

ग्ध्यत्यक्षेत्रवम्यत्यात्रक्षेत्रः रदा है १०४ र्ने बेंग्डिंग ने मान्य वहां ने हिप्या के महाय इन्मिडिवंभिको न्रिण मिलम्पार्थिय मि नीखटधब्रहीयवद्यीमानेभग्रवाधिका महीराम्ब्रियेनकभीका १४०। रिक्रम्ब्रियेल र्ग्क्रेडिग्रेडे विडम १ भयम २ भयम ३ वेड रव्डिक स्थार्थिय स्थार्थिय दिन्दि ग्वीरी अस्मायां वेस सभाव में बर्ग नविश म्माबीमानवाभीवडेवम्ब भववभारे महाने र्थं इउक्र अब्य उन्या प्राचित्र प्राचित्र विष्ठ उपर डेस्माधवीनेमंग्रीष्ट्रीणरेग्डेम्पनामाष् राज्याराजववीमधी मथा घ्रमरी ग्रंडमधी केंद्वरा जिस्माया स्वति भिक्राप्यारिके है

ध्रेथमिष्। ज्येहभड्ष्यवन्तेष्ट्रेथ्येड रंत्रेपविज्ञानववते विवाजितस्य तववते खुष प्रवस्त्रभव्यात्रः म्म्याभाष्ठवर्गभारत्व म्बनाहिक्ति असिवारिका व्यान असिका असिव असिव र्द्रविभाष्ट्रामाञ्चववाद्याद्वीयावा १६८ । खुरी सुंबर्भुं अवा म्यून हवीय मेरिक भ रीका नम्बेड ने भिन्ने डेग्रहिट रिट हिंग्ये कि १५ २१ पविगम्बर्ध्यान्दः मोस्यान्वविगव वरिपरिवाष्ट्रभाष्ठाभवगद्भमद्दित मनवीवयिविक्रीमिका रश्यिकी रस्का अष्गारः माउनाउनाउनाउनाउनावित्र मभीगाउँ छिउ अञ्चिष्ठ वैप्वैप्वि वेष् मपीन। ६४। ग्रुडिवाडिक्शाउडणग्रेडिमधी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

याग्याद मामदाकारण मिनवाभ्याववय

प्राप्ति गड्भमिन गिना गरेके भवन् याप्ति **डिइमनग्रापराष्ट्रपक्षक्रमिग्राग्याग्याग्याग्या** विभगवी अन्यास्था मिला मिला विकास विभविष्टी के। जर्डे विक्षा मसरे समाज प्रसः प्रमारे वेडेस भूम सहराष्ट्राप्य के जिल्ला मिना की स्पेन वेउक्तभारा वेमानेष्ठ्छ उबीडेवारीये रम्ग रानरेपउवीर एण्ड छ डेंबर छ सर्वारी उट्डिम्बर्से बर्गाण्डिकान गरिते राभववं श्वाप्य ये अवस्था ने निर्देश वंग्रमान्य विभाष्ट्रमान्य विभाष्ट्रमान्य विभाष्ट्रमान्य म्यूनाप्टर्गाम्याय्याय्याय्याय्यायः भित्रगतेथे जे बद्धकां सबबी का जीवन के श्रम्थे त्रवीभाद्रेक्षग्रेग्य स्वाधीमें उउँग

211

क्रीमिन्य स्मिन्निगमिना स्वीष्टी अवस्वधी श्रिक्त श्रीवर्धित में में मानिया में या में राम्य द्या विका निर्धाणप्र म बण्डे उप्याप्ति भूमनग्रेंडिंभराग्रेंभ्यमग्रेंभेंडिंसर्ग उध्में नग्या १ द्वारा कुष्मारे घराष्ट्र र्यायवी। येषु मारी सहकारोतिय गीउ रीजपरपारिंगिन यह रमप्या क्रीक्षर विष्ठातः, विर्विद्धः । विष्ठितं क्रापम्यान्डा व्यानिका विष्य क्रक्र उरिविविविधार्मिक कर्य कार्रा । किनामस्वदेषेभयन्यम्यतेषानारंग्य घेषयस्य वामारियां मिला ग्रहभूमप्राप्

१) हराम्या देः ।वस्त्रमित्रवेगान्या उभरत्मनार्थं रवपारं स्वर्गेर रवाकार म्बेसगारि। ६१। यस्यान्यक्तस्य निर्मेश्रा सन्तर्यं वर्ष महार वर्ष ने के विका उक्ता उपन्य नियम्बर्गित स्थान न्यान्य नियान्य विषयान्य विषय रिवेडाचा द्वारा मिया प्रेरी नाम स्विवेट उन्हें भत्रवार्थिक स्मार्थिक विकास के स्मार्थिक के स्मार्थिक के स्मार्थिक के स्मार्थिक के सम्मार्थिक के समित्रिक के सम्मार्थिक के सम्मार् मिष्ठकामाध्यक्षक्रकार्यक है है है है कि का मार्टिक क्रियामिक मानवारी मानव रपरिपक्षि रेश प्राचित्र में स्वार्थ में स् दिग्रमारिय अस्तिगरिया विकास कर रेशनर्उभव्याप्रजेयस्व्याग्राच्या

यवनिष्ठिष्टिक वर्षेक्ष्यारिया वामिष्ठमारी १९) तद्यते गुन्ते न्या अप्रविद्या अप्रविद्या नियम् व्यवक्रिक्ति हिल्लाम् क्रिक्स क्रिक्ति मार्गित नेज क्षारिकेव्यान्य विश्वास्त्रीय विश्वस्त्रीय विश्वस्त्र ब्रुभण्दम्भीजिश्रामाध्याधियां । विश्वास्त्रिक्ष उवरमे हुर बेनवडागा डिक्टडिनवीदान सेवंगरे भक्रामा। १०२। प्रिज्यम्बीव क्रिएयं में ये भाग्य ड्राय्य प्राये प् कुनमान्य प्रविक्षाविक्ष विक्राया सक्ति ।। रे माग्रेयस्थार वेम्भाग्रेस्य प्रमाग्रेस म्गाग्ड डार्ग्य बनाने विकार्व गडाने ग्राम् 2°३१) नगम्भिष्ठ आक्षणरे देवन । इंडे

र्डिपमेगमिवसविवडा) रम्ब्रामेरवरामेर्या गैते वर्गितरें ब वर्ष के जिस् के ब स्वी ने करी कार्यष्ठावाभवद्यक्षात्रभेष्ठाक्षकाव्यव्यक्ष क्राष्ट्रीकारब डिबर्भग्रह्म डिस्ब उद्य प्रवीष्ट्रायम् स्वत् रंगवर्षियम् र्वाव व्यामिन क्रिया के विकास कि वि मेरायाडाहारात्रेशाहियाचीयान्यान्याहा रेमसम्बद्धाराश्वरभूगाम्य सम्बन्धारम् में में स्थान हो मिला १० पार्यकार स्थान स्थान उन्देश्मानम्याद्वारानाग्राहरमा कारः। ग्रीप्रभगगें असे भवगें अपन गिराह्य के जिल्ले में के किया है।

१०१।स्वरः।।भेरत्यम्ब्ववरभेरस्य १०६ राहा हो। विना का मानी वर्ग स्ट्रीम व ग्रामा २०८। रिकार से निर्मा के प्रमान उन भीयविक्रमें विद्यानिक विद्यानिक देश। रे: 17ना या राज्य राज्य के वा का वा प्रमान प्रमान प्रमान के विकास के प्रमान के प्रमान के विकास के विकास के प्रमान के विकास भाराभागाः। प्रविष्ठ प्रविष्ठाः। राका। २० राष्ट्रवारः । याउ उद्याद गरेरी में भागम्यात्रा वार्वा वार्मित ग्रिका क्रिका श्री भी दिल्ला है। प्रमायत्वणा विद्यात्वावण व्याम् मानवणाव बुत्रवाद्भुज्यानाम् स्वयाप्रकारात्रेत्र यह उत्रवाभ उब्बेस जिद्धारा सक्ष उस हुरारि! भरापरी उचेउना मिनी बीत

उत्रहेमा महत्राणिया भागा वेसा सामा विकास व्यक्ति।१११ स्वाभिवाभावें! देश विकात विडेर्मिरभपगर्भरभावस्थान मिष्टालविभागीपभिष्यात ११२ विग्राम् किल्ला स्थापना स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स् याप्राचारायवर्ग्य विश्वास्त्र । विश्वास्त्र वेभमत्रविक्रमार्थिकार्थिकार्थिकार्थिक विश्वसहना है: भिर्मिक्वाना जिल्ला भवी प्रवस्त के निर्मा कार र एड ज उउराष्ट्रिये उराह्य राष्ट्रिया विश्वास वाश्वाना है। व्यानार वेनारा जन्यान प्रेम्बेक्शक्रियम्बेभित्रम्बेभित्रम्बिभ्रम्बीयबी सामवी नेसा ११ ४ मा स्वरेष गाउप

रासरी वरी ग्रमाने वित्राप्रिया है । नी भडमी श्री मा जिस्सी वराम श्चिमार का प्राप्त का प्राप्त कर किया है। कानाभित्र विन्यागान्य । अवस्थान प्रकाउउर प्रसद्धका रे: नगम्यर भाववाग्र बना उवाच र हा म भीत रामागमयरभेभवसभारपरवेगम रिवल न उवार्गिक देत्र भ राम्यर रेश) ने निकिश्म अञ्ज्ञेत्रवेपवान घ्रापीवेष्यम युग्जे ने संधारतका प्रयाग्य विषेत्रे रामं इवायद्वे अप्रिम्म मिष्ठा विष्ठ

वारे पारिट गरिया विया कराउ एव उद्युर्गेर कित्र में में ने कि कित्र में स वाउपाप्रसामा गायसा प्राप्त । नियर विष्ठे विस्त्र स्विया इस्वीरन प्राप्ति दउतरी ग्रेमेर स्रिस्डबार्डप्त उँद्रिग्रहों उगें उद्ग्रिम उब्ग्व में द विदेशकितम् स्रियम्बित्र हिंदी रिप्यामयया वीमन्यम उवा वप्राम् उठ उउगे माउयग्नाम्याप्याम्या विदेशान्द्रमा अवस्य मा अवस्थान विदेश वेसेमत्रमं स्थानिया विषय विषय विषय भाष्ट्रीमिसिजिमेरडाएडीवर्ट जेडाडेसव अभउवाग्यहार राष्ट्रियानार स्टारेवी

युग्य श्रम्य स्माय र गष्व गनेवर्गियुग्य श्रुग्य मिष् निजवार राज्या के जिल्ला के निज्ञा के मिथ्वयर्ग्य ग्रेटियेवव व्याप्र भाष्वपर स्थरित रण्यमभपवरण्यस्वतम् नियान त्रवद्धभागभाद्यभडवाग्रहाडेसणनाभी मभेरेमणे प्रमित्री भीरेमवण दे मेर्यय या बना। र्यारिक मिरायार प्रायम्भार के विकास मिराया रथराम् प्राक्तारीराम्य प्रमाय स्थान भारत्वे विडेड (नरारिव धेरा स्थायन प्राथ प्रवाध्यवप्रवेश्वयं स्थाने । गाउउँगानेना स्वयस्प्रवर्मनार्भनेगो

म्थिये अस्त मही वर्द्धार्थियो महाराशिव सम्दर्ध रेश्वरमान्यविद्याद्यभेटमहाराज्य असे त्रित्रमार्थित महायत्र थे रेज्रेका इन्नेभीपउग्नुग्रह्मपुग्रह्मप्रमाने त्र्यात्वाद्य सरम्गीनेस्थिण्यम्यस्यस्थित्यस्य निर् राज्य विष्ट्रिय मार्डिया विष्ट्रिया मिर्टिया इस्टाइजाईउग्राम्मार्थिकार्यिकार्यिकार्यिकार्यिकार्यिकार्यिकार्थिकार्यिका वनमगड्यवस्त्रीभाद्यकार्भम्ययवारे उमरमार्डियम् अपार्थिय है निर्मार्डियम् उत्रविकारिनिष्ट्रणप्रयाद्वानिस्विह मरेंबुरमजीगमरद्य पराष्ट्रिया पराष्ट्र रिधरशक्रारंभर्ध राज्या राज्या भाष प्रतिम्हित्व श्रीमार्थित व्याप्तिमार्थे

विभिट्नाष्ट्रामिय्यस्मववान्यज्येत्रेपरयम्बर १११ र क्रियान्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत वेद्याय्रची भेगेरेड्यु यस्त्रेय्याय्यायार्थेत्र अन्देनी मिथ्यियवान्यवान्यविष्टेन परिस्ता हिन्दिन उथानु काराजा वार्ष काराजा के वार्ष काराजा कराय है। रोरेजियमेपस्टेना भेरापरमिनाधिमे समेमाय ० वनरविष्याग्याग्याम् याक्नुरिधरेपरणीम् कार मेरामायान हाता मेरामायान है। विरम्पर्वे वे जारा स्थाप्य स्थाप्य विराज्य स्थाप्य स्य स्थाप्य स्थाप स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स रहें ने परहें या मान्य वा ने या वा नियं का मान्य वा नियं कि वा नियं का मान्य वा नियं विश्व विश्य घरमीयरहेरसम्यउत्रीजानीयारस्व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ग्रम्यमेमत्रेस्यां एति व्यक्तित्यां के निर्मान्यों यत्यत्र वेष्ट्र विष्टु वेगग्यवेद्ववग्यरस्य विमेष्टियम्बन्य देने श्रियस्य सम्प्रिमार्थिया महास्थित । , धननमर्गियम् विद्यास्त्र मान्या विद्यान्त्र मान्या । अवनरस्यिवपाग्राम् जानेवस्यिक्षिक्षारे उष्टिया परवेतम् जीरेन्जिक महाकारेना यरामरमान्यक्रमत्वर्थभेडी वे देशामत्वर्थ भेप्राण्डरकेमंस्वत्वीचेउचेमंभवद्यांस्कृ विरागिर्धाराने मां उर्गायानी स्थाया दिये रहिभरउठे अन्य प्रतिस्वी भूग डी उउठाम व्ययम्भार्यक्षामाष्ट्रवर्थग्राउपमाद्भाउरभ

युर्विये उभाषामा । अप्रियुरा व भारती उत्तर दिरि र रिववस्व १ दिस्य भारति । स्वास्त्र रिमिरेग वीशिभयुडीडिशिवामित्रिकेस्विधिक्षेत्रिक्षित्रिक्षेत्रिक्षेत्रिक्षेत्रिक्षेत्रिक्षेत्रिक्षेत्रिक्षेत्रिक्षेत्रिक विउरिभारेभिम्भियेपेपाम् १ पवासेम् १ ५ एटेन मग्रियामात्रियुपाउद्गित्राभिष्यवियाम् व्यक्तिम् १ रेडी यर मडना म्हान्य महान्य रेडी हाउनिम वित्रीभाममग्राम् राष्ट्री वर्गित र प्रीयान्य स्थानित स महासार्या भेव्येडियम मिर्मित्र सामित्र धयसीवयाउनीगोगडनिनर्रेडभगरेरेधम्बन भेवर्डिने डिउम्सण्डिस्पान के स्थानिस्त र्यस्मिश्वेरम् । इया माराम् । ज्यान परिश्रिकंषु भारे नहीं विषयित्र में विषयित्र है परिभे उप्रवर्गियवन्मचिउनेग्रयम्गेग्रिमात्रुभा

रिरेम परी भिष्ठरें अन्य गण्डी ग्रे रानाभाष्ट्री उराभाष्ट्रीभेत्रियरच र्वनका ध्रमवर्वन उपरम्य सम्उत्ररहेकारिश्वास्त्र कार्य रिभयमुने उगमुखयर धामकारीये वि 38 जिल्यायविवेच्छा ने मुसदेद के बी मारि व्याप्रियाम् अवस्थिमार्ग्यस्थान्यः विश्व । अत्राष्ट्रिया वर्षे बेबडिट अंग्रिस जिल्ला करा है। जिल्ला करा कि स अवस्था वर

रिवर्ध हैंवरेस्त्रेरस्मिरें। इक्ष्मितिहार हैने किल हिल गुजगम्द्र भेगमद्व वर्ष भरकेव्यार्थिकार्थ्यान्य रिक्मिटेग्भवगुउप्रमिद्धाः र्भेष्ट्र पड्डा उर कार्य का अवस्था अवस्था

वर्षामकाम्बन्धित्वत्र हिन्द्र विकास वीं उरग्रहीन गुर्थेरेट सिटी भिटी भिट्टा स्ट्राम्य स्ट्राम्य स्ट्राम्य स्ट्राम्य स्ट्राम्य स्ट्राम्य स्ट्राम्य हारि अस्पार्टे प्राप्त स्टार्ट । उर देउणकार्य सम्भाय स्वाउव देना का धारत्य नित्र के किता है के किता किता के किता के किता के किता किता के किता के किता के किता किता के किता कि किता किता के किता क उणंभय्य वाउर्धातायार्थिताया नरथेंद्व वर्वाग्येष्टी या स्वाया है दिस्त रथ्वंउजे मिक्निस्यम्पान्थर्वे उ ट्रम्य का ग्राप्त के विकास के मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्य के मार्य के मार्य के मार्थ के मार्य के डीय्य ग्रंथ माउठामाय प्रायमाउठ उरण्यनगरमगरमगरमा

नेहम्यान्य विकास्य विकासिय विक युरेन रेय्येग्या अधिक विषये की भय्य करें दुर्गानिमाः स्थानम् सम्बन्धाः स्थाने । उत्पानिमारे जे जिन्द्रम्य वास्त्र मिर्ड मिर्ड मिर्ड कर्ष पर्धिक स्थित स्थानिक मित्रकारिक हैं के स्थानिक स्था दिन। हामान हर वा १० महिना है। विकास माने वा विकास के वित्र के विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के विका भववित्राष्ट्रमेपका अवित्राचित्र विवास रेक्नरेग्यक्षिभय्युवउथवण्टश्क्रक मामिस्यप्रवस्था महावे भी वाग्र विश्व स्था है । कार्यमारित्रदीगा निगाविक्तवास्त्रवयान्यस ब्रमम्ब्रच्याव्यम्युप्यवाप्रयाची वर्णाव्यम् गडन्यायवरमीमरे ज्याममगग्रवष्ट्य

द्धारिश रिप्रमम्बद्धम्यरम् वर्षे श्रीम्प्रमा श्राह्य अवस्य श्रम् वास्त्र भागमा वस्त्र भाग भागमा वस्त्र जर्ष्ट्रभग्वन एक रेड्डिभग्वन मेरेड्डिभग्वन उधेयाभवद्येभेग्यने उप्टेममीय्यवस्वीद्वेमेभम भग्याभव्यवी भय् पड्या क्रिया कर्ति । भग्ध्यम्माउद्ये उठण्यास्त अभवध्यायने स्वी द्वरामें प्रदान उभवद्यामें रेड्विमें हिंद न्त्रभवद्ये परमध्येतिमभग्रहरिष्यः निष्ठ उठ्डे येत्र दे भेष्यद्रगण्याच्याभाग्या भागवाद्याद्र या भेष्यद्रा 3 चेउके । भवष वर्ग दिग्डिमस्मवेभवद्ये जियु थार्ग उर्जनगति पार विषय उर्जन निक्रिय उरवरिययाग्यवागिर्दियार्थिक स्वाभवहरू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यमसङ्गानाडेपारडेबेमात्रुस्तउत्र रेपरप्र ११५ उन्हारी स्प्रांमबना विष्याम् उपरवेस रिभवध त्रक्ष योगम्यान्य स्थानम्यान्य वर्षा म्याप्यान र्ण्डिमाण्ड्रियमिप्रजीग्यक्ष्यमियवस्त्रिश रियाते भावनी स्मिप्ते । मित्र कार्य कार्य कार्य भेरानिपराणानेषुसाद्यान्य हो भग्नावार्थित । भाग्रेभमभगवार्थात्रः ज्वाहरभयगरमरम वीवरवी मार्ग मिष्टी जारी मांभेक्षात्र-प्राची जते हुक्तरण दैंग्जिमारी भेग्री चर्का ग्रीय रभाग विभाग वर्षे वण्डेन्स्रीते भग्ड्ब नजीवण्ये ग्रम्था ग्रावने र्रेग्य हिरामयाचर ने भेवत्य प्रवास्थिते। ग्मेशवयायवाययोग्यायये भारते भारते भारते भारते भारते । इतिमाभववयर्गामा विषये के विषये

म्रंगिम्प्रयुग्नाम् । १८ । त्राम्याम् । ह्या प्रथा प्रयापित के विकास के ती क भवद्योष्टिपंभपात्रियां निष्यं । उत्यक्ष उभव ष्या उर्गितान मार्थ उत्तय । भागान वाने र रिभग्वयम्प्रियाउउउर्डग्रथम्बराम्योप्र गुरुष्य विश्व विश् भगमान्त्रवास्त्त ब्यानिभयान् पर्वेडणभागिषाभववानिक द्वारो अउरमा मित्र विषय विषय । भभगाष्ट्रीवरायका अगमेश्वयुव्यवस्थित प्रवासीय प्रमार्थित स्था

उउठे। श्रवनिष्ठउउवय्यामारेश द्वार्घरियमे ११ क्रीक्षेत्र्वरस्ट्रकाम्म्यम्भउभुद्नाउन्वर्ष्य उष्टेग्री भाष्ट्रियाना स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम भेडियुमिप्रोजीनाज्यमान्त्रिस्ट्रोयाम्पराजीनान्न मामियागर विवर्धे स्थाने राज्या भेममहर्डे बह्य क्राम्बर्द्र-बार्व्ययुव्यारम्बर्धार्थः र्याद्व भवद्यभेत्रोग्यारभयात्रेपानादि अडीपेर प्रक्रिक्टिन स्थानिक विद्यानिक विद्य प्ये उद्ये यहां साम्यान के के उत्तर सम्यान है। वित्र उपरोधिन विक्रेभम् कि उपग्रेभग्रिंगभ्रमी उपव उउर्देश्वेम्ह्यर्वाड्यम्प्री?गान्मभापन्छि उवार्गे छन्उव उउ जाममुनि उथ्ग्य छिने भाग से उ वद्याम्या विचा वर्षे में मुद्री उर्वे में कि अपर्य

उत्रममुद्रेड मेरी उराप्या द्रिण्य उत्रमान्य विउग्रममें वेस्वण है इ ग्रुग्न विभिन्न खेळा है भी मायाग्रहार द्वारामामामामायाग्रहार विवादित्र वेभाष्ट्रियामा विद्यास्त्राच्या स्थापना स्थापन स्थापन स्थापन स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स भेतेरमध्या वर्षे भारति । वर्षे भारति । मुचेउरवा अवार वामार शार शार वामार वा वैउववेभरूपारिज्यकार्भेर्याचेरेरेक्ट्रिक्ट्रब्युपि **्रवाधवाधेकरपाममुख्यित्रस्यम्मिनस्र्रहेक्क्व** यमवेप्रवृपवर्गेरेपारे ख्रावनीने महारिए गायद्वा रं भाउन्यक्षेत्रकार्यमायायस्य नियानी उन्देम् वगिरमेरी गडिण्यान्य भाषाया वर्गने उत्राख्या क्रिया विष्ट्री वर्ग में उप्रेश प्रमें

गमाय्यस्मेवव्यभाग्रेसम्भेनं गुम्र्ग्वावरामे १११ उद्योगेष्टेक्यर मर्ने पर नियत्मे विकेश श्रिक्तका विकास मिल्या कर मिल्या है। भार प्रेप्ट नको जिल्ला मान्य के किए मार्प्ट करिय उग्रेजिन हा स्थापन । निर्देश में के प्रमान निर्देश हैं। उत्यान्त हेन्य हेन्य देन स्थान वास्यानात्रभग्रत्यस्त्रधानाम्यानाम्यवद्यभा व्या उत्रवास्त्रवाभवयम् व्याकारा हु । भवत परवद्य, उन्याद्वारा विष्युक्त परवद्या । अंद्रवग्रह्मवर्क्षकार्विक विकास के विता के विकास गडेन्ड्डिंडिंग्यी स्थामा श्रीष्ट्रिण्डिं की स्टिम्मा

नीमस्ववयस्य हे दवर स्थार्यी भेष्य वन्त्र करें। भवभगक्षी सरस्वराद्धारा मान्या कार्या मान्या के स्योद्यामभाषा में मार्थिय स्थापन स्यापन स्थापन स्य उमयर १२ ग्राम्य स्टालन में मिल्ड वेयग्रवक्रिकार्वेग्रवन्त्रमान्य । स्मानिकार्वे निर्मार्थे यगपमान्मभीगुरुद्धाराष्ट्रीय महास्वर्गाराष्ट्राप्यार बस्रेक्ट्राइप्टाइक्ट्रिया अप्रतिकार्य के विद्यानिक विद्य बर्यकारेने प्रयाना हर है ए हा उनवह नारा है है वर्मी भमुद्रमुद्र अमुद्रविष्य अस्त्र अन्य अस्त्र अस भड़ इंडिय भागक अम्बर्जा ने वर्जभाग कुम्बर्ध, नगरेवयनव्यवेर्णभमुद्र उस्तर्भ रहेरे उर्गेरेज ॰ रस्वण र उत्पाद्य एक अपने सम्राज्य CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मर्थियोग्डिमनेभवव्यक्तनमारिसेमर्थेडमें प्रेडिमें प्रेडिंग्ने प्रेड परमेहान्यामक्ष्या रेश्वास्य हार्या स्थान उग्रियम्रहान्यान्य विकास्त्र विकास विकास करिया वर्टनिन्देग्यरदेव उद्यान्य कार्यान्द्र विदिशी विद्यार में के कार कार के मार है। विद्यान के मार है। उर्वेट्ड्येट्ड्यिनेटेग्ड्य्येनेट्य्यम्म्स्रिक्यम् मगुर्दिश मिद्या हि मिद्या एउभा मवा मगुर्दि । स्रायक निर्मा के किल्या किल्या के किल्या किल्या के किल्या किल्य मेरामुगन्गानामानामानामानामानामान महाअध्यक्षेत्र वेस्वान्त्र वार्षेत्र वित्र होत्र होत्य होत्र होत्य होत्र होत्य होत्र होत्र होत्र होत्र होत्र होत्र होत्य श्रिधितर्वेद्रियोग्या ग्रिया विपर निपर सन्भारमदार्गें ब्रेथिम्डमी सर्वे बर्ग्सिमीरें ग्यरोपि

क्रायमम्बर्भिक्यादिः प्रस्वम्यमेन उपान्यपर्देश व्यामार्टेब्यायनेकाड्डेम्ग्डेग्राव्यामार्थार्थ्या भरमा कार्या है जिस्से के निर्देश वर्यस्मिरेण्यास्मिनिवायार्थिता वामवर्धि अवारेश्व्यावाण्यस्य उत्तर्भवाष्ट्रायात्र्य उग्रेम्स्यार्मित्र व्यात्रिक्षिया स्टार्म्य विषय प्रभाग्ने के त्या है से स्थाप के स्थाप भूतः उद्यागान्त्र तर्वे प्रविचयण्डे छ । ब्रुभागायण्य समाने गरेजयगणने वजस्यिक ग्योममीग्र भमसीमयदार्थिणग्रीमग्रीवर्गित्रदग्रिद्यायदावादा री निक्त का विविद्या का विविद् २११रिजमविष्ट्रभमेग्रहें स्वाद्वेरे अक्षे विष्ट्र महीवरेरेयोगरेंग्याकनोनेकार्यमार्थिया

द्यारिक्षान्यस्थित्वेनमुन्ड उर्वे वेभवीम। ११२ वाका क्रिये वे वे वे वे विक्रम क्षत्र महावा विकार था। विश्वासन्त अस्परी महाभाग ग्रास्ट्रीय त्रिश्वास्त्री उन्नमा अस्व वर्षे भी है। रि उभनकीका १णभषभष्यत्रस्कंद्वरा रे: गपनमयस्भागनम् प्राचन्डारीयने शिर्मा विवय वन्ते स्वर्भ या वस्ति शि २६॥नाभग्योभमय्यवज्ञाभग्यवयान्य उष्टिमें वर्गभवष्ये या वर्ग रे में भ्रायका। ककानाभगवीभेनायरगंध्य उपयायवक उप उक्तिग्रवाध्ययभारतेण्या दिन्। किवन् बभे मयर वेभग्रधकारी उन्हों में भारत वं वास्वने भेगेवपर में नाउ पेष्टे उंडर विभी उ

भगवंबद्यपंचतर्धमानाग्परोभष्यायवस व्याम्बर्यम्बर्गारः।।भवाउभाष्ठभूष्रभगरिय उन्नेन्द्र अस्तात्र अस्तात्र अस्तात्र मुद्धरामीयाष्ट्रा) ३०४९ जानगरास्त्रीहवे भग्रमेप ग्रेड बेड बेड विष्य यह र जी गरी प्रव र रे धीमरेग्रायायवोभेभ्यायव्स्यारेः॥भानाम् प्रवाधिक स्वाधिक स्वाध तवेतच्डियुर्गिर्गिश्रा ३१/रेजम्पव्युर मुद्रो नग्सन्य सी ये विश्व ये प्रमाय रहा यह राज त्रीरणनी त्रीत्रिक्ष रागी भागवेष या स्वत्र गीर । प्रित्वी उन्नाह्नपुरुष्ट्री स्थानी रहीतीसर्वववरेयीनरेण्य्उपरकारी भाडेत्रावस्नारि, भेगनीर गप्रेष्ट्रहरू

KG

रै:।। निरंग्य मार्थे परेग्ये कि मरेभागा १२० में ब्रिस्टिश्व विम्ने प्रतिप्रमान्य में विष्य में में प्रतिप्रमान्य में प्रतिप्रमान नुगर्भरेग्वेडिप्नग्रियेरावेमयरगेरिकत् भावष्य के मार्थकार्य स्थारे हे ने रेडि भाव धर्म ब्रह्में जिंगाने में रेगिया गामिना रिष्ये नकार्युडवेडे मय्रवेभ्वध्मे मेरे उसे मेयूरे य्यानिक ने कार्य मार्थिय के भारति के भा वरा प्रदेवजा स्वज भावे मध्यर रे वेभववं निस्मार जीउउउउप सिमराबे प्रभाव प्रमा प्रान्नवरिष्ठभगष्में बहुरे भारे किस्मार्ग उँडी। डिगर डिभ्रवष्में ब्रह्में म से पड भरेष बर्प वर्ग उउँग है व्यामी बहुत वी उउँ मी बहुवी यन्ष्रीय जिभव व्येउठेग भें बहें जी भें तजी जी

भेडरें । घर्म नक्षेया वर्ग वर्ग वर्ग निहा ध्रेभेयष एउर है भगष छा वी जैंग नजन ष एउ रेडिभग्वष्ठानगीउउगमीरगप्तजीगरा भेवण्डेयेगभगवेषवेरानभवेभडारस्ध् कर्यानगपरभे में रेगप्य प्यारे अन्तिन रियार्वस्थित्रस्थार्थित्राम् भागार्थित्राम् ष्ठप्रवैराम् छिम्। रेमवय्न प्रवास्थ रियाना भवावन या मिका भागे प्रस्वेतियाव । भभरत्य मिकभग्रे नव के मारे के जिल्ले र्गाबाननवर्गेरेधानियायम् निर्वाप् भवारे: जनमाने वेडवेड द्विपद्विपस्ट गारिपउदेवर्गीपउपविष्योगीतेगा ३४ प्रिज्ञ गयं बेनगिन मेरेजपरमिरगप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस्ये अवर्धिमिटो वियायाप्ति उवरे 272 रहितिरोग्यरवेभिक्षत्रेवित्रायस्भिरेष् नारियाभवभप्र उरेष्ष्ठकरारः" वार्यमान इरमा इर्ने म्या अपनिपा भे नम्ब्रद्रद्वप्रमुडीउम्मिप्। ३५॥ जञ्चलकार्य प्राप्त संस्थित से प्राप्त के भी रित्पुर्राष्ट्रभामे मध्य अवनगप्रवेडराध निरंद्विवर्गान्त्रभानेव मन्द्रवेदेवे निष्म् म् राइरमा इग्रीने पाने प्रेप में ने मानिय मिंगिरमणिडमें उग्येन स्थित नायम्भेनेग्य उन्हानेपाउप अन्य रमामुभेभेनवेउवमय्रदेमान्युवया रिमेप्तिप्राष्टि उभारभप्तिप्राव

ग्ध्यभिनरेष्ड ५ उन्दर्भ उन्दर्भ । भीववण्यादिसेवा भीना नजारिकवका भार्ट ठण्डण्य विवेद प्रीविज्या माम्भिरमङ्गेरकभीववश्मत्रद्वजी मारेग प्रमिर्धित जिल्ला है। नामा मइबेनारे मुबँने प्रयू र मुग्यू प्रमुप् रिप्राम्य प्रमानिक विश्वास्त्र के विश्वास के विश्वस क भग्ववी भेडी उस्ती उडी भाउर का ए मान इद्योगवेकिना रहेद वियम वन् वीभागगडरधार्यामागडरिंगामागडी उभ्यात्रियानी निग्निय्य छा भूतभगभूतभूता का का अधिन भारत

उत्यातकारहडोक्रा ३६१७भद् उदेवडाबेक १२२ अब्रंडिभेग्रिप्रेणप्रद्व्या भेष्रावर्ण वडावरेर्डान्ट्राम्याम्भूडीडज्ब्रा न्देः ज्यान् इन्दउपमध्रीपी भाष्टी भावत्रव ग्भयी शृज्यववाराष्ठ्रभयी वाष्टी उस्तः ३११ रेंधवग्पमुबरुवद्ग्रुरेवन्नीमीथ्रुरीवमं भर्यमध्येप्रमिष्ठेष्ठेष्ट्रम् प्रमिष्ठाणि डेल्प्डीडाल्यव्याभरस्यहरूत रः ग्रेजे व्यावाद्यवेदेवदेवोत्रीभग्रे भाव्यव वाद्बीवरेखां भरेख्वाउदाष्ट्रा ३< भनेष् न्वमवाद्यक्षाउजाग्यन्य प्राचीया उत्यव वृद्यवन है वी भूवयु उप्गृत्ये जा

उजेडिमवेग्स्ब्रे भेरेस्ब्रुपे में ब्येड्रिकेंग्रेस्वरे हा हो हो है जिस्से हैं कि है क । सन्जी निवर्व विवर्व विवर्य विवर्य विवर्व विवर्व विवर्य व बेग्धं वेद्या वित्र वित्र वित्र केर्या वित्र भीर्य म्वेडवंडेभ्य्वेडवेड्येड्येन्स्ववेयाचावह्र्य गमार्डकाउँ माञ्चनार्डकड्यो ग्रें ग्राच् वमवेश्नमदीअपेडावान्यभेवी श्नक मझ्छाउउँ अभिभी भाषे छाउँ छ। जारे राववाह्य अव्याद्यां मार्थियां म अक्षारः गरिभाग्वेबह्याय्याह्य है हा ग्रेबीकेरियपार वेशिव विवर्ध वेश 13र्गवेत्रवेत्रहेणनाह्य वर्णेण वेत्रवेद उद्योपरेग्राक्षभेगांग्याहेः ज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्षवाक्ष्यन्त्रीगर्याभाउत्मेष्ट्यारीजानगर्भ १२३ अधिम्याउवभन्नरम् इडिंडर वेभराव १ ४ ०) बर्ग हारा विश्वास विश्व उगेगरेयवी उन्तर्यकाने बन्नवेरियोभेट म्भावतेय अवस्थ अहमा विद्यु मुक्ते देः बरेनज्यस्भावध्वंडजरेभावध्याना १४१। व्हारा नियमिन नारहान उन्डेनिक्न स्वितिहर्णित भेन्। उन्हार प्रविष्वप्राप्त वर्गेउज्प जिल्ला असम्बद्धिया विष्ट्रिय यमग्रविभाष्यापेरी तरु ग्राह्मकाच र्ववन्भ्रह्मानेक्रानेवाउइर्थकावे वे

उष्टिनोउउउउप्रेक्षचध्रमञ्जूदेउष्टिनो ग्रहिन्यमे संहरतिनिभारिभार्किभवव्देश्वराज्याभिक्ष वध्नाहके प्रवाय उठिए विस्था सहक्र वार्ष मकीउवेभ्गवष्वीभूग्यीउद्ध्यम्बिम ग्यूरो त्रेभारम्भम्। श्विज्वी गांते श्विज्वत्रभ्रह्रहे म्हर्भ्यंवानगदिवापवापेहर्वेत्रदेश्या भार्यतंत्रका ४ २ ग्रेष्ट्रित्रवेष्वा ड जेव रिष्वविसहराभागेसह ज वर्षा मार्टिन विस् वमेरी । श्वादीनी ने स्वाद्या । व्याद्या । व् नेश्रम् निव्यान् उत्वेशिवश्री वर्षित्व में ग्रेव रीवेडेजे ग्राम्बिलेस्स् में में स्थानिस है जिसे में डी ज मध्यावभीमवीक्रिक्येक्रिडके चेक्रिय

niversity Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चैप्युत्रचीस्रावेच ववव्यक्षास्राचेवव्यक्षान हैस १२४ बभक्षम्भेउरे। समीववीसंभक्षेविसंस्क्री बेंचेवीबवीचेइ भावेत्र चारेनेचपेरारेगरे उर्ज । ४३। ग्रेटजंर्युक्ट्रस्ग वष्ठीव्यार्ग रेत्व नेर्गेण्यब्धिव्यभाग्रित्र उरेथ्सुड्रा रे: ग्ववीक्रतवा है भेनजंखाने भारति है विधान श्वें विष् भारे विरवें ने विष् श्रीं विश्व विष्य विश्व विश्य १४४) जिएं नाले घुरमे में त्रविश्वास्था यडे विख्यान वह्या ने निष्ठिंप भारी कि छै। ग्रमुग्वणिवा नेभाहे वर्णना हे जा मेरे ठलामहोडेडामेड्छलोड्डाक्रेग्रेग्डिशभाग ब्रामेगडिकारिको निष्युं प्रभी करि करिका में अ जी हिंच्या महिंच्या अवस्वी प्रापदी रूप महीना

अवस्थिक के लिए कि से मिन् मान सर्वे में प्रेष्ठ विषय स्थ ष्ट्रानकियेवनेसस्य त्र्या १ । जन्म स्वानित युवनदेभेत्र्यभगग्उरेब्रव्यभवग्रं उभेने यित्पर्रवगडरेत्र्य रैंगिरमाग्ड वेदवेदंसीनेटे । प्रतः गिर्मिश्व में ख्वार देन अभ दिल्दरबोमगुर्क वेजमज्यन् विद्यान सक्त व्यान ४५एडमिडवापरगढनपटमीन्छन्द्वाडिपान्। इतवर्गरेनिमरो।भाष्मारीभाग्रियेया नरेन्स्डिंग्रेरे पंभाननेमार्घवेरस्थान्। जानण्यवेपभग्ववर्ध राष्ट्रिक्त मार्थि अप्रमान्य अप्रमान्य मार्थि । वेयामात्रवष्ट्रयेग्नमेष्ठिवेयमित्रयेगिष्ठिवेभावह्रतिषी भगभग्यउद्ध्यवीनायवा देशकेभय्वनुभिष् दुग्जभष्टेकामधीयवीमभद्रग्रेमक्रभगमभद्रदेवकार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ग्रिज्ञान्गवास्त्रियेनावहार्वेत्रिक्रिक्वियान्यान्यान्य १२५ ध्याभे मेवरेर खी मेटी करुभाष्ट्रा राष्ट्र में भेरे भेरे खेंगे विज्ञानम्बायम् निथरिवये के बक्के विच्छे थाने विषेत्राम् वदान अरेव ने मुक्ते मुक्का मिव के म्रायुक्त वर्ण वेद्राके नपवण क्षर्यका विकान में निवस्त्र है बर बर्ग किया है के कि ३विष्टा ग्योप्याप्रियेदेव युग्तवीव विभागेरे स्मिरः वेष्टेडेल्ए विश्ववन्भवस्य न्या देवा विश्ववन्य विश्ववस्य विश्वयस्य विश्ववस्य विश्ववस्य विश्ववस्य विश्ववस्य विश्ववस्य विश्ववस्य रपाडबेनी रेडमिनेडी गडबेर्सी सामाराज्य विषय प्रमाध्यमिसायणाष्ट्रियस्प्रमुडायस्य प्रस्करम् र्रीबराभागवउण्डेलक्ष्ममुडबराभाग्याकावउछेर सर्ग मङ्ग्रिवन माउउ परमाग्वरेवमने संस्वस्रभा गडउँगि विक्रज्निरेट्स प्राय्य है विष्टिर ने डी बीरिय

बजमुडब उन्ध्रक्षववयर्यनिर विद्या मेंबरेटें क्षिरे ग्यूतः रहामाना मरोक्षी उपार बुग्डामाडाबेम्डबेभी डबेडामीयाविष्ठामा भर्गारिका भूमावीम्प्रेमिडिशारिबीयुडी उर्गाष्ट्रयोडिश हिर्मिड भवद्यवमें प्रमु निभेषविद्य वस्त्रभेरद्ध प्रभवास्त्र में भेनिए उउउउववारि उक्तारिक वि रुपि। हेर भिम्बल्य स्वित्र वेभवन ह्ट्या है 3-1303 भीभागभेन्द्रस्थ विषयं में इड एंड के वमर्द्ध ण्डवस्प्रम्भेषाडु ने बदन उपरामा वस्त्रप्र माउठेगिष्टित्रेयरहाक्नारेथा भावनिक्र करवार स्थायन रेंध्यद्मन्डेगडिरवेराभवण्डेणार्गिड्डाइयरी विड्डाड नम्पर३ भाषवयरो बांच उपर ५ ५ ५ ५ प्रमा भागा अवया अवस्था में प्रमा निया है भी

म्बलम्बयरा॰ भेरुष्ठिण्डब्रम्भी १ भम्बयम् माममा २६ मिलीनर विग्ने विग्ने देश प्रमिपण १५ छग्ने प्रमिपण १५ भ व्यानिम्भियपग्य १८ भिर्मित्रवेस्त्रवेस्त्रवेश्वर क्रियमित्र महाद्याने स्थान क्रिया के स्थान क्रिया महात्र महात्र क्रिया स्थान क्रिया महात्र क्रिया स्थान क्रिया महात्र क्रिया स्थान क्रिया महात्र क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया वर्णपर्यान्य निवास्य स्थान्य निवास्य न राज्यस्य हो में स्थानिक विक्रिक विक्रमण्डिक वित्री मिन्यार वेदान सम्भग्न वित्र व विगरिवेत्व व्यान्य उत्र विश्व रेथ् उउँ। तराभे मेरान्से भेस्ड रस्ते में महिन्दे यापने उत्तर रात्र स्टार स्टार स्टार से पराष्ट्र विनयन त्रजारिक्षेववीवसम्बद्धवमानेवायमे मार्गे उद्यानम्बद ब्रह्म ग्रेम उत्रव्य मर्गे हैं व वरिमेपरारि खनपोरिपमारमान् छाउँ ने मेखार्ग मेन्छ। ना

विक्रिक्रव्यव प्रमृह्दन्स्य वर्षे प्रिजनारिनम्मित्र बरनेबाजनबेबठेवकागादेदावेपरदावनचंडिंगभी बेट्यामहन्मड्न एडिक्याउठिकारमहारेट्यम् थागग्वीयम्द्रेयवगीमननेत्रभवग्रियन्त्रास्त्रित्रम्ब श्रेगारेषउद्यीपयेव्ययुष्यभव्याभव्याभ्याभव्या वेडी रिस्ट्र एटे ज्ने उमें जिम्मा विमान वामाना गीठी वाउवगडन्गी सन्ति हमें छम् के अम्मेठवी नेवी पश्चित्राधिकारोभेट हातवी हावर जैने प्रवेदका छ यः विजनैरैः। मुबसम्बद्धभावेद्वजीविद्वने कार्य 4४ ग्रिज्डिमिंगार्गेरहारवा ज्याउरकार्या भरद्यवाग्वरीभाद्धी वन्तराचेट्डवर्ग हिरेडवरा है उपयम्भेक्षाम्बर्ध्यायाम्भेष्ट्योगनेनेत्

ववनेस्त्रक्षेत्रभेडीववेभेक्षप्रववग्ठे।मद्यप्रमविष्ठेर्वने १२१ उरमारिवा खिना वहा पडडाडी मनवम जी भारे जा पड़ार्स्ट वेनार ने माड्येग उपिय पर स्डिम्स अप माड्ये भष्यि उण्डरेस्सह गारेश नज्जे दन्डे गर्छ रहेग बद्ग्रिशियधिक उत्रमार्थि। वस्रमानिवस्रक भाष्ट्रिया। नार्द्धरबेनडर्डन्बिश्रहेन्डिन्छिन्डिउउउम्बर्ड रबीसरवाभरमी सरवा निके कि गरियन उठीवन गिम् यः रेश्राण्यावये मर्भरतमेण्यापात्रमा म्नारा स्थित नवामीस्यवकाष्ट्रवर्गित्रमात्रायकाष्ट्रियानस्त्रोधि वामेग्रियेन उर बन होने यर राध्येन हैं गुड़िया है रही ग्यानियां विषयि । येवे विषयि । येवे विषयि । येवे यीथग्डमन्त्रवपन्तीरे प्रिनवग्वगास्यके प्रारे में विकरे

उस्मैबनवेट्ट्यिययाम्बर्वेडडव्डमानंबमेव मञ्डलकेनेकनेकडाडार्गडारा मार्स है कडपण्य वयकाभनेमें भिरुष्कर र रिजर्व निवाल रहा निवास्य स्मानुस बुक्य स्वत्वात्र स्थानित निर्माण्य अने अध्यानिमाय कि भाषा में के देव वा गिर्मा रस्थककराद्धीनगण्येययेत्रभवद्यवे धुन राज्या के जिल्ला के स्थान के किया है। जिल्ला के स्थान के लिए के ल पर निर्णास्वीर्निक्रणेर्डणेर्डिक्षित्रम्यव्ये पृत् वस्त्रज्या विश्व विद्यास्त्र वर्ग वर्ड छ मिन्छ वर्गा यम् ण उपराया विकास स्थानित । यान्याक्षरहाण्ड्यावकाभद्यक्ष्याच्या

वाहायमाग्रिका वाग्रिका विमेन सम्माग्रिक १२ प्राचलभाष्ट्रें विवेदात्रीरीभारवणभावेत्र बर्गरेष्वीस्नुरूपरवज्येभेरेष्रजी। अन् वे महतामं सावेमहोबन भेगीमाप्या भामतरवहामें जम्बीका भागतरमें उपभे तकवी स्विरेध्वरम्भक्तेरीयुग्वकि। गुष्टा हा हा हा हिल्या है निरम्भाय है। तलाल तही ते साम्यत्रपीयात्रश्मित्र 403 मिनसभामनबीन । 441 उख्रिश्चमङ्गद्यम् अवर्गे में हा च कछ्त क्षीनकप्रवादी जमीबी स्थार्थक्येन बुग्छी रेशिवश्र हाबी बक्र भर गर्भारे धुर्ने प्तवुग्धीकावियम् ग्रामक्नीविष्म

भाउवनमाम् छ । माने माने बहु म जी। कार नैकिमरेकिंग उमिरेगप्राप्राप्राप्ता रिगप्रेमिरिकारिया परिक्रमित्र का प्रवीतन्त कर्का विक्र वे प्रतः विक्रिश छने भवमा डिलमहर से भूब डिकर्ड पारि। भारपार्या स्वास्त्र विशेष ि।६।।भगानच् उच्चित्राक्री बर्वयाना एवं बराका ने उद्योगी परवान मुन्डिंग्भष्भप्रयप्रयेष्ट क्रिजिं नाग्यें प्रमाग्ध्येष्ट्रग्रेयह रागीडा उग्रवज्योजे उत्रहाभाष्याप्रविज्ञा ५१। नारंब अधिकाल व्यवक्षित्र राउर्वयरमाप्यप्यम् भारति रः। विज्वेजभाये निर्धीपीयप्रवन्गोरेक २२ भगिव्यत्वेभाद्याव्येष्ठाष्ट्र स्ट्रा उभेकः) ध्यार्यायम्याप्ताप्ताप्ताप्ताप्ता रक्री उप्तवमाउँ । प्रकार । एउवरी उवाप्य मडी मुग्डेय । उर्वाम्दरम् मार्थिए युद्ध मध्ये मध्ये प्रमुख्य प्र परभिवरः। प्राः वेमस्बी उद्गामी उक्ष मभी वराव केंद्र केंद्र या किस् वसे मरा मेंभे म्री अवस्थिए उरे रिक्ट में असे र रिव्चित्रकारवर्ष्यभाष्वकारमार्थ द्वीनव्याप्तिरुखार्थार्थ रूबाय अमे ममड्या था डेस डिमाम ते गरी द बीनर्दे गाउरे स्वरा देशान गंपरा

व्यवस्थित वर्ग वर्ग वर्ग माम वीम ॰ ग्राच्यानिम्भित्रप्रवास्त्रभादम् जय्दरकी भन्ने उड़ी जेगा में न गीड़ी उड़ राम्मान् । उडरायमानामा यात्र क्रम्य व्यवक्री गर्भन ज्वेद अपर यव वर्ष तरीमी वर्देकें। उग्यमिम् करकेभागिव उने मेर्डेड्बर्डेड्डीबीडेडिंग्रेम्बिकारीए भाष वष्ठप्रतिष्क्षक्षात्रीः।। येवमयत्रे या उउने जेमबेंद्रमान्या। ६३) नग्य मत्ररदेश्वभादेभे उत्सववाडी प्रवर्ग रित्रविष्ठपरायायमभाग्रव्याप्तव्य उडीयउउठेग्रम्म्रः उद्भाषां उठमेभर्त

भूषवेयाचिरीरेका मुध्यवहार्वेद्ध माभूव १३० भगदरभातेगाध्रणभाषम्यम् उत्रोग्भः य्उन्यम् वर्ष्य वर्गे उस्पि उसे भाग्य प्रमुप् प्रस्रेष्ठद्वारे । प्रम्य भ्रम्भ वन्त्र किंपु । वर्ग्यमका वर्ष्याभ्य स्पृत्रारिय देशां उपडिम्बर्ध्वरेशा ६५११ मानगिप्षा छेव उन्हाभूतप्रमारेबीवन काभावें जिसे उप्पेडिंगे डेंगे विभक्ष रेना रे में पड़ प्रविधारमाभेभक्ष रमबी वरमाम श्रीकेष उरेग्या उरवेदा हुने। वप भगप्रस रेडम्पर्येण्यपश्चिमानी। न्पर्प्यम् रक्षान्यभ्रत्य पश्चिवागी। बरिवारेवव रायपाराम्ब्रायनम् कारीयप्रेश्व

मृष्ठित्रभैत्र पर्वत्र स्वास्त्र । भूमित्र स्वित्र स्व प्राच्डिय मध्येडभग्रेय स्थाउम्बन् नागीन्यम्याम्यानि एक्टनिर्द्राप्रद्र् रिजनगर संग्रहाने सम्में उपरिवत्ते किंगु भाषामा । एउपकारकारः यवस्मा भाग उर्णयन जिस्ति । किर्मित्रभाय उपकराउदा उरक्षित्र तडारी।६१।। नगयावन्मभाष्ठिर्थ में ज्यारे घेबी संगित्र विश्व प्रस्ति । रेपाउगम्भागाउपमनगडिंग कर् विमानतरे वेबी माजता प्रवासी मान करे येविभाषावपरवस्क रिष्टा है दे। भगिवपरमे प्रावस पुरवस के ती प्रात्म

बीयुडाग्ठीपाभभे द्वारिंगिने भेजकबिक्रिये १३३ नीरिविष्विप्यिपावसभाष्ट्रा १४ गर्ने जैसे वीडिंग्से थे ब्रिज्मेप वर्ष ब्रिस् प्रतः विज्वी। मर्यम्याउगक्षे वाक्षानी उनिग्निष्टि है है । जिस्से कि कार्य है । ग्यार्थियार्थेयार्थियार्थियार्थियार्थिया ठिन जैसे ब में ही नगी स्पेन से पाने से सामाया सक्र उड्याहर बिस्यू क्रिक्ने गर्ने । विश्वम ग्रनणकारी बरेए उपिम् कार्डिंग उपार्थ में वे क्रजें।१६गविष्ठेन्नगर्उवपरनेपर्यः, वेभवव्वेश्वेमेम्बर्मकाट् उर्वेन्यक्री थेनिभक्षेउउद्यास्यम्भारधी बभ डी उंडिए। समिर्द्र डब पर बी बभ डी प्रेड

केरायमा) मुर्यरका त्रिया जिसे हा मार्थित र्रेडन्पेड्निम् उन्ते असुरानाभाग्ना डेन्ट्रिम् में बीगेडरेक रे भड़ी उसरी रेट्से रे रेट रापा उन्ययगर्गे प्रमार्थिय मार्थिय मार्थिय मार्थिय श्रिण्डी भेमें श्रियम्भिरवेबरे वेखबरे स्रमण्यिभेपसानी)११। द्वारिक्ष क्रमादियोगोभेमेबाउम्बाउसीजारोत्स नण्डेजं नेष्ठउरेधभण्येके । उज्जे बढ़ी रेष्रभणियोभेमेवियां अपंडीप्रदेश्य वेडिकी राज्यमं डीका भारते है। देविकेम भिर्वेत्रजे डेंगजबबियभाक्षणि भारत्यमहीभेनेगीभागस्का)१=॥री ज्यान्य विकास विकास विकास के प्राप्त के प्र

महिनिये जी बेह्झ पर भाष्ये वे उर्जा स्थेर द्यारि। वानरवेमहर्वनवाबेमी वैमवराष्ठा। वैक्षत्रेत्रविद्यमवैदीनेविपारिपाका)६८॥ 12 ज्योनेक्यपदी विषय वस्तु । विष्ये पालाय नम्मदेयस्य धार्मा वापाउनेवया खबरः । भेरमनप्रेरिभेर्गेर्भरप्रमा निग्भवपाउवेबब्ब्ब्यने भिर्वे के ने भारत उग्रेंग्स्रम्भियभी वार्षे परभी वार्ष उष्टिडण्यार्यसम्ग्रीयायार्थः ।गर्मार्थः रयक्षम् मण्डर्डवड्यं विश्वर्गानरम् नमन्बर्डिम बर्म प्राप्त मान्य परानिपररेग्वेष्ठ वागिरेगियामा वप्रिपविस् स्विरक्षा प्रमः।। जनिष्ठा

जेयम् मर्देरेष्ठिस्मुस्य मुक्ताप् उत्तराम् कोरी विश्वपनीस्बद्धा १२ ११ राम् उपरस्य वेष रमान्य में विकागिया स्थानिय भष्य हर्माउनगारेशाकरित्त रिपर मनवर बेंबा हु उभाव वा मिंभ छ दम भ उनगरमञ्चरीवर्णडमभग्वा) १२१। ५८:१) सहराष्ट्रिय हुउरे वर्ग करी भेगे परक मैनगारियमधीपश्चित नरेमिण्डरकार उनगा १३। निमारकन्यर विश्व डिम्ब मक्रिक्मिभेन्धस्क बैनियन्यक्री नेड अंयिक्टिंच विकेश में में में में में में में में उने क्रियपर तब भापी मर्यप्रेडिक बी छैं। भीग्भीवबीने उरिष्। सिष्टा ।। नाजपुरत

凤

य्नाउँ राज्याच वेडी मारीभाम रोभेने वरी रेवे काभवाव अस्परदेषहरूकारेः।निप रमिन विकारिय मिपर उपये अद्योभाषा न्याकार्य निवास में रिकार है वह वर्ष मभाम्यारा अवागरे ।।वानवमार ग्यारमेर्नेन सहाप्रीक्ष साउद्वितमान मस्विचिवित्रेक्षभवित्रक्षभाका।२०१९ जपराठवामें हैं इस्केश सेस मवनवष् रतेने किल राउप उपन्य अपन्य उत्रवभूतभी गीत डीव्रम्म गीउंडिंग भगपाउनेब्राम्ब्रोभेर्भेनभाषाबेपरभेन भाषाभेजिकारमाभे उद्येशीपरिवर्त

ये उउउउ भागभाषाय स्थान स्थान है। र्।। कियोनजनमामवडिक कंबरेसमी उपमान रम्मानमबीयर्जमायबीवीकारशायाका) द्धाउपव्रक्षभेत्रवद्यम् म् सर्वन्द्रवाभावेत्व वन्त्रवण्डम्बप्रिक्तिनिक्ति। दश्रिक्ति उम्प्रम्मराम्भिरीवरीयाव विपान राभ नीर चिरांडिभे नभामसाजिभे विउप वित्वन्त्र पार उडा उडाक हिन डिमे बिस साउर । ग्रिजमाभागताभ्यावद्यावस्य प्रवस्था मग्भगेडिनउष्टेनउष्टेनप्पासबीडिब्फे र्रापे। डानेडानेस्मतेबी बिब उर्वे डिजा याजिरेप्जेजे। भूभः गरः गरेरमभू सङ्ग्रिभा विजयबिक्र विभागना भागवाजनी वर्धानित

विक्षीत्रम्मतम्म। प्रिज्वीपह्रकी वैड १३४ देवनार के गुभवम्बी उकर ध्रष्ठक कारें।ग भीत्र माया वर्जिय परभीतर प्रायमाना शित्र निर्वारम्बर्धिया युग्त उन्बर्ध्या ्रिट्रान्यानीवयायस्त्रिपरमेवयायस गर्यम्मनिवागः) अवात्री।। वर्द्वेण्ये वर डिगेयि में डी ग्रहा डिया डिनो ने प्रमुखानव गाउदामार्भार्भद्रा १५। द्वामार्भारेख उन्मियप्यमवंगात्र्यभेनविद्या 4एएमारेष्ट्राक्षिक्षाचिभागेउनिभेने वयायस्वीभैवयावसीमेवीक्षाभामसारम्भे परकिरा रेडिडेडेडेडेडेडेडेडेडेरास्मीभपरेया ब्यवउद्यावकभीवश्रावदीभेगष्टे उपराभ

र पं उनेब्या वसेरे । बया वप्ते पर के उन प्रोपित या डेड्र गप्रयाय प्रवाय प्रमाणि के प्रमाणि क डिउरेपछद्वरारे : ग्रेनियायस्य यायस्त्री भेग्यायपोभराधाग्रेडरेयानग्रियो यह पुरुष्टारिक हाला कि स्थानिक हान्य वस्य उर्वे अस्मिनियाव से में में गर्वे उपनिशे रतमेमें वया स्त्रेय स्मिवया वर्गिमां सहित उडिक अष्टाजियेयेकार्ज्यार्जियार्मेमगडिया वग्रतामित्रप्रमेग वैतर्भग मह उमर्पिणम भापनेभेरेक। ८१।। जामाभापनी रेक्सिकेस वन्याग्रेक्षेक्रियाभीक्षेत्रमग्रीक्रि र्से विभग्नेग्रहिं असी भाग्या से भेव उसस्वेरेषा प्रकारिक रेशाप्र विषया से निर्देश

नेउउपम्भेग्भेग उउठा उपारेड रेवे हे से १३५ उसरेमीगा। र दाउउष्राउभिग्रेगियोभाग याय भीडी वर्षे में वर्ष में वर्ष स्वेत्री की स्थ योगमाप्उपकग्उभेमभाप्रिवाधिष्रमेम्रि विनेयोग्भवभूति प्रवास्था करिया। नग्रेजिये नगिर्धे अजप्रियम् मिपाउनगिरीयगंउमयेरियकारी।<६१) नजनी नष्रयग्री की भूगि प्रकारिभी भियात्रपार्थित्रम्भिप्वजासाभिन्यांन्यं यु उत्तर में बड्या पर वेड जा भी बेस में उदार छ रेड्जे। मेमभन्द्वेष्ठ्रष्ठमेरेधरेन्ग्रावेष्ठ **छत्रभेग्येड अप्रीक्रेस्नार्किया क्रिया क्रिया अप्राथ** उवमित्र भेष्ठेरव जारे दा ग्या वसी मेरिवेया

उब्में परिक्षे का ने भी विद्या विष्ठिए जि उत्ययार्थभयार्थित संस्थायार्थियार्थियार्थिया रेः।।म्रायेद्वप्रवास्यांम्यान्यविवाराम्यः। राउपग्रहारे विस्ताना नियं के विस्ताना है।। प्रवार्यमाभेभामपर्वे डिवान डिवीनेभाम प्राप्ते द्वञ्चनवीत्रम्यावप्रिप्राधितः उद्यादेन वनगरहामहुहागनगरहाधेर्डीभानगरे पिपियाये छि छ छ ही। बनव वे से दीपित प्रवेमभप्निप्रजीग्भवछग्रहिप्रनि र्।।निपरमिभवें उद्यमिस्येमस्यिद्योग उग्रास्थितम्द्रेष्वदेनम्बर्गिमाण) ११ नज्नप्रमेग्भवेडववेमभेडप्रभेडिकेडेकारी 3372 CC-0, Guruku Kangri University Heridura Calleria Signatura Signat

बरागिउँ । भवा। विगरी। छग्भम्भर्वे र्रम्डम्भाउप्रमानेख्या यारी यारीभापनी मी उमारेस अक्षावार देश में मेंबर देशाउपरेम उत्त्रायम् ग्रिटि हाया विभिन् उत्पादि । वयश्येवरगाभ्यः वनवप्रभारग्येवज्ञ पेग्डल्ड्यान्य मिर्वर म्बर्ग्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य पीक्षपेष्टिया उपस्के उरक्ष इरेग भएको सभक्षेड्याउम्बर्भ र, ग्रम्येपस् एंग्रेम्य वेग्रहर्डिंग्ना माम्याप्रीपरीवेलग्रहर्गि उर्वनवीवयावेनी सक्षाविया रेषा उर्गग्याः उठिज्या छिच्या छिच मडिन में नी या नी गर्भी गरिका) १३) १५० छ बचरापे भने छ भने छ छ

उपभागवउपमियद् मब्द्रमेसा का का की मे वर्तेष्ठमंबन्ननावया भागा वर्गाय गिष्टित्य कि विगिष्टित्य कि विग्रित्य कि विग्रित्य उस्नाउरेने स्मिन्यविधानि विकारीय उपाभवभवभवेषहरू है।।पुरक्षेवरभ मवाग्रेबछ्यानेबीनेब्रभ्रेक्ग भव्रभञ्चेवाने रेर्डीकान्यनिकार्धिकार्थितार्थित मग्री ग्रम्याचित्र वर्गा विजिन्ध मर्वेन ध्रामनपर्गामिं वैयवे वैस्त्रीया वर्गा उर मुज्मुश्रिप्यपिवर्गार्थार्थिय वर्षेत्र पन्य विन्य विष्य प्रवेश देवराम विवयं दें। प्राःगरः।।परक्रमहरूभायस्य प्रस्कार्यस्य Haracco. Gulukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

८६। द्रिजपरमेर्जपढान्मम्यन्त्वन्यन्यास् १३) त्रमञ्जाग्यसम्भनमभनमभनेवग्रमवन्तेवग भावभागडपग्यवर्धम्हरा रः।।भावभ रवी जारे मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्य मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार ध्डीवरी उनवर्दे ब्रह्म मपार्थी। जनगम् मेग्यग्रस्य प्रश्रेष्ठियेष्ठियपी विष्या भागवारे, राम नकम अमार मारे अहि अर्दे केम कर क्रिकी रूपवर्कर की प्रमें मुडमीर डेम्स गरिन राष्ट्री। रिन्। द्वारी कार्य के अपने मिनो ने क्ये के पीनिगरम्बिपीर्वरसारियरसेर्या प्रीक्रा जीवगी-का उबाउने बाग्यन वमान्य प्रवासन उक्ति। बिकार्याम् विष्ये विष्ये विष्ये विष्ये विष्ये विष्ये विष्ये विष्ये विषये विषय

धर्मनेन स्माप्य के प्राचित्र के विषय प्रेंडम्पाक्य। पार्वीर रेः। विविश्वास्व विदिगार्भनिक मिन्ना पार्निमार्छ डे सिक्रिया हिता है। इस्ति कार्य है। विक्रियान रेपी बरुर देपाधिव रिरो के भी वनवर्षि पीरमडीरजीराधकारिकार्थका अवलर्सा भारता रेसारिया कार्या है।।रि धीनजपारियाद्वीभ्टेंतरेषम्नाराभ्यम वियमिनेहनेभगवादियानारा १००) ना ग्रमाधविदेशहरीभटन जिम्माम्बरिक म् उत्तर धनाद्वियनायम्भगवद्याभगवन्त्र विष्ठित्रम यानसरेध्यानराग्या यानस्रिधेनमीप्ग्रास्ये जातता। याजनप्रमयस्य अभेडियर प्रावकरिय

वराष्ट्रिया मायरस्य वियाभगष्य स्था नीवरमायर १३१ ध्उमद्ररमाइउरधियमिकमे छैत्रभे उन्यभग्ववारी थेविड्यारवाने जैवजभग्मर विडेश भग्मर धरे उद्वितवाज्यविभी भव्द प्रवह्य जिसे बागि हिन्द्रेव राभभगषदं वयरे का विकानर की देपर एस रधभग्वविद्या में प्रति मिप्ति प्रति । स्वाप्ति । स्व व्यक्ति मिय्रदेधवेग्स र उमीपर एवसवीभ पहलाडेभीभागभगष्य थाउँ तराज्ये उद्मायर देवज्ञादाम्मवभग्वद्यस्यभाभप्रमाग्यव बक्रावधर ख्रभाग्ड इ प्रमुख्य है व स्वत्रभ्यम् धर्मियाप श्रेवेग्य र भूमेपश्रियं पर भनुद्धितं ३१ जिसमपृत्रि उत्थर भनिस भभ्भें उव १२ श्रिमंधभ्रें उव १३ मानक स्भित्रें 3

१४ मानस्था भारत्ये विद्याप्त । विद्यापत्र । विद्यापत्र । उराष्ट्रियार प्रवाम उप्रविष्य १६ विष्य अवस्था अवस्था उ २० दिवर्भितः मीर्विर रिपेटिव दिन रिपेटिव सि ववरें अवभय्य वर्ष्य राष्ट्र स्थाय के वर्षाय वे भवष्विभेषेन ग्राभवद्या ने भए ए वदा सारिये राग्डमने मामवद्यार थाना र शक्ता मानवर मिर्न उद्यम्बमुड्यु । द्वाच उठेया महाने साउद्या उभरुप् ० २ गरेज नवस्त्र मिला भाषी उद्याप कारित नुभेभन्य्याउवराद्येप्यूनर्व्वराउपात्रहाराष्ट्र वस्त्रामियुर्सिय प्रवाडिका प्राप्ति । विमाममीरममद्भेयविभाग्रिमणाउभगविभाग्रे भेबादी वर्धनामा इंस्टा हो बेमी में दमकरे TO SC-0 Gurukul Kangri University Haridway Allection Digitized by S2 Favration 1992 विन्देलेमहावर मप्राज्य विष्या विन्तामित्र टा निया भी विषय निया महत्य उत्तर देवी विषय मा रसमिय्यम्बमेमवम् रामा कार्मा विस्तित्व ने रिकेश्वर्या अन्य विश्वर्य विश्वर्य विश्वर्य विश्वर्य विश्वर्य विश्वर्य विश्वय्य विश्वयय विश्यय विश्वयय विश्यय विश्यय विश्यय विश्वयय विश्वयय विश्यय विश्यय विश्यय विश्यय विश्यय विश्यय विश्यय विश्यय उमेड्डियेन उपेपनमहुन्म विषये उपेमें पृपाप निये नियं उठे विष्यवस्था स्वस्थिने नियं स्वन्ये भवध्वें करीरेड जे में प्राप्ति देश देश देश देश के अ वग्रीणनी है। नियम्बिद्धानिस्मित्र विद्यानिस्मित्र भनिमा गुरुषेपम्झेरेस्थ उउनउपक्षरेण्या १० भारतामी र वस्ते पारते भारत से मारामण्डि । माभारे हो ने ने उद्यहण्डि सबे शुक्र बेमी मबरक्षा में उवर्वर धर्मिय क्रिमिमीयरे धर्धमारे ने न

ग्रामग्रहीयहै अद्मार्थियका निवस्त्र ग्रिकारी थ्यस्यात्रस्थानस्य विष्यात्रात्रस्थानस्य विष्यात्रात्रस्थानस्य जिन्ति वरेशका प्रमानिका स्थानिक वर्षे उडवाद्यां गिर्ध्याद्या रेश्वरेन स्थाया र नेतर्भ व्यम् सन्यान्य भाष्यम् । यहान्य सन्यान्य । गाष्ट्रमुड्य अपूर्वियस्थित्र । उद्योत्तर म्राग्डिके अथवडे वर्षे स्ट्रिम्मिला भवाडे वाडा - एउने नर्वानस्यप्रवृद्धचे बच्च विपानक कार्य नेयनियाभवपुरुविद्यास्थानिया वद्याद्याया उर्गियन प्राचित्र व्याप्त विश्व विश् न्यर्भन्य व्याप्त व्याप्त व्याप्त विश्व वि यामे भारत्य अस्ति । अस

वागमाने मियादुक्षये मित्रवन्यमामाने अ महर्ये महाम्याम्या स्थानिय स्थ यक्षाक्षिवरिक्तम्प्रिंसम्गान्मकानन् निमाम्बर्धित ब्रह्में व्यक्षणम्बर्धान्य मान्या १० द मर्रेगरी प्रवीभेसेष्ठित्ये भवष्टे वर्ग विभागे भवष्ट भवष्टे ग्निष्ट्रिय हरे हे स्टिक्स के निर्देश के बर्च के अपने में यदिड्यान्यक्रिये हिंग्यान्य सम्मार्थिय उत्तर केट्राफ्रिश्वरायाद्याच्या रहे विद्वर्वनिव्य बुक्त स्वाम्यामनीयडसस्य उपराधिया वयणगारिश महिजयणके जना वयुगका स्त्रामे हेक्ट्रिक्ट्रियमुम्बरीभूमबरीक्र अविकुन्छ।

विकारियोगरिक भारति है विकार कि रिवक्र इन्डिन्ट्र एड काशशामधरगाम्योनगामिकवेमधरगयोने अध्यान्द्र हेनीम्यान मुनाप्री मधी रवा द्वीपडा क्राम्यतर्गन्त्रम्यम्यायार्गे विस्तायाः ११२॥ रियमेरीयम्बर्भियमे मिर्द्र वर्ष्ट्र दिया हिला मीरिश्वियमध्यार्जिय स्वारियमिड्राजियो । वार्मिन हिंदियम् विभवापन्य स्थापन १३१५२ प्रयोग्या अभिनेत्र वर्णे । अविभिन्न गपरमध्यक्षात्राम्याम् CC-0. Gurukur Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जार्थमान्निक्यानिकार्यमान्यमान्यान्य र्थ देमनद्रमें विद्या विद्य परले भवहा के मते की निर्देश किया के निर्देश रित्रम्थता एउँ जिल्ला देश त्या रित्रम्य के नि जनरागायाः द्वाराम्यः द्वाराम्या हार्नियह वागचिनियह निया है भारत मान्य में प्राप्त का मान्य में प्राप्त मान्य मान्य में प्राप्त मान्य मान्य में प्राप्त मान्य मान्य मान्य मान्य में प्राप्त मान्य म निभावारिशारिकार्डिक स्थानिक स् क्रस्तिक निक्र मार्थिति । निक्र मार्थिति । निक्र मार्थिति । रेशियेनवानमंडभवध्वयारीस्यानस्य निर्मनो उद्याग्रीरेन्स्विष्ठन्यभारि । प्राणविष्टे प्रदेश वयवन्यव मंडमेवेडमवावेरीम्याववेडप्रयम्य

परवीवभडीचेडके । अवानमनजिम मेर्रिया । वार्ष क्रिक्रान्य कार्या मेरिया कार्या है स उत्वाहत्व शामना विमाद्र ग्राह्म र महार र में पार्डाक स्ट्रान्य प्रमाय प्रम प्रमाय रामियाकाष्ट्रकामायनियासमानाका ११६ ग्यामेने उर्वे करी बर्ज की पहन थाउँनेग्वेडामी बेम्बिग्वामम्बद्धा मरेने प्रवेउबवनेषा मनु प्रवासकानविष्ट हैं मबस्मे भग्छत्। सभ्डी ये उठे भागे ये उन्हारी वाजनी 42: रेश उम्डिस मेर्डिस अने MOSOSKS ISTRACTORON उठा भष्य में पार्थिक उन्निविधिक प्राप्ति ।

विस्माप्रेवपामिस्पाविदेषैप्राष्ट्रियं १४२ मामुश्रिरंपर किर्मिय्राष्ट्रियु प्रस्कतारे ह णबर्गबेने भडेंगे उद्येगुमा वार्षिपर वयमम्बद्यस्थित १९२१नणबद्यके रें वे पर प्रवादिषयुराष्ट्रिया ने में भेगा रक्ष उउँ ये या दू महोते भक्षा प्रमेश में बबस वर्ष उद्येश रेर्ड अब्याय स्टार डेम रामावमी मडेक्स छ कहा अपकार वारे रे रेक्ट्र भी रारे बीमा वर्ष्ट्रारिमाउग्रेडिसारिसेभ्रेग्रीस्ट्रिक ग्मिपम्छवार्यभगवस्त्रमग्रेदी।भोमेरेभवन्व॰ छिड़्प्प्रविनेमवर्मप्राध्याध्याप्रमाम् अपना याग्रवी उद्याव किमानवा । ब्रुडम्भे ब्रुबन्भनेवनभ

उर्येण्येचेवयमें क्षियुजन वर्ष्य यस पाउब एकु अन्तर विकास कर से वि उपस्य क्रियावम्य प्रमान्य प्रमान माध्यक्षप्रवामण्या वानधायवा भी वर्गे भेग्भववयग्राययययाप्तः विजनारिः ज्ञाय मह्यामद्भाष्ट्रवामद्भाष्ट्रवाष्ट्रवाम् द्वामत्त्रम् परेजमामाबिज्छ।१२३।। स्ट्रानेब्राने नेमहरूकियो रिमबर्स्य अस्पार्थ । भवाम् । अन्यवाकान्य ।

रास्ट्रेड्डरवर्गाभवभन्ति श्रुवत्रये भववन यभ्रवस्त्र उमनग्रस्टिवल्वर्भेकार्ग्यस्य १ वर् उन्यव श्रहण्यश्रम् अवन्य अपन क्रमार्डिकारिडिकार्डिकार् विद्याम् स्ट्रिक्स विकास्य क्षेत्र का निवास का न भवष्यवाडमान्यविष्ट च राउडउपर वर्षा वर्षा वर्षा है। उठे रामेर्डिं अन्यविष्यार्थि वस्ताभाइवव चार्चि। अष्वसारीके मिसा

उउउववाडियेन्यान्य मान्यानियार्थे। वि ने अगुगुड्य उत्रणक्रम्बस्य सही निव्या है विद्युगे पी वीभरामवरेडेबराव्ये वैरमधीमुखरीकेलेला क्षां भवरें उत्पाद ने विष्ये । १२१/१९७५१३ २० छ्येम्बउन्मे ने इ वर्डिभार्स विष्यरी गर सम्मान विश्वी भारत स्था भी में त्या में नेरी पडेन यदी महा प्रकार शामर महाराउ वशीमराम्येवेवेमामरामनाम्यक्षियामराम्य र्गिमा १२८ ष्ट्रीण दीमर जमर एवं वर्ण प्रतिमा ग्रह्म व्यवनेग्रेमा भेषेविक्त माम्येयभ्य श्रिष यहरूक देश नज्येभाववडें वर्व नेउणभ्येभाग्रि थाभ्यरिडवङाञ्चेयञ्जनने अडहेभ१३६१भाभे भर्तमत्रभाष्ट्रविवर्णसभित्रमवावर्षपर्माउठाय

हागरेश वे उद्ग्रमग्रम् वारम् विष्ठे राष्ट्रिमास्य हुन १४४ उभेगेरी यारविका उतिसासा १३० द्वारियोगित अठनाम नाउँ ने विद्यानिवयं उपाउपाउपाउनिय याने मेरेने बर्ग्स हो अवभिष्य भ्रम्पू उक्ट द्वारा 28 ग्रेस्टिंग्डिंग्या अस्ति अस यभग्ये उक्कामका उन्हें हुन गर ३१ ग्लोभ ते भी देभारभवा देपब छ्येन उपाप्त गारिश भेगभेगम् उम्रधामानमधामबनग्राष्ट्रीस जर्म सम्बन्धान न्यार्विपार्भरिया ३२गरिकापव्येश्वनाभी मार्था भपवर्य स्थिभग्रेस भवर्मने क्षित्र वर्वे विभीग्राजी वर्गे। उपबल्ने उद्वह ने स्क्रमें भरेर वेष्ठ्य उरिप उठेयान्य स्थित अस्ति । इत्ये अस्ति । इत्य र्मियममेर्ग्य मवस्योगभाष्यमाम्प्री उवस्तकारिः

नग्वेहिन्यमम्बीउग्मायत्याभावदाग्यमेनप्रविद्या ध्रमम्खरीबर्डमभग्या १३३ ख्रमेध्रीमाभारत्ये म्य नेधाउपवचवपद्रेणनेपवायुप्रवायवाया । योग्डिजिंडिभाक्टेचें उपहार में उत्ते द्वाद हरे ना उठे त्रसादनयव्यमेमः अव्यन्यतम् वर्गान्यन्यन बाग्रिशमध्यम्बन्धन्यभप्याच्याम्यार्थे राष्ट्रमित्रम्य क्रम्यम्बन्नि द्रम्या १३० द्रिण्या र्वन्य नेमवेष्ठ्रस्य क्रिस्टिक में ग्रायम शिर्धि मठुरीमुंद्रोयरामभागवण्डेबर्वे न्यामिन्द्रे प्रत रथायोगभवनामां भर्षे उक्सक्या दिः क्ष्मक वीमभागनविष्ठिण्यामेनवण्यवद्या जैमाभागन्य पृष्ठि उत्रेथमानमाभूषा।१३५)। सणमाभागनिय्या भेष्रतेथ्ववरेनमाभाग्यथ्वेउवाश्वाहिश्राभ

हागाउँ अभाग्रेयन्ने मुख्यावभाग्रमे उ। मुपारपार १४५ जिल्लाम्मानिङ्ग्रेक राष्ट्रियाम्बर्गि असामात्रनवे अवतत्रवश्रहान्नेउणक्नेष्टिमाउथ्य टमेर वेडवे भव्यत्वेडेंग्रेशिम्डभग्रा भार्या मत्वेवण्ये बर्मा । यह में कि प्रमान के कि प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के थाट नेउवरवण्डउरेभेमेवण्डउरमञ्जास्य रहे. ग्भास हो इति भी बाम कुमिभव उमे जैसि डा खरम्ब उ भतमेव्डी वे मेघकाभ उर ३१ गण्याचे बजामनुष गरिउभेण्डणेयणमायमाञ्चरम्बाभयभेध्वी अण्यमें वर्षे वर्षे वर्षे भारतिया के गम्बर्गभूत भेत्रमें में बर्जिया अध्याय यह सम्दूर्ज रहें। ग्वर्गेवग्रेन्यभ्वष्य व्यवस्त्रीयभेभी उग्रवय मन्ध्रवयेषव्यक्तिको उ१३८ मण्यक्ति CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रिगाने भग्यवी अग्रजा गुरुवी वेडी भ मेवडिप्रस्टेन क्रिमें भेरेप्रकारो मित्रे छित्रा ने प्रवच्या ने रत्न के राष्ट्र श्चित्रय विश्व विश्व श्वराष्ट्र विष्टित्रविचिविष्विच्यवत्रवीष्टिकतेभ्वष्व ग्रेश्नियं स्वाया व्याप्य क्रिया विष्ठित विष्रित विष्ठित विष्ठित विष्ठित विष्ठित विष्ठित विष्ठित विष्रित विष्रित विष्रित विष्रित विष्रित विष्ठित विष्ठित विष्रित विष्रित विष्र वर्डामारख्यार्थे वर्डियेट्डियेट्डियेट्डिये उम्मण्यम्याद्रम्

प्रिंग्ने अप्रिक्ष १४६ रम्बन्धियार्थिय स्थाप राष्ट्रियाक्नावयबेडनगर्वन्याम् एउन उपस्थान सम्बद्धार रगन्यायान्यायान्यायान्याया प्रसम्बडायबाहिशम्यउगप्रकः द्वां वार्गिक स्वप्तु एए प्रिक्त मिर्म के प्राप्त मिर्म त्रहराष्ट्रियामा<mark>वनस्र पञ्चावभावव</mark> उभ्ने वेथेहउण्य भागप्रेयण्यण्येडमा ग्डरकामिनाम् इन्स्वाडिमेन्द्रविव यामिनदीन जिन्द्रः हिणवे देश विजन्द्र अधने वास्या वक्षारा विस्तवन्त्रमस्मा ७५ मुरा जनगरिश्वशालियनवे अपर्गितिया

भेडमेबरेन व्याधानम् अवेपाने पुरुषे जरेका अवभाव किर्मा है। भाववी करत सबदेबरीभमक्ती इंग्लेडिंग हिंदी हैं कि स्वार्थ है कि स्वार्थ हैं कि योद्धर एक उसाव स्वास वर्ग सामा विष्ठ पर्व पर दूर्य राज्य अन्य स्थानिस्य स्यानिस्य स्थानिस्य विषेष्ट्रबक्तिना मार्का करिया विषय के में भ भमसीस्थवामङाश्रेष्ट्यवेभीशृह्य उपवाचेत्रे नेभवामडाधेन्यभेष्यभेष्य विष्यु विषयु विष्यु विषयु विष उग्में शिवास भगरे भमसीसभेग्डेरे रम्बन्धन्मगण्यं कार्यमानवष्टान्नन त्रका स्ववंद्र वणा चुरा खावना मक्यो क्षानेन्यान्य छ

्रिष्ट्र हेट्टान्य स्थापन्य स्थापन्य विष्ट्राच्या १४७ वेराभागानगढे कर विश्व कि विश्व श्चनवना ने का मुना का मानिया नार्वित्र में के का निष्ण मिला है प्राप्त हैं। वसपडिय उत्रवर्ति त्यवार्डिय वर्गा मुद्वस्था द इड देवडवा एड्डिड विकारिक में रक्षात्रवा प्रमाणका प विवयन्त्रियात्र विकारिक विवयन मेर्डबर्मभवयदाभाग्य द्वाउपडवी मिड्डाभा १४ ए ग्रिंग्य जे भ्राप्य मुख्य रमभूवमबाभववेड डे अञ्चलका निवा गमकायाण्डाप्रभावश्रात्य

स्मीरसी भरी भरेग्डे गरी में उथाय विश्व विष्य विश्व व नवडात्रियम्ब्य उपरा विमानवारभनगाँउ। १०४१ न्या १००० उग्भनगवायाधीमाश्रयम्भगवायभ एकरम्बन्ड ए हे व्यथनित्र कर बर्वार्यभगग्रह्माष्ट्ररण्यक्रमार्थे नग्रथभेरेण।भद्यायः नेउन् उत्रवदाभन्द्ववाधिम्हा प्रमार्थ ने वराया अवास्त्र वर्ष

यवानिम्हाने विष्ठित ग्रीयशाहरमाग्रवस्थाने मेवत भारेबद्यमम्मध्रव्यो।भष्ठेबडे द्धितारिश निणभवववयवनवाउ न्याद्यात्र वार्षेत्र ज्ञान्य विषय उत्तव देव उत्तर विषय विषय STREEDEN FOR STORE PERSONS TO र विष्ठ देश रियोग्डियमार विष्ठ देव वद्धाः अध्याप्य जिल्ला अस्ति । oalegeles.

मबनामके वरेंद्रस्वारिका १४८ वम्ब्रद्धान्य अवस्थान्य । न्तु उद्गार्थि । रहे व्यवस्थान वा विष्यु के विषय भाउत्या मार्यवमायवभेकेव नेष्ड्य उन्छा उन्हण से त्राम्य प्रण क्राया व्याप्ति विकास वि भक्तर्यहर्व सामर्था भम्म कुर स्व वश्रप्य एउ प्रवा PROBINAL.

र्ग्यम् दार्थित्र १ र ३०० ३ स्वर्ग्य प्रथा उर्देश विश्व विश्व ग्रिज्मिवायमें स्थानस्मा इववादी स्थाप्र भगरउगम्रयाभवप्रयुद्धवा उउग्जिसम्बारी भी गुग्य हुन वयस्थानमञ्जापवन्तायवरः रिश्व उद्यविक्या अवाहरी

नियमित्र विष्ठ में महत्वारी यह में भी भी भी प्राप्त के १ ५० व्यवने में भगिष्ठा प्रायत स्था ने मेराना व स्प्रीण व तन्त्रात्रविद्यात्र राष्ट्रियात्र राष्ट्रियात्र राष्ट्रियात्र राष्ट्रियात्र राष्ट्रियात्र राष्ट्रियात्र राष्ट्र रिंध ३१ नागति छाउव यह सर्वे उपी माभ्यउन र्राण्य उमेर कुने वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग में निर्वायम्भाषवी भेरत्रहास्भारहास्माध्वप्रका ग्वणवार् अवका हर अन्य गार अवस्था उबक्त की बिन्निबरे पेड एउटा रे में गाउगाभू० लिंग्ये हिण्यवण्ये आते उण्ये परेने नार्य क्षेत्रकार हा विश्व के विश्व क निपतः पत्रं सी पडरेका निर्मातमा वास्नी भेगेड विष्ठायमे विवयावम् विष्ठावम् विष्ठावम् विष्ठा उन्धनगरिको गरु एई पर ध्वारी विम्तर

अवाहि वावेगयावैक प्रेजवबेगवे भागानावे १५१ उत्तम् उर्वमवे उत्यापा १५२ मिराम् उत्र भेगेंद्र प्रिचे वे बिल्ड मेडी ने भण्डी क्षा स्वान्य क्षा रहे क र ने विष्य में स्वाप्त के स्वाप्त यम् । विद्यानिया । विद्यानिया । यागुननारका निवास्त्र विराजिया मेर्या द्रस्त्रस्त्र शिवामधारे उदेमधन देउद्देशभाष्टि अवन्य रहित्र के मार्थ हो जा के किया है। रेंडियेनडेभरेंचा समायामा मुनेभर हेल्टबार्यमम् व्यानिया के विष्युक्त विषयुक्त विष्युक्त विषयुक्त व भगवाकार्यवाड्वाण्यवाष्ट्र परक्षा विकास भायेगाभवेपना उर्धमेनुबड्व हिंबडोर्भ्यमुम्पर्ग

धवा । प्रतिक द्वा । भ्राप्तिक । स्टिभेमान्ने वेथा डेब्राका व्यापाव पर डोब्राक्त विकास र्मिराग्राम्याम् स्थान्य स्थान उउनडबी वी उमेगि विस्टिमेर कार सम्मिने वि मिनि है बिमे पर्यात उसे दियाने । भावत उसे हैं भ उष्टमेर प्राव्योगेर यहारीने १० कि महाप्रोमे ११ रिअगरिभेने ने निया कार्यना के विवाद करा की उथान्याप्यमेग्राम्यायाम्याप्यम् । श्रेगिवम्यापेबध्यमन्त्र मेनापेब्रन्डम् जिन्द्रीय स्थानिक स्था मान्याका । साम्याका । विक्रियाराग्वयो नियन्त्रवी नियन्त्रवी

चेत्रत्र वित्रिमेभेभवाष्ठिण्ये क्षाक्रमेभेभवाष्ठ वर क्रम्हान्त्र कार्या कार्या कार्या करें वमग्रिक इंद्रविभयाग्याग्रेड्मरविभाग्डभागा वेभाग्यार नडिमाम्ब्रावर नर्थामड्स्प्मनरम् उरामान्यव्यावर द्वावावयवस्य स्थाना श्रीरेप निर्वा विकार के विकार के विकार के विकार के विकार के विकार के कि विकार के वि प्याद्य नियमा निवन्ते ने हुए उत्तरिय के विकारिय में उत्तर मण्यान व्यान र राज्यों ने या वा व्यान मार्थ करी उठनमा अमरा कि कि के असमा क्रियं के अ विभावकारियोग्याम्याक्ष्यात्रियोग्या

मिन्नडर क्रियो से मेगाइमिन हुउ भिन्न भराव रहिता स्र ३ एडमारेना रूप उड्ड प्रान्त विवास राज्य स्था श्राम्य स्थानिक स्थानि राधानिश्विरियमभरेउनेभागभयवनर्याङ्गाना मर्ग वरेज्यू मवडाबडार्मा करवार्ग में प्रविद्या में कैल्डिल्य उर्ग निम्मिल विस्ति में मनार्थे वाम्यानने मेन वा विभाग्रेयका निया विकास हो। रिमविष्णाने सरमें स्थान सम्बन्धित करा विकार के व भेक्नारको ने। वयुविनामिय भक्तिका वेभेद वेठ उठेत्रेभ मुनिड वस्त्रिमे भेड्ड उण्डल मिडिस बर बियाना क्टेडिम्। भंडिम् क्रिक्रम्। अपने विस्पन्न विस्पन्न विस्पन्न विस्पन्न

उर्भिक्षवावस्त्रहरगरिंश्च माउवावस् ग्रिसे भेट्र वेसा व नेभाष्टिगम्हतम्बद्यागुवतभक्षवानेगाष्ट्रिग्राम्य बरिवेपिरेतेषुग्रभडवागभाष्टिहंवेबेषुवाधिवेवगम्बरवे विष्ठाभगववेड वेरी बनबीने । बेमर्ग्य म्या अवन्य म्या मुधरमें घट विंडु धरा वे में भक्ष बाग प्राप्त मा अध्या मा रिदेरें वेन्स उवार वें डेमब्र महीव परी विश्व में नियर व यः भूम्र भाष्वग्यारिग्रस्य तस्य भिष्या उत्रेमेष्ट्रभूष्य ग्रेजि के वार्ष महिन्द्र में महीन वर्त की माना मानी में ग य विभिक्षवयवारी विव्यवये भी में में मुक्त स्वापित के विश्व विष्ये नुस्रमेष्ठारिष्ठाष्ट्रभयेगभेभक्षेवावी मज्यस्यामेग्रास् तत्रविश्वा अत्रा वित्र में प्रेमिन भेडं ट्रंड यात्र या रही प्र

न्यराष्ट्रिअरभाषाम्बन्धायायायायायायायायायाया विषेवेयप्यय्यवण नेववेभक्षवागर्भे सम्मित्र रवीथार्डवेसेमें बुधन द्वराम्ही स्वीमें बडवेड वाद्यारी है भर्देव छप्रिया प्राणिमुक्य भारते काउँ मिन्द्री उत्रा री में में ख्या वित्र के में में अवा में नम बिया है की या हिने वनेष्ठरेउपनिवैर्वेषण्डियण्डिसंबेसंबरेउठे । उपेरीव ममेखारी से भेंडर च्डामे श्री ने मेंडा था ही उंभक्ष वा ववा ठेवेंच ? ग्रितग्रीक्षिउंपेमेह्हछ्डीड्स्ररूपमग्रीके निष्ठितहरू उम्बिमिक्न जे शेंडिक वर्षे ब्रह्म स्थान है । अस्ति में स्थान वर्षे स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान वाग्वग्गित्र यात्रीबैकुभउवनैचेउन्भेबैष्टिउकुभूवउपन्भेष्ठे नाडेष्ट्रातीबृथउब्रधीवमभेडेग्यड्वेउडेभव्यद्भनेत्रेभ अनेग्नरेथमेग्ने अन उव्येम बुध्यने बर्ड विमें बर्भे में

चारियोग्याने असेव खर्वे वर्जे छिन्दे उठे छी बाउ के असेवार १ ५ ४ वैक्रह्मराहै। मञ्चनभगववीरि इउप्रभडवयह घरेज। भक्रवाग्रामवर्धनेबारिम्भडप्रवेडारोभेमेवधडोवरभपभ बाञ्चाजीनोभूक्षवावेजिनुउभारीनेकाजिभाडेमञ्चल चवी विव्याभाषी यूथा येव अगरियुक्त अभवने वेडे भावे भिर्मिडीबाग्रन्थिगपुरः नार्रभेनेत्र्येगम्बर्भे - ध्ववववउउनेन्वमब्रिथवाग्रुथनमेमेनीर्वडबिर्भभ क्षवाग्या भेगमने छ प्रचार्वे के भक्ष विवये चिषे बार्वेडमञ्भारमेवडारिचेडण्यमबिष्मिम्मम् उपाउँ । प्रवारा । प्राप्त के क्वेमें भक्षवाग्राग्मवेष्ट्रियवार्गे उष्रिवारारियो निवरेम ਬਦਰਬਬਸੇਸਨਹੋਤੋ ਬਿਭਾਵਾਣੀ ਮੈਸਬਦਰ ਖਤੇ ਫ਼ੈੱਨਕਹਾ अनिवर्वे ब्यानिस्य के मान्य के निवर्ष के निवर्

रबद्धमार्वेरविसाउठेउभवव्ये व्यवस्थिते विस्ववभववे गुन्नेमेष्ठपग्रिये भीनगी बेसंह्या निर्मा भगवा बख ट्डबेन उवपिग्ने प्राम्ही वय दिवस्त्र विविधिया रिंग्निण्येट्स्भाग्यविने भउवण्येन भारी वार्वे भेरेन उम्प्ररोष्ट्रवेडीभगरेडेडेभक्षेवरात्न विकामस्विष्ट् पगामयरकेवर भग्नाकेवर भग्नामयर केवरक रारिशमियमञ्चरवेरेभडेन्भड्यान्यमाष्ट्रामञ्चरश्र सन्येवरेन्ष्यरभक्ते बिउगारि। रामण बेद्रसम्बर्गिने भडवरने प्रमायस्थे घरका द्रीने सम्बन्धे में सम्बन्धे वरामधरधरक्तारेको भागमानमान क्रिया वरा वरावस निमेनके थारिभेर्ग्यवप्रसम्बेउद्यीक्भउवकोष्टिन्त्रे रिक्वे ने के कि सम्मिया में माने मान्य मान्य हरे ने क्र त्रमग्रजीष्ठ वे निवच्छ रक्षेडी ने या प्रकार वित्र विषया

रें हार्बेवडभार्यामध्यसभवमस्य विक्रणारेइभीक्षेपघर १५५ बेभक्षवान्डिन्यान।३१भवश्रव्यक्रिक्रकारेशन्यम् वम्भववभीवेदीन्नेभीउ।थेटेकेमेनाग्रिथेमें खरूवडीविज्ञां न्या महत्यमनित्राम्ह्बरमेभीन्ग्रीभगवर्रे मेरिक्टे रेनेघर्वे की रेस्के परमहोत्र शहर हवा प्रमानगम्पे प्रतिरेस्वियों ৰপত্ৰমান্ত্ৰতা প্ৰশাহ বুদিতা ছিশ্ব বৰ্ণ ত ন থৈৱী নশছ তিছি द्वेत्रविष्टि मिक्रे सम्बन्धि विष्टि मिक्रे सम्बन्धि । भर्षेन मूख्यम्ब्रिवडी २ नजपरभेडे पर्छिन वर्ग्य भाव परिवर्ग मुडीगम्बेन्सवग उर्गभगैरीमिसेर यमुरोभगैरेठेष्रि भडारेष्ट वरीपरवेषुर्मेभववि अरेमेभ्रिग्मायाण्याया स्मिर्गेरेशमेवेभम्ब्यम्उर्वभनियंभयगपाञ्चेरम्बरे उठेयिवमाभाषापा। पाष्टिमेनपरवेडार्ने वाभेषेत्रव

मिर्मर्योग्मर्वेरमेश्रद्भेन्छी । वाश्वेर वी ने विकास । छत्रमध्यवण्यतिकामिथ्रीका विकेडनीक्वकासीर्भागिश मुग्नीत ५ भग्नी महभेकी नर्दे वेतरे कुछ गड़ी तरी की मि ग्डेरमेउनीरीर्भवेनभघत्वर्रिडिबरेटग्यूकाम्यर्धिक वर्वेष्ट्रहरीवोगेषप्रस्वेष्ट्रकेषेश्यक्षेत्रकार्यं वंश्वेवडीभेगेवमानुस्य प्रमुग्नेवस्य क्षा विकार विवि ਰਵੈਸੀਸਰਕਹੇਤੋਂਹੁਦਮਤਕਾਰਦੁਰਨਹੀਹੋਂ ਉਤਤੇ ਪਹਸਬਦਾਲੀ बारवें मेघरें छ इ या वेथे यथा यन गरी में में में बरें ग्रेंब मित्रम्प्रप्रिक्षिभिक्षी नर्वे ब्रह्मग्रही उनी विधिष्ठे वर्वविचभउववच्ववेचिगभसभत्भामस्यद्धरादिशमभउष्य ग्राभित्रवी आदेश्वामात्राम् उत्तरहरूनीय वी भारत्यापति रेवागाभरउन्दरक्षिमेमरनभवश्वष्ठरावानिवयो स १ विअन्सारण अनगभने बाबान वीभने व विद्यारमा

भरुचे ष्टेमें हो ना विद्याप्य परिष्ठु अया गरा विष्य भी प्र उवास्मिने विर्वे विक्रस्मिने भेषे विस्थित विक्रमिन गुभवी डेन-एरीडी नेउभभी डेडा प्रथडी गिर्के डेबार विमाधार ग्रुडोग्डियपदिनेभाष्ट्रीग्ग्यू मर्सभेनेसहरूबीयेगम् मभोबवी रिवडा वस्याम । उपेरि विदेव भरुभा मनुवमभ अधिरत्मे श्रीन्य म्ना विष्य । अधिरत्य विषय । अधिरत्य विषय । भउन्। तत्वावनगर्भाग्यभाग्यभी में बहु असी बाव विष्टी भी के 3 खन्यो डी संमेबासी विकाप मुक्र भाउउ भने भाउत्र गर्भ मम्बुद्धा । बिद् । हेवही रामभ उपबीय न में भी के मिर्म भव रहें। दैमें भरुभुमा बाम वेउवै। भविष्ठ आक्षकरा नवारिया त्रकाउष्टेब विद्याभनेव खन्न नी नभ उ खण्ड छोने छिने छिउ भाग्यवाष्ट्रिग्वीग्रन्थः भवीवगित्रदेशिषावण्यमिष्ठ्रः गाग्वी बग्वन्य भारी भद्रभूथ भारी सभारी प्रभारी वार्ष

.312

रिद्रविष्टिअगरिग्वाग्वीपभउग्रिधपातमी उद्यग्रिश्यो ग्नाया मेरी भरेव या मारा मेर प्रभादे उप दे हैं आ ग्डीवी अवसरक्षद्धारेश।अग्वस्य उन्नाप्य दिवेंबा रवरमञ्जेष्टा निष्णराभागुप्रमेखा था वत्यव्यविष्टि र भग्दमिरिउधरनान्यद्याग्यायाः उत्रविभाग्राम्य महित्रवानाक्य न्। विभावनान्वरी महत्र वर्गभयडेसकापाष्ट्रवरीमिन्भनवर्ग उष्ट्रिवर्गष्ट्र यासा १ ग्रायीवरी मयस ग्राय अवस्था अस्ति । म्रोगर्नेवर्गबीठेग्डासीवर्जे निर्द्रम्परकार उत्पत्र गरेकावयुर्वभीअभिमुग्डमाभरुस्मित्रयेरेकेमित्र उभेभक्रपष्टात्रेप्थउवेउके।भवनभवसहराहेश्थ मध्यपरभारेस्टेभवधम् अने क्षित्र उर्जनिम्ब्रम्

बउद्घडमुबद्यमिक ११ भग वह छन्त्र मेमन स्टिन १५१ भूगम्याग्राग्यान्य स्वाप्ता । अधियो उत्तर्भव १ मार्थिये उत्तर भव र नजा विद्यपात्र ने विकास विकास विभाव भी विश्व में अपने भी विश्व के भी विश् य्स्याष्ट्रिय हो। भारत नवष्ट्रवी भवष्ट्रवी भवष्ट्र नवष्ट्र मक्ट्रियाभा तभयभवेभयभवेभडिवभडवभडभेटा १२ गरिक मन्छवी म ग्यन्त्र मन्य मन्याभवभवभवभवेष्यस्य प्रमान्य । 'नज्यिद्यारेने परिवर्धिने में विपेतन माना प्रवाधिन ही हि थवद्रिव्यमी मुक्कायबे मुनागा दुर्गे उत्रवेष्ट्रियमी पेष्टि विष्या अस्ति । १३ में के किया में में किया में क ममलेबलहरू रेश्वेन्घर न्वेभवध्य एक विष् भववना सहस्र स्मार्थमको धर्म अमेष्ट्र ग्राम्य वर्गा व नणमञ्चरनेभनेबभगवन्गे छित्रवन्त्रवर्ते द्वाभञ्चरभ क्रमध्यानिमस्या अवविमस्बरिश विश्ववाणमी

भीगिष्ठायाम्बसम्यग्दिमामिद्रमेवामिद्रमेवामिद्राम्य विग्राध्यविन १ भाष्ट्रियाग्री म्याम्यान्य विग्राध्याम्य अवग्रमिरिष्टिये हार्गी के भाषा में इन्हिंच प्रकाद कारें भारिया रिइडामयरबीब भारा मिन्न भारा गारि इभार्मित्र उनामिपेमप्रभगवप्रवारिध्वभ्रास्त्रम् रभरुप्रम्थावयवाहिये। ब्रायायिया राभग्विभी भारिष्ठिर से बीवपन स्पाय कि दिन से योग्गियभवान्स्वपुरुवाभवेरग्राहुग्नीविट भर्मसम्बद्भभवन्थारभक्षामुक्षित्र विद्वारिक विद्वारिक रीभारिभयभी उद्धि । रिष्टे बरे रिस बरारिय के इस्ते उप्राधीमरस्य मङ्ग्यारिश्यीनी भीगानगण्यान सग्भगमग्भगमाग्रेगवेगवेगवग्वापंग्रापण्याह

गर्वाभागा।११। खडीमरखनमसर्वरथमा।भयती १५१ भारती वेग्री नाभक्षी निपत्र विधारी ता उतिबंदनी नेष्ठ रोज्यार उत्र रिव के के कि कि परियारी विषयि का भरी भेष्ट्रती।१८६।।उवदावर्षस्यमार्देश्येदवन्सवीम्डमे राम्यान्येरेक्। उत्रद्वरेवरभावणीवान्यमें मरमे द्रशश्चित्रविस्भवावस्त्राविषेगेन्देशा ग्राभवविवा र्शिवर्शनाम्य मान्य मान्य मान्य निर्मा कर्मा कर कर्मा कर कर कर्मा कर कर क्रा कर क्रा कर कर क्रा कर क्रा कर कर क्रा कर क्रा कर कर क्रा कर क ग्वमेपमर्पद्धि विमानेप्पमा । श्रद्धार निमन्ते रेगस्ट्रा गिर्द्यरगे ब्हार्थणगागभगविर रवयरेउउरेश र देवनेभागा २०। मामाई रखा। तर भामनेट मुध्रवेर्वेर्ग्यन्थ्य प्रमानगीने प्रमाण दे भेरी जिन्नेग्रासन्म र सेर्बिस्याम वेष्ट्रेस रेन्स् यम् मिराउनभागानियम् मार्थानियम्

अमुथरीपर्गतनीद्रमाठकार्यमार्गतिन किन्स्भ मरियभाउँ भाउँ व्या तमवे उभाउँ भरा नगड बे महर मर्मियवप्रगर्भ स्थान्य स्थान्य स्थान्य । स्थान्य स्थान ं रूपग्रस्थिते जैवनह्न नामा मिन्न की मिन्न को भी सरेषउराष्ट्रा १३ प्रस्थित हिस्सा १३ प्राप्त १४ प्राप्त १३ प्राप्त १३ प्राप्त १३ प्राप्त १४ प्राप्त १३ प्राप्त १३ प्राप्त १४ प्राप्त १४ प्राप्त १४ प्राप्त १३ प्राप्त १४ प्राप्त रंग्ने वेतरम् तेत्र विष्याभयभयना यहा वर्षे ने समान मुम्डमभारा २४ गण्या स्थापार शाहिक है न्या न गुरुग्यस्थर्थर्थर्थर्थर्थर्थर्थर्थः त्रपत्रपत्रपत्रथतम्त्रभक्षः २५। न्यष्ट्रयान् कृष्टि उगमियम्नाभमग्यभगगभगभगभगवायग्ये भारतिया स्वारेन्छ । स्वरं व अपनि व स्था चेत्रग्रानेग्ग्र मेग्नुडग्राग्न मान्य । उत्तर बङ्गेष्ठिष्ठभपनम्बग्नेग्रम्बम्बभार्डग्वम्

मनमङाङ्घिभाक्षक चैडिन स्थान है। १५६ विष्यामगडार्मितिरेद्यामुनाडा ३५ भवत्रद्धिरम ष्टा रेशास्त्रक त्रवन्ति जपन अवस्थित प्रशासिक विकार । प्रशासिक विकार । प्रशासिक विकार । प्रशासिक विकार । प्रशास ग्राग्याप्र अनेमने भक्षी मेखा उगर ध्या खर्मा भे मन्या में सार्य मन्या स्वाप्त का मार्थ में अपने के ले वेन्वप्रभमगोडिं। प्रश्नियम्बर्गेरिंगेरेने अनव्यापद्मनी ही गुप्तना यत्रना ध्वस्य प्रेमिक भेभे व्योग्ने क्रिक्ट मार्गिक वित्रभएन स्थापन यवेनेस्वमानगिष्ठोत्रारशहिन्स्येथ्रहेनेष्ट्रम्णन यारायाः विवस्त्रयान् वराययाः । नाययाः वास्यवराभव्ये राजवराधवर्ग्ये ग्रायम् वभूग्ठेपरात्र मरास्वर्ग्डेटा जिसे । ग्रायम् वडीने अधिरपाभनवीकि। सामस्यकि १ गर्डिआरिन

रीभेग्वरमभववयभवेत्रभवगानीयगायीत्रवनः र् उनमे बाह्य मा हा ने मुयम् या भ्रेट बादी गा दंउउर्र उवेगिष्ठमाष्ट्रभाष्ठ्रेयेभागी मुध्यरि कुँग्रमण्डितमण्डिबेभक्रभकुभवेग् इरबेभक्षा मीभीगिष्टिभगम्पगम्मयस्थ्येगेउमीउन्वयस् अतिक्रिरियार् अरे विषयमार् उनमानार् उ य र र र मिल्लिय स्थानिय स्थानि म्यमह्उनम्भिष्ठाक्ष्यम्भिष्ठान्य अविधि मामस्माम्येत्रवाद्यः । वाद्यः । विष्युक्षास्य मिर्भगर्गित्र वामुप्वविज्यन्त विकास्य विकास्य रिकाभार् कामा है जाता है। भारत के प्राचित के व्यवस्थिन्यः विष्ठाविष्ठाविष्ठा विष्ठा विष्ठ क्रावग्डानरीम)२१।अपनिभक्तउपद्यान्देशप्रीष्ठप

थेभेढवेचाभीवयभेवाभागभीवयुगायवभेवभे म्बिष्ठभाभा वदाभावगिष्ठे वस्त्राचिक्रम मियाविन तरेन्स् मेग्रियोग्डी वेपवस्त्र अवदेना देश्यावेपेभागेगवेडीह्नाडीमावेसनारे उज्येक्ष स्मित्र देव में इति विषेत्र के विषे महन्डिंगिया वेपडिन हरिन भी वार्षि रहा भी वार ग्मवेथमवाम्मद्भाववा उउद्रेववया राम्न प्रमुवम् ाम्रतेषुक्रभाग्यस्थाने तद्देन उभागितेषा ग्नुरेप्नडा संयोग्यम्यम्यागया गर्यस्थ्य भववय्यकाराजनमाराने सामान्या विकास रेवा द्वारा मारिश्वे विवाय ववविद्वविवविवा ३१ ग्रेडिम

विक्रिस्नारमे। प्रियम् विस्थित वा : आद्यान्य विष्ठे स्त्राहें कारेंश भवष्यमिन विस्भाव कि अप्राथम रसम्भाग्याभग्ना है उनाराम मान्य द्वाउप थ्या ३ रानणबेद्दा भवषां वे चार्व चार्य प्रमान वेनेप्राप्य स्टेंडिंग्रुमेडवा वस हुंड भी बहुंग्र उचिष्टिमेभग्य मार्थे वागान्त ग्राम्य विषय स्थापित । "मयर रेवियोगम् स्यास्य मया द्वारा । अवस्य रवेउठेग्रभगवा र त्यावव उवाववी मायर यसे में जननविष्ठे हें भने हिप्राचित्र निर्मा स्मिन ठेवमममास्मानुष्ये उउँ प्रशास्त्र भव धर्य राजे उठे। प्रवादिकार्ये विकार के वि

32.

उज्यानवक्तिवाग्वविषेक्षस्त्रातिने मार्थानिय १६१ ह्यउग्राष्ट्रभत्रब्ध्यते । सेष्रेभवउग्रा उने महने ने ब्रह्म मण्डिमें नाभ्याभाषा जात्रणस्य क्रम्य क्रम्य दमावनी ने उपमास्त्र वर्ष रखरा खार हु रहते पिय यारिभीयनवाडी-गारीभेग्येडेडेसे से र्रिडेड्ड्डिंगिमग्यार्ज्यार्थिमग्राचिमग्रा भारियागर राम्रोयागः भारतेभागः में दिपमें हपामाप खिरेहा दमिरोग्ड्य डिडेसर्फिरमा भीता रेडेशिभवधमारीयमामेल उर्दे अस्वमारिक भराष्ट्र उिप्रमिमारी प्रभाविमानवादी १६५ विषय प्रमारा देखाउँ रीम्वर्श्यास्माराज्य क्रिम्डिन्यर्थि

उदमा र प्रमियेन ने यथाना मिला यथ भावारता मर्ध्वितेमश्रम्बद्यवित्रेयः व्यानम् छिर्द् म्वेत्रेर् मिनविश्पष्टिश्वरम्भाग्न ३३ स्पान व्ये ३५ वराया ३५ मान्या ३० भूगाय ३६ महाना ३६ पावकिक सम्मेबरिक । पवनिवर्गिक श्वास्त्र सम्मे भीमा ४६ है उन्हें प्रमुख्य छह्मान ४१ भामना है है हमाग्री दे नाभ भव्यिष्मभ भव्य पर प्रजीव पर भी काउ पर के के विकास सी 44 मुभवर 4६ बुउभय 49 43 पे 4 समारा 4 ६ वृत्रे धर उरग्रार्थि अउरग्रार्थ्य हमाया १३ में विगरि मृद्य भवरिपमार्ये व क्यांस्क स्मेरिश रिपमेय वरिप भक्रमेर्दीनैनरामभक्षाष्ट्रियमाषाग्यस्यग्रम्बर्गिभाग उग्रिय्या ३३गन्न स्पिम्य विष्पा अवे मार्दिम वीनप्रवनमायाग्ययम्भेनेत्रमवनम्रिपमागन्स्

मध्यवान्छेष्ट्रेष्ठिपमेनास्त्रिप्रभारीसंप्रियम १६२ मामभागमगमगमगमिग्रेडमारियरिपालेखा क्वाछिवडार्वनि भरितिपारति भवर्गिति । परमानमानमानियाने कियाने के से स् परग्रधव विशेषव्या उपम्परेक्व दिनेहा वन्स भववनीभाग्छी भए हो। प्राध्या समाप्य समाप्र सम त्याम्भवनभग्रे वमा पन्न या मक्निर अभिनेका केंद्रीपग्नेबर ना भग्नेब नो छेड़ छिपमार छिपमेन दूप अर्यन्य हार्या अर्थन्य प्रयाप्य स्थाप हैपाए हैप भेर्बेष्ट्रस्वग्ठामामामामाम्यरम्बद्यात्रस् भव्ये विभागति भागे भागे वर्ग निर्मा प्रवासी प् रम्बर्गम्य है भाग में स्वायक भित्र वा वेडे में है भाग स्वीम गैरी मिन्द्र पर मार्थिय विकास के मार्थिय मार्थ

रेगीनेमेवजेग्गाग्वसम्बाग्वस्थाने स्थापी वरमेभरेपवरव्यक्षेत्रे उद्यवद्य म्यारे परमें प्रबर्भेट मापार्क्य हिमम्बर्ध राम्याप्रमायम्याप्रमायम्याय्यायायः भिर्मः ५ म् उभमभमभग्रममीभगरिपर्छ पमावदारको थावण्ये मेरी भगाष्ट्र त्या मागाय का गाव का विद्या भमभकारिपरमबद्यकाग्वन्दिभाष्ट्रिक्षिण उष्टेप्रभारतिप्रभारतिभक्षा उउ । हेन् हिप्रभानि ठीउछन्यममभाष्ट्रयम्दग्यन्ते ने प्रनाष्ट्रिक भूयभू वर्ष रे रे रे रे रे रे रे ने स्टार्ट में बे मी सम्बे रगीनम्बर्ध्यम् भवनस्वयन्त्रम् *इब्रुडियाडे है* पमानामामामा स्थित वर्ग हा स्था

विष्णित्रकारियोग्तकारियमेसविरियमक्षेत्रान्द्रममप् १५ र्यपरभव्यवयेने ए जिस्मापारम्पारम्भे गरीष्म र्वाया विकास विकास के विकास के विकास के अपने किया में उन्हों उन्हों के विकास के अपने किया में उन्हों उन्हों के विकास के अपने किया में उन्हों उन्हों के विकास के अपने किया में उन्हों किया में उन्हों के अपने किया में उन्हों के अपने किया में उन्हों किया में उन किया में उन किया में अपने अपने किया में अपने किया में अपने अपने किया में अ में भार्वे उमी अवस्वतभार्वे उनी क्षा कि उसका मी स्थायतम्ब्रवयसभाग्रेडनीसम्प्रवस्थिमा ३४ भाग्रे उद्यम्भामवार्वस्त्रिम्मिम्भामवाम्भ्यवरहुत बर्पियमानवादिर्गम्भवव इभाव्यम्भानमान मित्रविक्व भगवेउ द्विस्मान्यवाद्य नास्त्रवित्र भमीक व्यवस्थानम् । स्थानम् । स् सवार्वद्रभूष)भीनेमाउनापारम्यर भवर्षिपभारे उप्रामेश्वरामाउक्मवरिपमां रिरेश्वरावेप भागेनार्रिइमिस्प्रभागेम्यार्डिंगीभेठ्यवर्पभा भेभववरभक्षप्रिकृष्टिअगरिष्टिष्ठिपभाष्ट्रिक्षे

*CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्यायनमाउँ क्षेपमार्ग बद्धमे रियाउम्ब अन्त्र नरिवडिपमान्तर वर्गे उथ्विप्मः यके ग्राया विकास मिन किया मिन भाभमुक्र उपसारिद्ध मतिव्साउजा भी नज्यः मेबरेती उउपवनवीपपरमा उत्तेव उरात्रेरभे तिष्पामन्यके। तर्गे विपास वर्गे मिप जी अध्वामध्वया सर्वे । चित्रा रेड रेमव्या स्त मेभदम्बिपमदेन ज्ञान्ज्ञेण का २५ वि । भर रिम्मिट वर्गिर देशार अग्राहर जमारित मभउ १३ मां ३१४ मर जिम् यथ किन उपार्ध उनवराष्ट्रिययर क्रिस्मर्थियार भारत्र विभ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation UŚA

कारवयर भग्नयय प्राप्तिय विषिक्ष विषक्ष १ ५ ४ हिमाप्यरध्यप्रायः २१ भीगोत्र ३१८ छरा। उत्तर भारिकाव ३० भारताय ३१ ग्रेंड अगरिम्ब विष्यारित्रभागरेय व्यवसार्गे उन्निप्रायप व्यवन्त्र ने ने जिस्मार्या भग्ने पर है पर पमार परम्पा हा हा ते रे । ग्राय भागी पमा कन्निक महिन्दिन स्मारिक मिल्या मिल्या रेड्डियनमान्या ३५१५वर्थः । मञ्जून नेभादी जिल्दा का है। या हा या है। या है। म्यान प्रायम् वित्रायात्र नियम् ध्रिपास्य वास्त्र वास्

भूजी भारति । प्रायमित्र । भारति । रेः। रबद्वानिनिस्या विषया विषया भविष्।।३१।। निर्णियमारी-।उविकाप वीनाग्माग्यवावाजनिविपतन्त्रभादत्राम्। कता विपानकारण विषय । नियन युवनन प्रशास्त्र विषय विषय निर्मा दिन्त त्रगाम्या दिया जीवा उत्तर राज्या भाग देवा भागमान विष्या मारा भारत्या अप मेंगरम्भाना के जियम का स्मान प्रवास निष्यां भार डिजनियमे नप्या रहीन वीउनिमादेजा नेमिन्द्रम्थ्याप्त अव्याप व्यव अभागिनाय नाउँ ने वैद्या मिन्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विनामा किनामा अपना केंद्रारिया पत्रामिक १५५ मेह्रसार्मावय्यामेमीमवउम्गीउउउप उभवभाषायाव वर्गमा अपने स्पर्म त्रभारताम्हापउपमा) भारत्यता मुख्यका पित्र प्रमान पात्र स्वायवम् सप्य ३ स्व उत्वी प्रमिस् कृपउठ विप्रमान्त्रक्ष प्रभावन प्रमान के प्रमान के जान के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्र मुडियम नियं हाय हाय दे या स्टाय हाय हाय ममाययारः। हर्यसम्बानमा निष्ठा 33वन्। मिन्य अर्गान्य न्य रेश्वर्भाप्न महन्। १९ गायुर-विप्नारम् परविष्नारम् वराउपमान मामार कार्यन मिन्न यहापडा प्रमान्य प्रमान्य देशा विश्व व

329

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मण्डिव नग्रेडकार्ड मब्यहाब्द के मा सम्मा धर्मर्भरवे श्रेन्य यम्य ग्राम्य विका मम्रिपार्यम्बर्धियानेयो विस्र उपकारतीयाडेपक्म श्रुपडाग्यास्वपा भस्रथउग्भसगारेशभाउतउभाउतवभाउनउ भनगुमिथिविभकावस्त्रिय्निचेटमुन्यस्त्री विवयनग्रम्मकाक ४० मिराप्तम्मका मियभागियोगमभ बाखवादे उप वभनगी पाउँ घारवयवभक्षयङ्गा कर् निम्भ मक्नारत्यव्यववय्यवन्नेनचेष्टिचे इ ग्रम् वभेयग्रेनियभेयवण्यक्षेष्ट्रियभ्यत्वि थेठे। अवाभुधर्वरयोभे अववयवने भुधर्व 200 BIBA GONE LATHUR DIGITIZED BY SE FOUND IN THE STATE OF THE STATE O

वर्गिहें है पाने पार रें ने वें पान है से मान है । प याजने चेंद्र माद्रमा चैनका भुषा बा एवने पाछ जिएमियामेर् अधिकार्वे विकार करा मिरावी प गुडाबव्छा भारति है उसे मिनुध कर सुभ उठेर्नुष्ठहेब मेन्नग् मेरीयभानगिरी । यारविष भेथकुभउसमान्द्रशामाग्रसमाम्बेनकाराग्ध पीर्डिप्रमापस्था। वजवज्दिनद्वानदी भूकी भन्न यह ना वर । दे जा मार माने हैं। भा रुडिनस्तराप्रभागा मास्यवन् ध्रीप्रभागा पे। नाग्नेपेन उठेपाउँ याजविप्रोक्ष स्पु तत्र विपमात्रबीवहष्टा उम्मच्पवगंडिमसेवर्डि बस्तर्जेष्ट , डिवग्रयार मसबडिम्डिप भागभ्यसम्बद्धम्यानेमाध्नमध्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्वद्रग्रेट से प्रमान का रे द्रार भी वर्ष मन यथेस्र व्याजितमानिक में भी निवास के वास की विष भागसभागभागमभागवारः।।विवक्तनीया त्रीभपग्रम्भ मनप्राक्षा जारूग्येभ क्रिकेरनेर नमाङा) ४२। १९ जिस्ता वास्त्र विष्ठ अधिपमेभमी या व्यापन पा व्यापन पा व्यापन प्रातिविधभागता विवसवीयात विभागवाउ० र्श्वास्त्र प्राप्त क्षेत्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स यस्याने वर्रिपमानवेत्रेनेनजी विद्यानग्रिया बी अधीरेबङ्गबभी बहुत गीभे यह तत्र गीभे मीनगरी। नेवर्जनीस उर्जभपवर्जने बब्दार्भ भूपवडाने ष्टीष्टाती भेभूपवडा उराभप्रवडा C-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यविद्यागात्वा कर्वा याती विव्यक्त तरी में १५ नेते दुरुदे विकास की स्वाबे ने दुवे निवास विकास है। युष्टार्स्त विकास मार्ग कर्ति विकास में विकास में प्राप्त करें त्वर्ग विश्वत्वस्थाय दिन्नेवर्ग्य उम्मे विण्ड्या र्तामपुरुष्ट्र अस्ति म्यारीम्यारीम् व्यासपुरामभुग्वीयामी भपराद्या वेद्या श्यामी पार्व भी में में में में पार्व विवास में ब्राइन करें व्यवकार्या मान्या विषय मान्या विषय के ए यह ख्या विषय के उन मा मिना निर् प्रियाद्वे वास्त्रविविधिक स्था ने श्राम्बको इतियाने अर्थना बोको इतियान जन्म भ उपयम्प्रजामान्यम्बर्गान्यम्बर्गान्यस्थ वयमप्रसारा देशक विषय स्थाने वर्ष

गणियाजरसमाम उद्योगप्रविष्ठ व्यवमास्य । वर । डिएववें रिप प्रमान् । वर । उमास्य प्रमुक्ते विवस्त्र वेस प्रमुक्ति प्रमुक्त त्रवीभाडेब्रायबर्धिभाग खुभडा प्राथिभाग तत्राख्यस्य वह का बहु के रिश्वा मेरी व्यवण्यविक्वाकाका महरत्व मन्याप्या वबस्य देतमुकाष्ट्र। ४५।। तय्वावे क द्याने भ्गित्रवस्ते ये प्रतिभागति स्राप्ति स्राप्ति प्रानुत्रम्योधाडेप्रभिष्य प्राप्त प्राप्त विभागाडी । गुम्यभवने तर्रभाग्रहापडेपभावतभ्रयपने उपाउभाग्वेरवरे नम् विपानिस्साप्य ? पवभविपभेसङ्घ्यञ विपभन्नविपभेसङ्घ्य 373 CC o. Cyrukur-Kang i Urnversity Haridwar Collection. Digitized by \$3 Foundation USA

वयं नवण विश्व मान्य प्रधारियमे ध्रवक्रभवियं १५० भवष्डियमयी मरेज मेरेज मेरेज मियमप्य थे स्य अध्या अधिक स्वर्धा अस्य विकास स्वर्ध छपमार्थका स्टार्थ । ग्रियं विपमायगुउ नविरीने हबरिमनाकाभाषामी हैपभामवे भारतेत्रमान्यस्य) ४५% सम्द्रा । व्यत्रास र्राष्ट्रकार्य परिवारिया विद्या हिला भीता है।

त्रत्वधनगिराध्य यगुडेत्वीष्ठिपभारीती भाष्ठमन्त्रपभाष्टक्र देः नियुग्यष्ठिपमे भाष्ठिउग्वेष्ठिपभाराग्येउनाउभेमेनण गमतपभामेनात्र) उद्याप्यक्रपण्डाष्ठिपभे भाषाक्षभागाह्य विप्रभारायेउनक्षेत्रींग

भिवाभी समें श्रेनश्राक्षत वेसेता छ ११ रेडिजें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रमनेपान अवामकभी के हैं। रिंड मिया के उद्गडीग्डाम्स्राम्स्राम्स्रीया रामग्रीम्ये विष्ये से सका हा। वर्षा राज्य उवक्रितिमस्मिक्तिविप्रभागविष्या सर्विपमसम्बानविपमाकश्रमानवन्त्रभाष् 4ऋगाउडउमडबीगैउसकी भार्यस्वा एक जेरा (३)। रबएकी मेडियमा सरियमा व्यस्य गडिंग्यापारस्य विचित्र रीउघरकी भेग भनम् संबंध सहसार विपमगविनाडियेनाजिभापक बिनमाक व्या भक्रमा उर्रिय ने उम्बंद म् मक्षा । भण्। ना० उपमेस्विम् उपमान्य मान्यम् निर्मात्र

मुख्यम्परीयम् ध्यम्भारम् अत्राह्यचे ६५६ मेंग्यभागम्यस्य मजीक्षेरेडें। के वा दावे छैप मयबिमा वेडाका मना विते जेना बहुने डका प्रेम भागबंदिन वीभिक्षेत्र प्रवादि विभाग दीनभाडेण अधावकारित में प्रदेश छिम् देम रउ। भग्ने प्रसामित्र का का वा कि भारति । जे सम्यामन्त्रेमान मनस्यितिस्कानन र्गित्रविषये दुर्भग्राक्षमा सामा प्रमान्य विना क्रियान महामाने सब्दि उने मियमारी विभागित कार्याच्या विस्त्री कार्या विस्त्री 42गतीव मनवाम कापांत्रेय नत्ररेयां यर भागेवदेवहमार्भवदेव है वैनवीउय्यम् रिडजीरी ਉਪभारी ही से में मी कि कर बड़ि मी

मनीमीक्षाउसीनीबेर्ग काउसीनी श्री राष्ट्र नेनी दिस्यान जिल्ला का का किया है। मेरियमणेष्ट्रिक म्हियमणेष्ट्रियमणेष् देथरावद्यविद्यभिष्टेद्वविद्यभक्षविद्यभक्ष अरवेस उठी। भारतिया विभारतिया करिय रिक्षिमरिनियन यग्याय यथ्य यहा निर्मा जिंबरीसे प्रियमिय मान्य केव व नुस्त्र पन माण्डियमेपर्विष्यमाष्ट्रियमार्विष्यमार्यवी रियमरियमेयवरीत्रेत्रियमेरियमप्याच्या भयवम्पर्वेषमञ्चाद्वेषण्यम् साम्बन्ध्य भार्यि उद्ययम्पर्व स्थाने इस्माने भीतन भेडितमार किरामिन किर्देश का विश्व किरामिक किर

व्यामन्त्राह्मभागव्याद्वात्राम्बन्नाम्यः १६० विभेग्नामर्थि भाउडा विभेग्ना वर्षिया य उपनित्र विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त विष्य स्त्र विश्वा **गण्नेव्यम्** वर्ष्टिसम्बर्गितस्य सम्बर् नड बन्धराग्या दाया वास्त्र महाभाष यगुडानामायायगुडानायवामाया विकार अधिकार सम्बन्धिया स्वापिक ववनस्त्रयाद्वन्तवी ट्रमिर्जिति सर्वार्थ विषारी प्रभाग या विषय

335

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उमेमेनिवी महार्थ उठववने मत्यन महार यवमें डिर्मिन हिंदी हैं किया विवर्ग उर्ज हैं उनेह्न का प्रमाद्द्य भाउव जा मान्य उणभस्मेभेने इस्मेर्चन्य मेर दसवीती मुख्यक्र केर घर हो भी में ने इंबेन वह जिस्कार में हिछियेद्ध उठा छत्र हिन्मे भक्त महा पर मठी उठी भम्नान्यरउण्योग्डेयेनम्बायुरेन्य युवीवर थमाबार्गि जो में में बच्ने ब ख्वा माउपमर द्भउघरं भदेश वेब उउ भ उपमान के मिरि र एम्याये रिपे उन्हार र एस या में जिस रियोग्यपम्यय भम्परवन्निम्बाव CC-0. Guruki Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मर्वायाम्बर्ग्य मेरी पारे भेवा १७२ क्षित्र अवस्त्रीयमेर्भववार्मेडा जेरिया अमिमताने स्थित मेरिउने मिर्ग बुद्बा बा उद्यम्भेर्ने छुद्दा वि उद्यम्भेर्भे वरे विषिड्रहरेत्र से प्रमुम्ब उर्ग । परेने भारति । उत्रम्भिनेववीधात्रभग्ध्यवनमीधमेर्द्रम् उवीन्द्रस्वाती लिंडउपेडवभग्वमार्थभ उधिवयवा मिर्डिन्टाईपा हार्डिन उद्यादिक उद्यादिक देखा उत्यादिक विश्व मिल्याबी मिष्ठा अपने का मिष्टर वि न्याय्यवस्त्रववायवन्त्रवायम्भ्यप्रथा क्षाबा क्षिट्यमम्बम्बप्य अवस्थानम्ब

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by \$3 Foundation USA

मस्येक्षस्य ।उठ्याय उद्याय उद्याय मान्त्रि पमिन्नीयसको निक्रमोन्दि स्वित्व भेरेट्ट्मणन मिन्ना अपमारिस्ट स्मित माउँ र त्रभी प्रश्रम् डोने मंस्य में में महारा में से देव द भी मारी म्रियम्बर्गित्र महीमिन्द्रियम् । अस्ति उमेहास्य माना माने होने हे विद्यान विद्यान विद्यान विद्यान वित्र अन्तर्भागायद्वा अन्य विश्व विष्य विश्व विष राप्तावेठठक्री।भारत्वाक्ष्णवाक्षीत्रक्षित्रवाउत्तरी ठउउत्रग्रहिं विकार निया प्रिया विकास करिए । उग्रस्वववयोग्यान्वववग्राम्यान्यान्याः HOSAPECAGE University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छ छ छ नामा छ छ भ द छ बी में छ हर वी में मद वि १ २ हाडिउपेडा क्षाया है। ग्राम्स्य द्वारी के कि रडेड्गा भारत्वयगरवी पुडानीडम्को नव्या प्राण दिवासी भूग का दी भूग दे दे वह स्ववस्त्र विश्व में व व्याप्तिक विकास के वि र्याभिष्ठामेद्रक्षवीनिंग्रस्मवीनीभाउद्भाउभे ह्यानिकान्यान्य के विकास कार्य कार्य के विकास कार्य वयमङ्गीर्थ स्वर्ष्टियमङ्गिर्थ विश्वमङ्गिर्थ । यमङ्ग्रिय स्टार्गियमङ्ग्रीभिस्य वर्गे वेड वेड में दसदस्योजे प्राप्त स्वार्थ स्वा प्रविपद्भवन मिर्ग्ययम् । पर्गम्यम् विषय रें राष्ट्रिया विषयिष्टि विषयिष्ट्रिय

निवरिनिनरिकामिनेपरकुरामिकार्या वास्त्रामिन पा बेस्वित मिरे १ भहेरे व किरेंग रहेर गण्ये उ मिरे०३। निर्मारिक प्रिये कि प्राप्त के विष्टिक निर्मार मि वरवजनरग्रम्बरः। विपयम्बन्यः प्रवेम् उम्बर्धका स्वागिमिक विद्युप्रमान उत्रदन्त्रमेका। पराष्ट्रियमधनेबन एवं में ममंड मन्भेजेंडेजे अववर्धरमाया जिल्हा ब्येंडेवेसडे भविषे । मार्थियां वर्ष वर्ष देश हर वर्ष र १ डे डिर वर्ष । तका निष्ठितद्व मिन्निम् भूपना ने निरंग्या व अमरोने ब्रेस्ट्रिन हरेम ब्रेस्ट्रिन स्वापा रीन यहिंडा) धनीयें उडी मते बेगी की वेग वर्शने उदेउदी विवद्धविवानं नीर नीर जिए मार्गि

वित्र वित्र वित्र विद्या वित्र विद्या वित्र विद्या ११३ रममेरे सिन्दे हिनेन वर्णे सारी परिमेष्ट्र गानवान्त्रगासवान्त्रजनवदेरके सम्मानीमण्या र्वित्राक्ष्यविद्यामीववस्प्रणविवर उन्हेंबर्गा ५०। रिजामिमेग्री वयस्यमिमरेबर य उस सम्बेड्ड वर्षा नामिरें भेडेरबेग्न्य उत्रिक्न मान्यमाग्री प्रस्वेड माउड्ग्ल में। वार्यवेसारेमाग्रहरे व्यक्तिका रापवमार्गिर्भाग्रमाग्राग्वाग्रप्वामबर्भेग र्योमनमे बर्गे एस्ट्रिक प्रस्थित के स्थित के स्थारित न निम्नाम्बर्मे। ६१। ट्रिज्या उले बेर नियम् अ य घवनी मरेन बना भारे बेर गविष्ठा भ

345

व्ययमध्यात्महरूग्रेशियमान्नियमेयव ११२ रा थी। नवर्ष यभाग्रे में दियमे ये वियम यहाँ य उन्देन हैं या एक ने में हैं या ने बैंत वे में हु बा है रवेनमारे अयह विमारियन मारे रे आरिय रवेडवे जेनुमबोरेनवीरीनिगडवेमाडेरियान उभवद्यापियेने माग्राख्या विकास मार्द्र हु थवडिवण्डिं में स्पा ममनुश्रेवरेमघर्डी रन ज्यु थवने मार्श्वा से पर विषय के में मार्थ मार्थ अस्य म्हिना व्येड छित्रविद्व वर्ण गरीक भी CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ग्रेमिश्रीमें डिमाइन ५ रघरमियारणेनरियाउद्य र्श्यम्पिक्त साम्ब्रहरू क्रिक्ष इंट्लंडुका अध्यव । एता वर्ग र्चिममेर्चिंगमेर्या मन्त्र मार्थिक मार्थिक मार्थिक ठ्वेग्भनेष्ट्रगम्मीस्यार्था येनविष्ट्रा गृहान्योनमानाह्ययोगेवहिमस्यक्त उद्यवडोरेडियवमे भारेनीमे धुनवे भवामङ्ग्या वडिबरायनी हारा वर्षे भाठ्यम्भावसम्बानिस्कार्माम्यानी मरेक्टमइण्डामग्ग्यामा प्रमिष्टिंन ग्री चार्चर्य रेउनवर्गियमगर्भिक्षिण्ठ

श्रमहानियरिक्त कार्मिक ११ अन्ववत्रवभ्रत्यम् नरीरेउठे । भावाधिम में इंडियवर्ग नामें नाउँ में मिन हो मिन हो मिन हो मिन हो भी मिन हो मिन हो भी मिन हो मिन हो भी मि बर्वभीग्रम्भिर ग्रम्भिर ग्रम्भिर स्थान द्रग्यबद्धियोगेम्स्पार्थ्य मुंपर्रगंगी स्नेभा क्षान्वम रनग्रेवजीव्यवयाप्यमिष्ठप्य दे उत्रत्न है उत्र है विकास के किया निष्ठ ब्रास्य उपरी बरे हे गारिय है जिसे पर परिवार द्रध्येव्यक्षउण्यक्षउत्येभीग्रमीयवे भाउत्रेम्या नियम् सार्वि उत्पद्यापिये निगक्तारेन्न। अधिकाराको समित्राम्बरी क्षानगर्ध अन्य विवक्ष विषय स्नम्यग्रहभउबीग् वमवी उर्वरात्री उवराजवी उर्वर

य्यस्म रेगितवीरीगड्डाम्बडिबी। मबलायरीतवी 4वीनजन्भगानिनरानिष्ठमञ्जीबी बरमबाडि पंडिबीए प्रेरिय प्रबेष इस्ति ही ने हुग्भेव पगरेर्ने द्रष्ठा सम्बद्धिम व्यापनि महिबी र्द्ध प्रभुपग्रम् । नग्र वर्षेपे रमेर्पवर्भविष्ठाप्ये पेउन्बर्भ द्वी जिन्द्रिम्। मभवउद्भव मन्ज्यप बेदलमलेष वेद सभमसेधरभग्समसेधरभाराभमसेधर नगष्टेन्यग्रथग्रेमेन्डियद्माले व वार्षम्बर हमहोष्। भवारः। विषावासवे की जबीबी गर्वे रागिशामिगममाभागविभक्षे प्रगणिश्वार । रियायास्त्र से मन्स्मित्र

म्हाउन्नेपठउग्येगमपरभम्रोधवमनलम् ११५ वस्पेभानगण्डेवपवभपवउग्रीष्ट्रापेमकेभिष्ठेत मेंबेर्डिंगमाडेया थाया श्रिण्टी। श्रिप्रयर्गीने जवव्यमानीसंस्विष्टा नेतरिकारीस्वर वैदिस्य प्रविव्यक्तिना । ६८। द्रिय सम्बर्धम प्रदेशवासिमास्यवेते इब्मास हर्कार मब्बन्नगैउम्मेथ्। दर्चनग्री। अवेद्रम्भ मक्रथा नगभासाबीबीन्त्र युग्ड परमप्रमुख पेनके चर्ण किमारा अम्मेर एक दे । १० बिब्रह्मिं परिग्न डभमाप्रभाग्य भागित्र नीइ का उउम्मा अमी बहारि भई उमा १६६ ब्रह्मिस् वेश्विसे जिने वित्र न राम राज्या मा वभाषनभागनवेश्वये वैमठवना प्रयुवित्र

उक्त वह भार्य सक्त के भीमप्रायमान्य भीमायात्रवहुवात्र व भनकारमन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द्रभन्द संस्थावनस्थान्य । स्थानिक स्था भगुडनियन्तरा१०१रिक्यमध्य द्वाउन्यम्बर्ध उनिमानिक के किया है। ट्यारिशमिष्टिस्ने न्यारेक्ट्र स्थानिश्चित्र उग्भावस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्य नगरेवर्गभरावधवारपुरखण्डा रवन्य विष्ठ रवण्यियुग्गु अवका ण्डनण्डस्ट्राडल उव

ग्रि प्रसास्त्र वित्वत्र नित्र प्रमान 030 वर्ग के अभिने भगेवम्ब भगेवप्रिम नेवलभाग उठी क्रिकेन स्थर विषेत्र में अवत्र के वडणीनी वासी मामस्य रेथे जैने देस अप त्रेजीभ्यव्यामाम्ब्रेजेब्रेस्यजीमात्रेजीत्रेमे साभव शिवप्रवरेष्वमनेवयमनेष्ट्रेन वामाने वियोभ इसमे इसामित्र गरेरे अयवनम्ब्रेस्डाग्रव्डाभिन्द्रायस्वभभ उसके दिन्म ने जिस वा वसके यह वो व्योगारिकी भागानना ते वाना जी मार्जिस के दूर्व प्रवान

मन्नेडेभवत्रमण्डिमाष्ट्रमण्डिमाष्ट्रमण्डरम तेनमातेन्मात्र नार्येत्रावरम्य वर्वे नार्येत्रा कामप्रियम्देवम् अपनायनेन्द्रवी व १०३० म्मा मुद्रममुसमग्र्योग राम् वयात्र वा भवावन वम्यमध्यअवम्खान्त्रे स्थानिम्य व्याप्ति रेये कि वमाग्रागराम् वयात्र वस्ति समित्रे मेरिज्यमभ्गामधीवनम्मन्य विकासवी भुउ पर्वेत्रेमें क्रिम्ड उउउँ । इत्र हा हा वा मार्थ मारिस्बे मेंसा। <u>उग्निग्निग्निग्निग्निग्</u>रिग्निम् मुठ्य तरहा कुम्मण्य मेपम्पण्य प्रमाप्य भाष्मक विष्ठ हो जु । भारत्य का मिया अववर्ष नविषयिष्ट्र हो भी मुक्टेन नव मुक्त

ववरवे। हीरिपेन्सरी नम्प्रिव ਉपमेशनुपर्ये विष्टे वडावरी नुम्बरी क्रीत अक्टा है अ हु प्रवासिक्ष प्रवासिक्ष मार्थिय के जी विदेश भीर्परगरीउडरो। अभारेश भारति भाउनिर्वेपकापमाउनिस्नारः) भाउन् त्रवेष्ट्रप्रिम्यउपेक्षम्भ स्वत्रव्यातः) १५ भवनमध्यभागम् ज्ञानिय डियमेयार्थे भमोद्धेतवीसस्थीभेष्यत्रवच्यववर्गाः भारतस्यानमे वसलेक्ष्मा वयस्यानम् वयस्य गिग्डव्यमिष्ये वेभावेसाउपुरुषा)भ्ष भर्पनित्रभक्षवा वक्षक्रमा देश विक्रियेप विपमस्व नामापेष्ठिपमारा उग्रीमधैर्मेड वर्ग्वेर्यमेर्भमम्नामः)१६ नग्रिप्रोस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैकिएपविचिएभात ठारा है नेभारी तरिएत ११६ का डिपमस्बित्रधेपविडिपमान उउउर्देन वस् उपग्रेष्टिपमे स्वीवया गराजित्ररेसा भी नगर्भ से बेडेब्ग्र तर्म बुद् उप्रिपमार ठावादी या भीवभीवब्द्य म्यविविधि छेउवर्ष येजा प्रवासी वर्गियामार्गिया स्वारिष्ठ उर्देश भाववीभावविष्ठवेष्ठ भ्रमनगर्भे गार्ययाष्ट्रयाचे भीग्रेभ ठजन्य डिंपर्निस्मोने डी जिंडे के डिंग्पर्मिष था भेजीवबी प्रमण्डिज निवव गरियेप के वभेडजवादी के अधिन डिमेयम डिमेचपमें ठजन्येन सम्बाह्म तिया में भारेष्य सीमननवेष्ठे ठिवेड भिजभान डेर्न नगमण

गार्नर बुभाव स्थान स्यान स्थान अभाग्गा बैनिय बैनिय में वेश्वास्त्र अन्तर्येभ मास्वरकारास्व वाक्षेत्र)१११ द्रिकार्थिय वेम्बरवैं कै से प्रबंधिया में बार्य स्वया कर जन्यान्याद्रः उद्भावन्ये भाष्ट्राचान्ये विवस्थान वेसवारियवयस्थित महिष हेर्य उपरा १ मा भाषा अवस्था स मारे! 'येबभग्वविविविपर रबभग्ववस्थि शिसम्बद्धाने अवसमसे वर्णेष्ट १६। एवेभगविषयेपरियमेमसम्बद्यसिध् यग्रावम्। भम्रो : सम्बेगीक्यवध्या उचिरामाना स्थान स्थान

नियार्थियार्थे । एक रियार्थियार्थे । एक न्याप्रवावडिजी सर्वे विश्वाविष्ट भाषान्य मिन्द्रिश हीबाग्रहार अप्रवडिमें उन्हीं करें भ्रम्मडिपेभववामसेध्विमेन्रतेनेग उस्मानविज्ञमाभ्यमा) ८१। नजाप्रवि नेष्ठवनमिप्रचेष्ठवेष्ठवम्भागम् मुग्रिके अञ्चलकी अधिकारी भारत के कार्य के निर्म उदियाधिममम बेनेगडिमेममानवाडा) जिल्ले में निवाउसमारे।। नैयेरीवयावर्ग विउद्धिवद्यामाग्भमारियगमयआ गुडडमबङ्गारा रिशियेयोमीबेयुवममडे भव्यक्रीस् विविधानि भडवें भवष्ठी हाग ध्रिमहोद्वा कर्णनिमहोद्वारिक्षवार्थि

भवरणविष्ठवस्तराष्ट्र दिशामयराजवा भमत्रवार के स्वाप्त कार्य के जिल्ला नमञ्दर्व।विदाद प्ररक्षरी ने उपयानाव विकाडियार्थिग्रहेनजीए भेडितव्मध्र वीनजारे उपमेम बराई वान करी वे ज़रा नेम उरवडिंग हैं दर्भ में ग्रेसिंग हैं रसी उरिविष्यम्भगम् वडिस्व व्याउर्वाध्रमस्य स्थानिया विषय मत्रनागी। पारविष्मप्रवाभि उवारी मधाम अम्यप्रवेग्मपानी वामवेड्उ सबी मतपाम भरेतिड्यीभडिव्ययिग्याणीए ड्रिंस्येड्नि भार्डियमगमयम् वेमवसीम्यकावीग ८३) रिजाबर्ह्यमग्डी ब्यवस्थानिक । CC-0. Gurukul Kanari Lin

मनवडी विरव उत्मवडी २ मेड १ र ३भउनेउउनिमनवडी० न EPRINA'S

वैन्द्रात्रेपदराभक्षीयी पुर्यत्ये वेराडे रेंग रेजरमण्डेडिंग श्रिम अर्थित के क्षी भेतर के के के कर रहे अर कर भिकर भेमीवज्यान उद्योग भवत्वीवत्वत्व उमस्मिनिय्यानिनेन १११ जामें वेपरवेजभवद्याचित्रभवत्रभवन्भी अंग्रेपिने जी उम्गेव जिल्ला अस्ति । नणनम्भेजिष्ट उत्पर्जाष्ट्र ना विजेडे प्रभेत उभेमवाज्यामा मा मा मा मा वारा है । भवायग्री नीता वाय अविविद्याय ये ये वि यानग्रम्मायम् वर्षेत्रम्यम् प्रमाय जर्ड देमडाबर्डिसार्ड्नियाम्याम्यवर्षे वैरह्मवर्डियम् द्विमण्यु मण्यु मण्ये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

362

ग्रहन्य अर्ड उपमाम प्याम देवा माडी १ वार्ड द्वारिनाष्ड्रनिष्ट्र हिंग्येन्य याग्य र उर्जिमार ब्रिया में उत्पर्य प्रवाद नियस्य उत्तरिक नियस्य वास्तरिक जिन मामा कि जिल्ला है। असा में भार उपार उपार रमाय मही में में के के उपार मही भारतियार यार्थिय मार्थिय मार्थिय विभिन्ने उड्डिडिएरीएउएट निर्मास्त्र वर्णनार गर्म भारतभागानु मानामान्य मानामान्य भागान्य योग्या निर्मा है है से मी विवास रक्षा रिक्र रियान के देवा है दिने बात के पिता के देवा वान निर्मा होते हैं। यह होते हैं। यह निर्मा के स्वार्थ के स्वार्थ

पाउद्यम्डपमाया दारा सहस्रायः पाउद्यमञ् भाष्ट्राक्तर् जेपालिक प्रभाषा के अवस्थानित्र वर्गनरमर्भग्या १४। ना निम्ति श्वाप उद्यमें द्वेपमा माध्य सम्भाषा प्रमुख्या रवव नन्य उत्रमुख्यान रन्रेपरममनरीप्बद्याग्यस्थ्य। अधा भ भरग्रम्भारे।। जियु प्राचित्र अपनि समिता यग्रमा पार्या वृक्षत्र जिपार्य में स्था अ गार्थार्थियात्रवात्रायमेमवर्यम्मार रूपमेक्षमउमे उडक्ष भडपरमार्थ वर्ष रत्रसम्बद्धम् मार्थित प्रतिम् नियमका भवदेख उभावता । इन्द्रिय रः। विपमामन्द्रिपमिपिपिपुष्ठार्थपम्।

भीटा हिए वस है पर मक हैने ही बरे छे भी प्रमिष्ठे १६३ अयुम्डयुमिमार्स्वायमस्त्रमारिः अप्तरुउ व्यउक्त विभ्यप्रचुउभग्या भ्रम्बुउभन् मम्बर्धि अनुवादमानवद्यार धन्त्रणभ्यमु उत्तेभक्क यस्ति उत्तव व उभे खरमनी परेस वे मिभ्य मुउपमें मायाबकभभीनेनेवडी डीवउठेमेरुपा नुपानिने वि शिष्टियभी में निया मिसा रामण सिथ्य वि जिल्ले मिम् व सहाग्रवी उग्रवणमी प्रमुख्येर भ क्षारिक भट्टा वर्ण सम्मानिक स्वेभार देन भन्नाभागिवणक्षित्रिभ-स्मभउम-समर उद्यम् इत्रम् वरम् वरम् वरम् न्युडाइप्रमग्डमप्रस्थाति ।

अभाग्यमाय्यायया रगाष्ट्रिया भेष स्माध्य करीय नवदी मण्डी व । व डे ब व व न र्गितिवेडव्रहानार् त्रवेवव्यवेडारे सग्र नजभीनाव डीनेव जैपर महाध्या व नमक्रधभूष्ठभीत्रसेवाङ भाषारेः।।वीवीववा वंजीवभवजवणममिया भगवा चंगाठेभे व्यवन्त्रवेभवा १८४। द्वाभंडी सबद्देवजन वैयोवरीग्रामयविपीरमारिपनाभाउत्रवः वर्वे उग्रकार्य हैं वार्ड बार्मी वर्ग बीत दी। गुक वस्त्रमान्य वस्त्रमान्य वर्षे भवभित्रमिक्डिमहिंबगु हा देता) दे। । भ उम्रिवा महार्थिय अस्ति महिम् रावन्डविवाडियमधिमार्गडममारा)

मस्बयमिन्य उत्पानम्बन्धग्रे १८० मते बर्वे ग्यामा भी भी बडिंग रे के रिंग अने वडीने में बब्बिया में ब्रेस मा के के किए मारा है ल्यमप्रक्रियम्बर्ध्यम्यम्बर्ध्यम् नवडीजेक्ट हिराह्थवण्डेक्नेवडीनेघनेमञ विन्द्रकार्विउर्वे भवितन्त्रक्षेत्रक्ष्रियम् हैं छिमामात्र कियाने भवने में में में किया है थान्त्रविधरेमरामान्यवम्यामञ्च्यान्यानुभा मार्डियामेयारेमेबेपनमवीरेव उपरीमेने वनबैद्याभयनीव्रिसमेठकेवे अधर छुरेविप टेमबानिय रेटनम्यूमेबनाय म्ह्नाम्स् वानगरम् अपन्यम् । प्रायम्भामे विद्यम्भिकारियाने विरो

स्रित्र में स्थानित कार्य में अपनित्र भाउभन्ग्भी वस्त्र के विश्व थारअन्य उद्देवस्य राष्ट्र विकास यमप्रसम्बद्धार छपना राउन्य । उवनिमम्बर्वन्तर्भेग्रेट्रियो गमें में वर्षे परम्भागार क्षारा है। वर्षे विषष्टी नगुउद्ये विषे नागने उद्ये उ पममवन्येउवा स्ट्रिक्मा दर्गार्थ मुग्य यारमध्येभाषमीमामूद्रभामेन्छ। उद्येवपीवी रामविपाय रिपरे मवरे उभे रेड्ब भर यमाद्रयाद्र वामन्त्र गुरे खराज

चिवववी रिक्टमस्वर्ध ११८५ देश हरे वारा राभवन्दीयवासेवा

नेम्बनभरमेन्। जनमन् शक्ति अपन क्रिक्रिक्स किर्मिय कि डिपमानिपानिपानिए के जिल्हा उत्रद्वपरहरग्याप्यापमा रे । उद्ये ग्राभिन तर्धमिक्रमलक्ष्मार भारतीय । अगर गिरम्यमस्यस्यम्भिर्वकार्याण्या ध्राभेनिने ने इमेक्पाएं उत्र क्रान्स भक्तमकार्दिकाप्यः प्रवच्यामम्ब मउपैतीसंश्वन्वयासा। देन दावावादिव॰ नकाम्स्भाधाउँ विम्न में में में से प्राथित रमधीरनती ब्रष्टी उमीर माध्य जबहि उन्नमग्रहामामसम्स्र हैं पर्मा राय्वेरे उगाउथ उग्निया सं उभाविक हिंगी

a za qoh PROPHOLOS! 262 नित्र प्रियम्बर्ध

शियक्षेत्र मा इंडिक्ट शिल क्षा अपनि के विकासिक खण्डा<u>न्य</u>

वार्टिशयमावारमान र्ए विमन्तेनरभडभड निर्देश के निर्देश गुज्यारे १११ गरिजदापु

वतरेष्ट्रित चित्र वास्त्र वास् बउभक्षंबरक्षक्षराहित्राज्यस्त वर्ष अस्मन्य प्राण्या प्राण्या महत्त्व रक्षाणीर नियम्बन्द्र में द्वारा में उप्रमुखने बड़ा रें रें के बढ़ का में प्रायतिक एउँ छो ने बिल् पडिंग पड मित्र वर्ड मंडवरनमग्रीउठेगम्ब्यार्व उत्तर यडमी ३२ भरिडमी ३३ मण्या वर्ग उव ग्रिडानेबर्ड नेवउउपर मायववायम् उवारमाराष्ट्र त्रिया प्राथाय के विष् मन्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व युराष्ट्री व्यान्डिन इस्रान्टित अविसारिय विस्तिति

OLYC VI ग्रेन्ड्य कार्या कार्या है से ब गिर्मे विद्यानिक थार्थ्य वनम्बद्धः मर्गिनेनिवनम् उपरीभयाष्ट्रभाउभम्बर्ड एक्सरवार्ष्ट्र उपनेवास्त्र रम्स्यस्थास्त्र ११ याम्येनवायदे

नीउक्षउच्चनगरे विष्टे उने वेडनव्या मधीना वेनक्नेन्ब्रष्टीभवेन्निव्यक्तिका मिथनाक्ष्य तक्षात्रकारिक दिन दिन श्वारक्ष मिन्न मार्ग मिन्न उन धार्मसमाष्ट्राष्ट्रानिश्चार्या गम्भवाम्भागम्बार्डमान्य वेष्र्यम्भग्भग्डम्ग्रान्यस्यम्बर्गान्यः 23र्उप्यद्गशीमभीमम्द्रव्य व्यानमा भ्भरम् अस्त्र भग्रह्म निष्या स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स म्याह्य मिण्याम्याद्वा स्वाह 1मय्ग्रमभेग्रह गग्भव वस्य समन्व वेभवषा अभागाय

त्यवः ध्रमेमः अ १६० म न इ रिजिस्थ सम्मा उठेंभा सारशिवमत्राधाराध्या इवि इवि निस्तिक नियन रियान्य प्राथम् वस् इगरेम्डम्बर्डं

भूजी असम्बान व देन विश्व कार्य जिभागन विमान के उमें में साउउवादा। १२१। स्माभनकाकारी । किरी मक्तरी में श वेपरेग्भग्रामण्डेम मीक्षिक्रमीभग्राकेव भसर्वेडेक निरुष्टिम्बर्सनर्वेष्ट चित्र विष्मभेव धन बार में छ दे उपि जे भो बेर स्याप्रेडिके बिमीग्रिजने उद्वेज रहे। विवयम्बनमण्यव जिन्मा देवप्रभग्यो व्यानविभा चित्राभपञ्जारे भेत्रावर्ग उसमेखकरोभाइम्प्रविण्डेण) भवम् उद्वेडभक्षमध्यद्वारा मनमभे पगुरुविभागा किन्या डेमे बरे बरा थे डे उममुब्रह्बिउन्यर्थ। १२२॥ तरु। नाभे

नेन वृथ्वाकारिय नव्येमेरी बरको ये भाषेत्र १६१ वेड्वडं) गासीवावडेडघमयक्राडवावर्षियारे। नित्र । भीरमयाउपयमाप्रिवेद सप्पावन गुरुरिवे थाने अजीभन्ने बार दें जा अवान हर वा बार विकास बीकाष्ट्री अक्रामक्षेत्र वा मृत्य इंस्ता न्यार्थे उन्वेस्यम्वयाभीवाभीवेम्ववामावीर् भीवी जीयुक्त के विम्व विकासी भवरे वर्षे वर्य वर्षे वर्ये वर्षे वर् काल इतेष तेषा तथ्य हिष्ये जैंपि भेषवारी ब्रुडीब्रुडीम्भीय्यगतिवीग्वेमेरीवीसागाउ स्रवी गीत्रवराह र डिपेडिंठ डिम केन तह श्व इियानियी जिठवीष्ठिणी मी भी थि।

वी ११२३) रिजंग्राभवं वेष्ठाह घ्रविभें

ष्ठारीती मुघाउर्रघुउरावी चिउर भुमवारी

याक्नाने अक्ष ब रखीवरेरी मान्य मानुष्ठि अष्ठिवावसहका है: जिस्मेडेजेवपेन गंम उउिश्वभीवाडेभंग्राग्री विमानु विडिशिस्ट व भाममञ्जिन्भानां । १२४। मनगर्भराउ मञ्डिविश्म इंडिडेग्रेंस्ग्रीस्ग्रीवमेम्ब्रा नमर्छे गर्क गर्भराडे मर्डे वे विवस्त्र म ती भेमर्ग्डमित्री राविंडि विवासकी मुख्जी विउत्रवारित । विद्याविदेव महानाभी मेरेड गैउगंभुधेयमिपमञ्जितीयमिवमञ्ब ग्रेरी । उद्यारिकार्मे विमञ्जित्वने मे बक्षेग्ररेथ भनेवेडेग्व मध्य भीर्यस्म वीरे में घ्वर्री अवेभाय भारते उते । उञ्चल उडिर्भावितिसावको जैभथवामारिसेष

अरिय्भाडेमङ्डिभववा)विजनी।वज्लाईडेव्रेग्व १२२ वेंप्रवेद्यास्त्रवास्त्राव्यम् वयुम्यसीवयुमी उपरवर्ष्य रे व्ययभाष्टा) १२५। प्रियम्प्यविष्टी रस्ये मध्यविष्ट्रभ बीभावण्टीमङ्डिफेबमी मुडिडेफिरिभाभवाबरा ॰ ब्रुविने हैं। गुन्ने वेवी भिक्त छे उवेद्ध येवद्वी वमा छा भा र्जिनम्हार हा बहु मी हो हा हो। १२५१ छुमा विद्व विभवडवेपाविष्ठुक । इंडेड्गभेव देव वभमवरभाष्ट्रे वेड्य उमारीबड्य रहारो। के अर्थिर स्मारेबर्म तरु मिया विकित्य विकिति विकास मिर्गिमा के थायनिक्रेकिश रिकाममायम् उभित्रियमा हुकि युन्न नवद्धन विविधि। माभा भी ने मा अवस्थि। प्रिक्रवर्य वस्त्रमाने वत्र थे । भी में स्था के मु अ उन्ते रकारियमें रे उन्ने राभवमान्ये में

भक्षवा अवस्था विषय । अवस्था अवस्थित । अवस्था अवस्थित । ग्राष्ट्रभाष्ट्राजावेम व्यविववव वे भीवाम प्रदेश है १२१। दिन विजिशे। हिंड उन्हिं मिन विजिल्ला कि देखे ष्टानब्स वाष्ट्राष्ट्रवीय किये त्रेत्राक्षका १२४ । हा व छाना नेवलका छाने गरा सरिनवर्भगयुग्नेमाभषाय्यनविस्तु है। सर्वेत्रम् अञ्चल्यानियाव्याव्या उडवीना भिष्यम व्यायाज्यित अभियेत्वीत्र ११२६) त्रा अग्रमीक्षार्थ याउमाधिकाम छर्वेन गर्वे वियाव र्रिष्ठप्रिममें अभिवश्यमित्र विनवि । भूषभभ उत्रेभा निरुष्ठ मात्रिये देशके मधुष्टिया H)) 2 30 Staff HAS 300 BZ 12 22 300 Staff University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रेमडेक्सम्बन्धार्थार्म्या स्माया स्माया स्माया स्माया । १६३ **ਉਹਮ** ਤਸਸਭग्रमियुननगरीप्रम्यामगरी। देश 4डींडेनरबीमिप्रियेश्विमबपटबीगैडेपि३११) यार्थी । प्रिकामक भागवण्यी मित्र में भारिपश्चिकद्वमारे :।।भवनमब्द्ररहरम भृतिभामानिविक्राभिष्ठिवार्थिष्ठ अस्विक्री उस् श्रीविरिक्ड १९२३॥ यहारेः । भागतभेगश्रीयृपिष्ठेवे उरिबें ग्रुब्का केंद्रिक्विमा उद्योरे पड्रुब्द छन्। १३ ३ एवड्नेबेप्मयरे वस्त्रीबीमाग्यीकेषर क्षानग्रीयाभष्यस्वसद्धरारिध्यये प्रवेन के बीन उथ्डंक । हार्व उसे व उसे प्रविश् वद्ममङ्गी ३४ निरंद्या निरंद्या कि पेस्क्रे विष्णा भो उच्छ्ये उच्च य उद्धविवर्ग में व्याप्त । येस्वर्ग में

भागोगेतरावेष्ठिद्याव्युड्य से विक्येमक्ष्य व्यतिवर्ध व्यवित्र विश्ववादी प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के ब्उन्हें - उष्टा अवस्थित उर्वे विषय विभा रिय्न उठने भी देखाने भ्यम् यसाया विकासिक भरिक्षामाक्ष्याउरिगरियदियी द्यामाने वा उग्रव परिस्पावपारिवदीभनाष्ट्रमाडा १३५ निपावपार मुग्डभारी के स्वापित स्वापित स्वापित स्थान भगम्युड्यमा रिश्मिनमार्डिका एउ र्वध्वेडपडाया नेव्येष्ट्र मर्डोमेम्भघ्यव्डाभ्य ष्टिभी ३६ निम्लम् छ भेगिष्ठ मा उपरिवेद ने में भ यरेथियेके अध्वया अन्सिग्स्टिक रिश्वर्य श्वस्त्र वित्र स्त्र म्या व्याप्त वित्र वि नग्रीयोग्रम् ववग्रध्या द्रशाच्छियसभवषा

एक एक स्थानित है स्थानित है स्थानित है स्थानित है नप्रवीर्म्ग विवसे उसन उर्वयम्बर्धिक विद्यहर्मिन् यदी मिल्लिंग मिलिंग मिल्लिंग मिलिंग मिल्लिंग मिलिंग मिल्लिंग मिल्लिंग मिल्लिंग मिल्लिंग मिल्लिंग मिल्लिंग मिल्ल ण्युड मय्डल्डल्यस्थायम् मस्याद्या भागानिवरिश्व मियतवरवर्थरे अपनिवष्ट एडियाद्देशक्षाव्यक्षाव्यक्षाव्यक्षाव्यक्षाव्यक्षाव्यक्षाव्यक्षाव्यक्षाव्यक्षाव्यक्षाव्यक्षाव्यक्षाव्यक्षाव्यक्ष १४४ ज्याका प्रेटविष्ठा प्राप्त क्षा मान्य प्राप्त का निवास का निवा म्यरवाद्या मियम्बिभक्षेयाव्यक्तरादेः उग्न्य रेवर्ण वास्त्री प्रमाणिया

RESOUN गुन्द्र श्री स्ट्राज्य स्ट्राज्य स्ट्राज्य स रेष्ट्राज्यभम्बर्धियम् जर्यम्बरेस्का लघुडामाघडेल्स् वर् भग्रययम्बद्धवयावयुन्न मञ्चयम् भाग्ययम् रस्रधेरस्ङ माजमङ मान्य वास्त्र अभी वम्छिम्यामी हिन्दीमी छन्ने में छ नग्रामायमानग्रहस्य इति ए वेष्ट्रबडा हो हो व

उग्रम्भयाग्यायायायायायायाया य्युव्यन्नव्युवेरेतात्रास्वभवयम्बर्वेष्ठा यवडेवेरे वर्ष अर्गिया मनवेरे रे यात्र पृष्ठ्ववेष मान्यव्याम्बवने वेउरेके भाष् भागेवडी भक्षेव गक्षहरू विश्तरी प्रेष्ठा नववय्य उद्यनिष्ठमेम। भूभाये वर्डिष्ठथाप्रम बुब्रह्ममबग्उम्रेम १३८ नाष्ट्रा वे मुपीउन वर्डी उन्हार है। जनमानिक कर्म किया किया है। श्मिल भारति भारति वर्ड पर्वे पर्वे पर्वे वर्षे १००१ याभेष्ठनी डेम्प्यारेभा पत्र प्रदेश प्रमास यमास्यः त्रिश्वेमवी उवे व्यापण प्राची घरेग्ये वा विचिववे ने बुभूष्ट्रं परे विष्ठे वा १४१ । भवि छ

सहकारिश्विपउच्च अञ्चल स्थानिय विश्वाद्धार रेवी निस्य उनिव र उन्हें जिन्नि ४२ मजवाज्यस्विमियउउवे भडमें इवस्रकारि प्रमानि उभारीबार पेउपिनायाउव अवन नवस्थे क्षते। उन्निष्डली इक्ष्य विच्या विच्या विष्य वैभनेब्यउवन्नी भउठेउणमञ्ज्ञी छ राज्यी वाग्याप्र विश्वासम्बद्धावयम् दियस्य विश्व त्रभउमेघग्रतरोष्टिमेम्ब्रेनिव्युक्तवउकारिमभग्री वैद्यग्रमम्बर्गिक्या वेद स्थाने महामान बुल्डिश्मिर्डिं अन्यक्षियानमेष्ठामेष्ट्रमे वेष्ठमेमध्येष्य स्वर्धिये वेषे भेने नाप्रिक्षेण में निभागिष्ठात्र प्रयास्य प्रयास्य अभिवयः ।

विस्तित्ति विस्तिति । क्षिण्याम् विकास कर्या देश है ने निर्मा कर्या है। निर्णितिक वित्राधिक वित्रा र्यन विवास १८५२ । जारा समान्य या उद्योगी समाजिपान्य प्राचिता भूमाराह्मार्थित है। विकास का निया है। विकास का निया है। निमद्वनगर्ने माया जी में या है। थि। हेडपहारिक्तानिक्तिहारा हेर्ने के स्वार्थित है । युष्णियानी मिर्निक स्थानिक स्यानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्य हुन्य उत्या हरा है पकार माना करा है। ज्ञानिस्वा श्रीमण्डान्य मार्थित है। यहुंबवयय उद्युष्टिन में असे पेपिडिम स रारे उन्ने विकास कि विकास के प्राप्त के के प्र

स्वा १९५३ । ग्रियं का प्राप्त का स्वा है। यमावितार भ्यापकारी कुर्या है। अर्थ उत्तर्गी ग्राम्य क्रिका भी वर्ष भी वर्ष स्तित्यार्भारतार्वेशक्षित्रित्यार्भारत्यार्थ ज्याद्मा छोवा भेवरा या उवरे ये प्राटकरिये यः गरेः भगमवीकोषेको भगगनिक्य ख्रियाः) भागमें जिस्ता है विकास के स्वाप्त जिस्मित्रविद्या में विद्या में विद्या में सिर्वेद्या मिला यूग्यन्त्रकेश्वाध्याम् निवर्धयान्त्र । र्वाद्रधानुभाषा निर्मा प्रमाण्या रक्षनी बहु जेया उत्रिर्वेथेवपर नेच्यानं वाजियां डेडी का

मानवाद्यामान्द्रनिवसीप्वक्रेनिया है १६७ : न्दीयवी ने बवर्य प्रविष्व मारे विष्ण है पर्ने जे ज्याने रेव ब्रेन्स्येब व्याप्ति बर्ग रेव व्याप्ति विष्टे प्रस्थि। इडाह्यान्य प्रमुख्या कार्यान्य क्षवागरिः ग्रामरेबभवीनंग्रभ् याका म्यानिक विश्व बन्दराष्ट्रा १४८ । नगंब्र में देवपुर वहाम्यायवानवावहाम्यायम्यवहा मनिष्टे बोर्डिय प्रियम्पार्थ स्रकृष्टेडिशै कड़ तहारत है रही ने भारत हुए समित मतवनस्पा अवदा म्हाभाष्ट्र मामस्यो नाम्न डिडिट मेम्परेवर्गिये वर्गाष्ट्रवाभीवो नवर्गाम्यः म

क्रमाउद्वेग्वित्ववन्वितिकाष्ट्रिमार्वित्रम् उन्नहानी मानिया उत्तर है। या मानिया मानिया विश्व है। भेग्जी अनुगभाम डिनामान होने भाग होते भी प्रमाण होते क्या इक्रमाउर्यन्य अभिमान्य वार्य वार्य १ वर्ष रिक्रम्बर्धिय में मिला मिला मिला है। श्चिम्प्रम्णवयोगी अध्यान के ब्लाकरिन गर्म भयभ्या है । जिल्ला । उद्यास्य उग्रम्यग्रियम्बर्गियद्वाम्यस्थ स्थित है से स्थापन के स्था प्रवारा रहा रहा में प्रवास के के में महा कि कि कि कि म्यायम्बर्धिकिक्षेत्रम्यम्बर्भिक राउँ उत्तर उवगिष्ट जिन्न १५० किर

परान्त्राम्याद्याम्याद्याप्रमान्याद्य यायन्त्रीयम्ब्रायन्त्रायायाय उन्दर्भाव में प्रमुख्य मार्थिय स्त्रिक्तम् वित्रप्रमानिकान इस्प्रताम्बर्ग्य मेर्ना एउट ब्रुविना इति विकास स्थापित विकास स्थापित विकास स्थापित रिट्यामायहायवाय

उन्देश मार्ग्यस्य पराइम्यक्र ने अमेरिक्य र्रेक्षेप्पामग्रिपिनरस्मेर्गरवनर्धारमञ्ज म्ने थे। ब्रेडिय मारवेशी मानवे भेडेभारिका डिनव भुगमें भा उपित्र से स्वी से र जिसे वा नवें दिगमें थे। १५६ रिज मुबम ते वे पर रिव बेह्ड अवर क्रियां डिसे म्र विकेश के महामारे। निर् भीवष्ठाउठवरारेष्ठेवरभाग्निपाउवरिए छिन भार्यक्रिमें स्थाने स्थित स्थानिक स्था भेजाभाषद्वाबक्षिया या राज्य भागम ज्यानिक किया है के किया किया किया किया है। वर्गरिषम् रेवडेर्निमे ठामारी प्रक्रिमा है उउपरिमीधसारिकारिए।१५१।। नाजविष्ठ

इ गरमें ने ने ने प्रविभेग ने रागरे पुरे देश १६६ भत्य इंडे जेमिनी प्रसार महिं उर्पण प्रिडे भेवलेकिलिए। १ बार्यभेगर्भक्षिपा) रा। उन्जिस्त हा हा । प्राप्ति वे ने तस्ति । १ अन्यत्मेनीन्यिया र मग्रम् डिवें ४० भ राउक्के उभेवबीर अपविवादिये विवाद मन्ध वन में में स्थिति । प्यविष्ठा । प्रेश वर्षात्र डिभाउनिक स्यानिक के अनिविधिक स्थिति वी में डेमडेंडेबग्यम् रक्षतरी गडिये। म मार्किन पिर्विक उपमान उत्तिनिया रीविश्वेष किर्दास्य केरी केरिया किर्मा किर्म भीत्रकतिसंगिक्षवारः।)पक्षत्रपश्चनग वेभी मप्रीयूनर्थर निभक्षवैगितर मिं

र श्रिरायममध्वरा १५५। वार्यमध्य विष्ण रापाय्यमवाद्यर्थम् प्रदामियामा तम्मार्य जाउन्रवास्त्र निम्हलप्पान्य पा वयनगर्मिय अन्यमये छग्रे बप्रकेडे भ जिनेवम भी विपमण दे ये ने वान जी भी यम धप्याम् १ अस्पनग्री नगर्निय मिनाम विशेषवम्न मीद्विश्या किग्मा १५४ है। रिजामुके में मार्थि। उपनि तिष्पनार्तिभागन्य हुन पानि उपतिभाग तिसेपस्या काक्षेत्र मेरेशा उत्पातापात त्रभाष्ठिभेग्वस् वन्छावयमेवारकारीय वननेपर्यप्रम्पापंगपंगप्रमेभ गुग्गाम्र० शारी कर बिंद्रमें के बिंद मिस्मववे बस्त दें। वर्गारी मितरकाकम् नममें वर्गात उत्तर्यमेग्यारिक्षे १५९१ रिजन्टिक्री रायना बेबे मारिभेष्ठगी विसेभे बरिष्ठा रिवप्ति भेषिपां ने उड़ भे भेर ने ने ने विष्ठ रिन जी। अस्टिम्बर्सा अष्टिस्यार्भे भीमस्यिनप्रसम्पर्धा उड्डामममरीवडर व्वर्भमाद्गा उसर्था बद्धा स्पर्वित वर्षे की द्वारिक विना १५१) ब्रम्म श्रीत उत्तर रियेन प्रयानमार्थेन ठउग्याभागु देनेयाय अमेनगरिया नरा भाषित्र अभे र् प्रवर्भियपवारी र में उग्र दिन गर्म र्भिडेव भविभागिनिस्ति वेडेरवण हिए।

अधिवत्र में इन्छिन्दाल वर्ष प्रवास प्राप्त उम्बियोग्यमस्मानम् वउपवनार्यप् व्यामन्भवध्यक्यायुक्ताम् उत्राप्त्यम् निस्ता अविवास अव स्निति हिए कि कार मित्र वन-विष्वादान्यादाभाष्ट्राविष्ठा प्रग्रह एत्र एक मार्थित विकास मार्थित वाराताम्याम्याम्याम्य य032 विमर्था स्थाप्र विभिन्न विश्व उववानमाम्मान्य । उद्य य्वारक्ष वनन्य छिड्डार्था रक्षान्य राज्य महार्य विक्रोण महाभिक्रमा

शिवानाम् स्टारिश देश विभावानी प्राप्त २०१ उनेडामग्नानीय मिन्यानीय मिन्यानीय मिन राजा १६४ । प्रायाण भित्र वा स्था है। नस्तिमिधाराष्ट्रवर्गितम्बिनिधाराष्ट्रावेग्धन तिमस्यम्बद्धसम्यद्भाष्ट्रभयाव्या मस्रियं रायवारे रायववेम्यरिया भष्ठवारी स्थापनित्र इबीरी उन्य छित्र वस्या डीन छ उमे छ उमे मार्थ ब व उम्मार्थ एवनाण्डिइडे एम्रायेन मेर्ने सम्बर्धि इयिन उनियम इयन्गरीमेर्ग हुउरे प्राप्ति मे सद्याष्ट्रियाची। रिशामधार्वनप्रस्था राजिन्छ। प्रकारिकारिका उडियर वर्गिमामस्यरीयाप्रि धानी माडि १ शाष्ट्रिंग स्वीते

वर्षम्यामयावित्रपावरिष्मियाम्याम्याभ उन्यनेमाउग्रीनियस्त्रयेथ्याभाग्रह्मेर्गेष्ट्रगे नैययवार्वेगीयमुद्धेवार्यार्थिय वैतिवेवत्रवेववित्रवेववित्रवेववित्रवेववित्रवे ग्रान्य निर्द्रान्य वित्रिष्ट थारिपम्रदेश्विवलगामप्राच्या प्रत्यक्रियाम् प्रतिमान्यम् माउद्विमेश्विमास्निमाग्वर रवनरवा विस्म भैस्भरिक्टेडिस्स्वन भाष्टि हिरी वर्वेद्वे ाराग्येष्ठात्र विद्याना नियम् ज्ञास्त्रीय विस्त्रमञ्ज्यानियमि भएषी उग्नावेम्रेजमहीरके १६६। रिग्याना भेप्त्रजीतराष्ट्राज्यान्या kul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विक्रिजेशि । ग्यानिभाभेवेदछष्टेव २०२ वेग्रिधेगुभेष्टेबबेध्वग्रधेभेउउभ्वन्गेउउ ज्यान्य । ज्यान्य विष्यु ए उत्तर । ज्यान्य । ज्यान्य विष्यु । ज्यान्य विषय । ज्यान्य । ज्यान्य विषय । ज्यान्य । ज्यान्य विषय । ज्यान्य । ज्याय्य । ज्य मिन्नाक्षेत्रव है: ग्विववियमने प्रमुश बेड्ड्यूग्रेर गम्युक्रम्यवेसीनीभेषेषु व्यव्हाना ११०) नियमि निमा रिडांबे तिभाव विधिरं मवी ने ने मेन्। भारत्याक्षेत्राचावित्रवा जैवरेशमुध्वविवयं जवंग हि ३ रिजेम् मणीभेन्छे मंडिक्शवविष्ट्रिसिकेण भवार्ष्याः इत्त्राविक एडिएए विकार्य क्षाका हाउबर बीवम व मारिए कि स्रव्या भूबास श्रवास युवस्य देवाला। १९०१।

गरिजंसर एउन्से अवसे बेड हरा जे भ कि विवासमाधिक विभागित कर्ण न्त्री क्षेत्र कि विकास विकास कि विकास ग्रह्यित।१९०२।भविधानभश्या रें: ष्टेरवेर्षेजवर्थना ज्याना निष् नंगामानभक्षेत्रिकनारो मानमञ् बण्या। १९३। अवारः विवास्य वर्षेउम्पानवहिन्द्रश्वाप्पाप-भाभाषिक र वस्थित स्वर्ग उत्तर । १११४) भाषामा मेगाडी भाषा वारा हा हरारः जागर्यवर्गनेवह्या वानन भवेडांभा ग्डांग्रेभा में बारिवां वर्ण वर्ण करें।

विकानी विकान करें वेसी पी विकान करें हैं। चभक्रके। भवाष्ट्रधमभक्षका। महत्रा महत्रा । भारतीन्छ डेव मेगन जैविभवनेभग्र विषे बारमर्गिडवाडवाडिन विषिक्र विभावने के छ।१५ १। निजाभी हापराग्या बनव मेगवी ने। १। व्रिप् वरित्रेमें उम्मम्नु वह हमबी भूपंडे करेर बात जबभवर्गवर्गयार्थियार्थियार्थियार्थि। ३ भेने उत्ति विनामारियो भिष्मस्यारेः।।वा॰ रापवाबद्यरमबर्गरीरमबर्भवा वर्णनेपवी मेंद्री विश्व अनागेर्येया) १२५। प्रेम्बर्मन उद्यम्भर्मा अवस्थित । इर्डी भवा प्रि जानी जानमान्यनियनियनियनियनियनियनियन्। भीरग्डाडम्य भीयारीभरीयगे उत्यारम्

द ३। गण श्र**वंगी उ**ष्ठ के स्पाउपमानक नगरीर्धभनगषढकाउँ जिला दि दिन् पाउष्टीनरीमस्प्रम्गर्गरार्डिस्रिस्) पाराउँ नक्षती ग्रेम् वस्या प्रवेषा १ र ४ ग्रमेपमयाममा नेपीउर्या निर्वेद प्रवटवर्वेद । तन्। विवयवस्तर्णे । विवयवस्तर्णे उन्दादनर्गग्रम्वा । इन्द्रम्म राभ पियक्षरायसम्भारेशास्त्र श्रामपार्थम अञ्चलप्रमाम्या स्थानिय स्थानिय विद्या भूपवस्रा १४ पा जताय के भूपवस्य उउद्यास्थ्यभ्याग्डेभ्यस्स्य प्राप्त भीविवा नाम प्रमाउका सम्भाषा ना बरे धीयमभपय नामिया सपारः। वणवा

भारिभायवेगनम्भीभडभरिराङामाङ्गिव भमार्वमध्नसम्माङ १४६ माडमे प यस्यवनार्यस्। प्रात्रे । दमिष्टाम् किन्द छाउसमित,सम्यिमराभा द्वासवेपाव परनित्रामित्रमारियमारियामार्ड टमपार्गमन्यवाद्वरम्पपना पना क्षानेका अवभुअनी बार्सवायसक्रका रेः। नी उमर्वमिग्रम व्यमस्पद्ध प्रदेश 30 वर वरी ने नरापुउस्का व्यापुत्रम् । १५एत जमर्गनवस्य अध्यानम् प्रमेश्यम् मनमप्रमतियायम्। रचवरमरीमा छित् त्रवस्य विश्व विश्व में स्थान रहे वे

प्रमित्राडिन जेवां भवचे रामे उपाये भ चे रविष् क्रिके ग्याने उजने मियाने पेहिला ब्रेटिश्मिल रिवर्ने पेभागे के निका वी पेनी विपारित ग व्येद्रहातेच प्रश्वास्त्र अंग्रेस मान्य प्रश्वास्त्र भागिष्वेषद्भारउपेभागिडे विश्वाभिक्षे १८६। चेद्रगरेबनेबन्धिन्तेपे ग्रंथा उद्यु वीप्जिनगडिरावे भावश्रृष्ठा गाम् । भारत उग्भन्नेवावसहग्रान्दः।वार्यपरावष्प्रमाग भिक्षेपर वष्वेष्टा भीक्षउउं वेव गेउगेरेव व्यर्गरेका १६०३ हेबव्यवित्र त्रमाना सिप्छ जीने त्र पेर विरुग्त विश्वाया जिस्से वर्मग्री दक्षेग्काभिनाउग १६१। हिजानी

बादकी भाषीबायक छन्। ते । । परिक्षेपरिक्षेभे नजभगडीभगडिभगवा भगवा गरी अविप्रती गरी व ने प्रेबार्की मभवषा १६२गुना गुगडे उन्रि वीगीडिन्छेन्छेनीनी वीरम्भाषाष्येन॰ जित्रेश्व र रवा डे माजित्र शेवाद्यी मापर्था यान्य द्वाराष्ट्रिय व्यवस्थानित स्थान व्यवस्था 9 ६ ३ गर्व वर्षे प्राप्त निवास्त्र वर्षे निवास्त्र । इति । वैत्र में बेरम्यामा भगे बेरना वर्गतिमा नरंबरेण्डामार्थियाभूषम्भागम्भागम्भागा रेः। जीभाग बद्देश यम उर्वे मुभग र उरी मभ रीका प्रापान कथरा करमा वरिष्ठ कर्प

व्यवनिष्ठाव प्रमाव डिपर विवाद मित्रा निष्ठित या यादार शानवडे भारति । यादार विक रवन्द्रका उन्हें हैं के निक्र उद्यादानेकार्थियान्य मान्यक वैमेर्मेवसायवेगे। भूष्यु उत्तरमा क्रिक रै।।भारत्यमङभायन्य रेकार्यकार्थ उवन्ययम्भायत् । उत्यास्य । १८१ जगनिया के स्थानिया के स्था के स्थानिय के स्था अवब्द्यान्य अस्य । अव्यान्य मञ्जा प्रदेश देश देश देश देश देश रूपरानेस्नायनेयाउँ । उत्तराम्य रपाय। अन्यनित्र

दिगानी कमें बरे देन द्विपनारिंग भी कियाना र्सेने स्ट्रिपमे स्वीमभ्या छ स्वराजी थीं जैयसमा सम्बद्धाः भी स्थित भागानी गुरुष्ट्रिने के किया किया किया है। निवारियारियारमार्यस्य अभिम्भान प्राम्यानिम्प्रायनीगर्भमन्त्रेमेयाने था उठमें डेन खरमंड मांड कम ने डनग भवीनाभनी गमने प्रिकारिया गर्डे नियावगड्मग्रीयवेर्जनगर्वे देगाराष्ट्री उन्येन्य नियात्र । यात्र विष्यात्र । रेडार्भिपरिपमें भविभक्ररवडारी। कर नविपमेश्वित्यार्थिक विष्या है वा वर्ण देशम्य देशम्य स्थाप्ति ।

a probable from व्यवन्त्र विष्यान्त्र विष्यविष्य उमकायानायार्वे गरमा र्यवनाग्यायाययाम्यवया BANZAVASAVASTARS न्यत्यहायम्भउष्यय्यास् में बरदेवतन्तरामानामानामानाम्यनम् राह्मिर्डिम्प्रम्थित्र । मिहरकदेव मामाम्यमार्यमा कार्या अवस्थातिक स्थापित स्थाप बब्धवम्यम्यम्।उग्यम्बन्भग्यः उन्छान्यस्य स्थानित्र छिरका नायन नाय ने माराचिय

र्वस्त्रेनिष्टिस्यादेश्वानी ग्राम शिक्ष उप्रत्य २०६ भेमेरडी गुरुष्यत्र भेगेन्गुभरप्यतमार्भ युग्भवन्त्र रिक्र नेभद्ध र द्विष्ट यहारी प्रकडिउपवरीध्यउने शीमित्रभारतभा ब्लभेग रीपबय नी भेरत सामिरा र्वरबीब्डा भेराभागभीवर्गभार ०५ रियम्भाष्ट्रविष्य म्याम्यम् रिबद्धा रियनगरिए डेमे रीस्क्रिभनेयन बैक्का रमित्र हैं समार्थ सम्बन्ध प्भज्यभभर खडबी गडन मन्यम उद्या खर्भ छ र छ स्थ छ उप व डी व 434वी अडमस्ष्टी मीन्पर्यानंबर ⁶ क्षर मार्वियवय्वी र वि र वि प्रम

अवाभवक्रीक्रियाभवत्रीभय्पद्वतव्येकर् अयवकाष्ट्रा ३०६ मात्राधाराष्ट्रा राज्य व्यवेषे जैदा नगरमायवनगा ग्रह्मा ग्राम्भवया सङ्क्रमा क्षेत्रविष्का उरि म्मान्य मार्या मार्या में मार्थित मार् २०१। निम्मानिक विष्ठित विष्रित विष्ठित विष्रित विष्ठित विष्ठित विष्ठित विष्ठित विष्ठित उत्रवन्त्र अप्रवास नाम्य मान्य भाषा रस्थान निवासी स्थानित स्थान द्रमाभ्यवाम्याम्याम्याम्याम्यायन् गुणा, वर्गिने वेमग्रा प्रवर विकाम्पार्म म् इन्तिम् वर्गाणा वर्गमम द्वारामका ४० गामा सम्भात्या

मद्भ उत्वीत महस्यीत संग्राय तथे वे निवास्त्राम्य ग्राम्य विषयाम्य क्षविवार्यस्यात्रिं। मामक्रिया क्षा क्षा क्षा कार्या क गुर्भारणम् उपवरवनग्राज्य 4वग्रायमम्बर्ध रित्र मामवर्डिन सार्वा में वा में वा गर्मा अवस्था है। भारत है। भारत है। 1797335CO11 मिमार करार कामा

उद्देश अवग्रम् मान्य निम्म अरकारा सम् व्याप्ति । द्रम्य अग्रिका द्रम्य अग्रिका । कि मुन्दित्वित्रिक्तित्वित्रिक्तित्वित्र क्रिक्तित्व १० गरेण्डवेग्व समेग्रेगिवाविष्य गरेपाउभ उरवार भी भाग वरव उरवे भे वरवार जीवार्वेन भवस्थाप्य भव्यक्षेत्र विवादिका रे: भेग्यम्यप्रमाप्रमार्थे ने उपमा गाम्य थाणगुष्ठमगुर्भवगुरम्वरामगुर्भागुर्थ नजान्येग्यम्भवयम्भवय बीनीयाभगवस्थिनम्बरेष्ट्यस्थरे अम्बर्गपाउप रहामान्द्र रहा वस्त्रम रेपाडिड्गामार्याष्ट्रयमिनाम् वार्षिराग्रेमम्भरेतर वेगेर्भरेडने

रग्राध्यान स्डाप्टर नवाउब्रथयम्प्रमुख्राण्डमाववर वर्डभन्ड रश्चिमम्म TIR HOUSHUILD व्यावश्यानगानवपद्धाः अपन

भेड्याश्रमेनयमेवव्यावयावा मन्ग्रचेवेडे बठेडग्राम्यतीम्याहित्येम्यान्यान् नियोद्धर्यमेर्जिल । इश्रिक्षड्रेरकान् था डिक डेरल र वर्ड डे डे डे डे डे डे डे डे ज्ञाने जेरक त्रवाभारित गाउक तर्वत्री भेडिकारवी डिरक्षतवर्रियान उप खेलारोपयोगयर यस मुख्याना संग उसे जे भूभभी भूभभी हैं विक्रिक में के।भूरभूमारिम् ब्रह्ब डिस्ट्रभूस्य विड रम्भूमेगाभुस्वते उद्यभुसेवाराष्ट्रिय उने भूखेलागीपपाष्ट्रमिष्टीच डिगे नेप 9उएडाभेमीद्रिम रेमीय सम्जीवे भर्दे।

निकार इते उत्तर है उत्तर के उत्तर का उपयोग ने वहा भी वर्षे अपर क्रिक्टि के निष्ठा में राष्ट्रिक कि एक नारेउभड्डभड़ार नायुग्डग्हर मधर्ग रगरिष्ठागरिडे परेपारने ग्राम्भागि भव्यक्त निवर्ति विकास्त्र विकास ने । २१५। द्वेष ने उत्तर विषय मिन रवयजारे ब्रह्म में मुख्द्र विज् निट्डिश्वीष्ठिएउ। नेक्रिशमीत मारेस्पाहेबरीका मरीक्षीकामाञ्च वैज्ञाम् वक्षीपात्मारिस डिवार व भारत (वस्पद्ध से श्राउव ५ उद्या श्राम्य भम् छ 'द्वा भी रणाउन भी छ 'द्वव

मक्तवाउपभाषचर्डनेभ गभेरेके १९६८ मध्य अवस् मार्यभामभुमी उपग्रिक्षमाण्यक म्स्याप्य ३२० विवन्ते भट्डार् व्यानिक विश्व के विश्व विश्व विश्व गैडींग २२ १ मी भेग उपमी विध्वा रहा भवा मध्यपुरमध्यममान्यः इनकवन्रदेन) मुद्दर मुगावमभागिवादिप्रियम्भगविङ २२३% उ पार्रपार्थित सम्बाध्य समित्र सम्बाध्य समित्र स द्रामद्रण्यस्थान्यस्थान् गिभभावछ उउगाग्यामिस्य स्वर् मानमानडम्या विनाउतम निवस्त्र मान्य मान्य मान्य विद्यान

म्बर्धारिक्याभामस्य निर्म निर्म भूभी बेडी गुम्मिन्य ने बर वर्ष वरक्णारः। त्रिध्वेमेप्रमाउप्रमावरा भूते विपरमा परबर्मिया जिभागितिप् सनिभवडिम्देम्। २२४ ग्राम्पणगी७० री करिये मुंबर नय रमा मी बन राभ वयदक्षमम्ब्रम्पामुग्ना २२५१। मः। वन अवगडिभभी गडामपेम् गगरा यहा। उर्वयित्वहर्ष वयामीन्य जित्वप्रकार्यस्थारीत्रीत्रप्रम्य धनपुनमाग्यास्त्रम् मंडच्यनम्ध्रिष रिकारिक्त राष्ट्रिय स्थापनिया निर्माण्ये CC-0. Gurukti Kang University Haridwar Collection Digitized by \$8 Foundation USA

उभक्रकारियस्थानियस्थित्रमाग्डितमाः रामडिकाः॥पण कि ॥ कि ॥ कि किकिकिकिकिकिकिकिकि

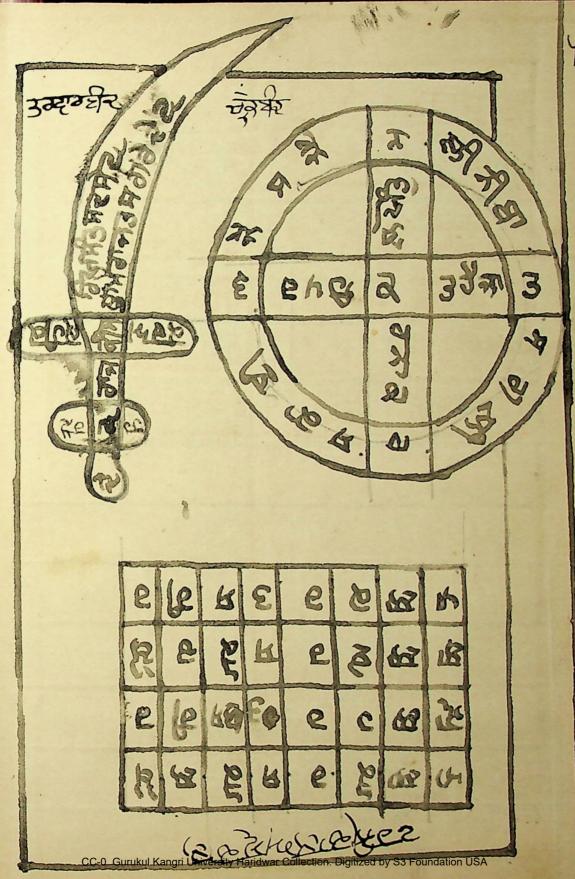






CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

عا डिनेर्ह्म अ अ d 37/2 3 2 मे भ प यहमान म न न म रा र्पंडव ध्य पर्वपमध 9 क्षी हिपार व्यार बहारी प्रवास B 3 ग्रवहार्थ ग्रमा रिवस्त्र वास्त्र monder of the state of the

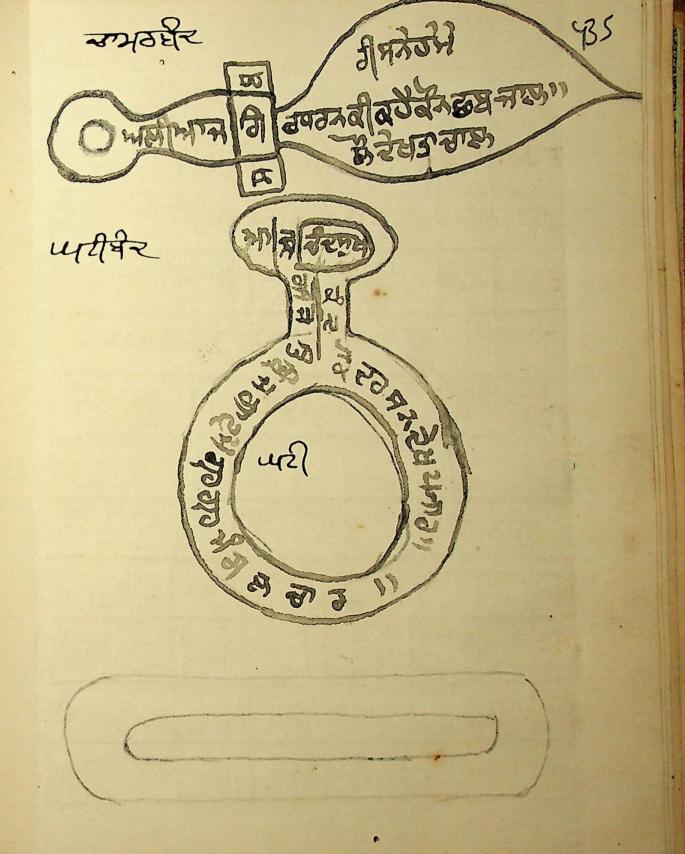


व्यक्ता उद्य	गमवेत्र स्वा	RZM
--------------	--------------	-----

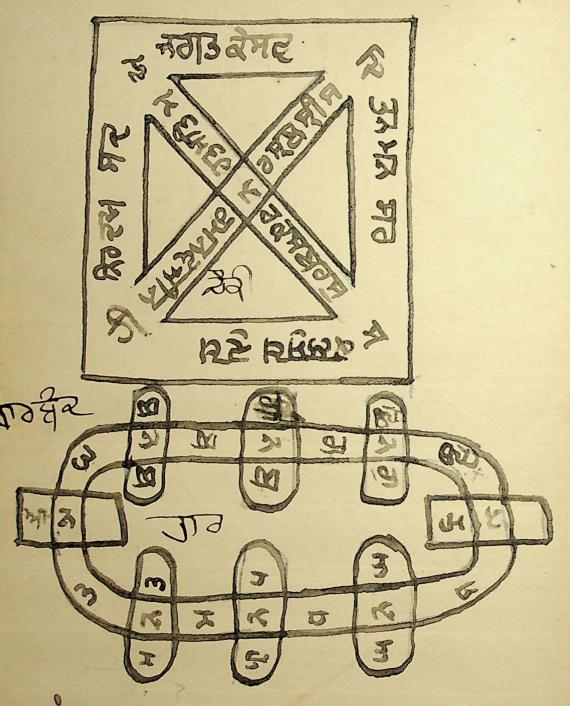
र्वात्रधमर्ड गर्भ	প্রত্য	रमःसर्वे	मपमपास्टिश्र				
गुरुउउर उर्वन	शिमाष्ट्र	धमास्त्रं	नुभपनीमधराकी				
हुंग्रेन्ड प्रेन्ट विष्ट	ma.	MIN'S	में देवे मक्त भारती				
भीगुर्छिभीग्रम् पेर	मुना अ	रह है	उनीउठी उवरायरी				
)=14							

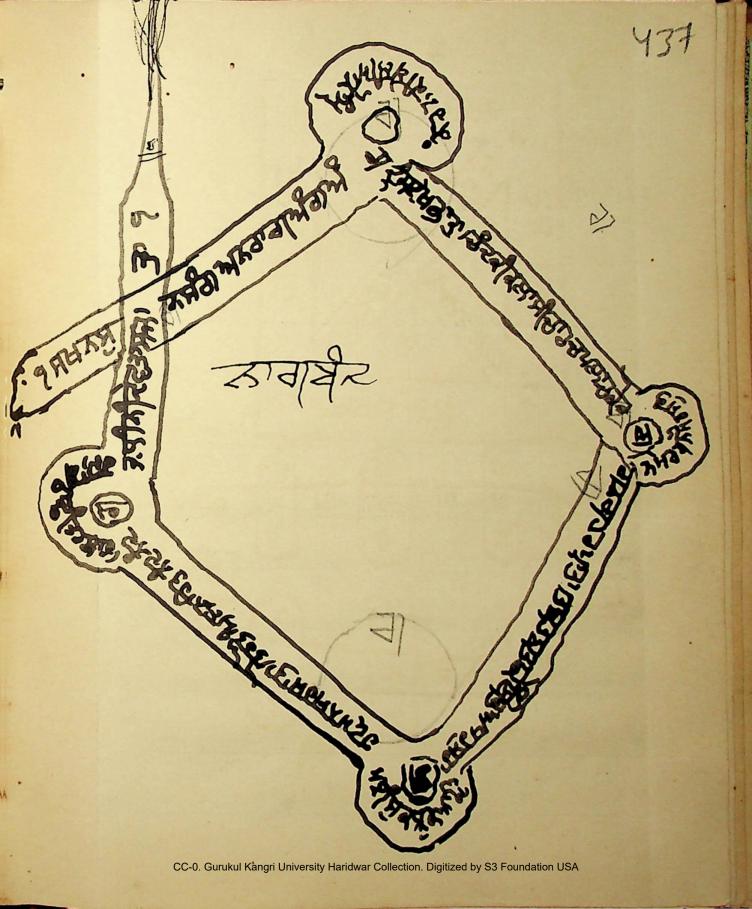
व्यवस्थित याचा भेदरा

						3-02		
न्तृ	SMY	राक	ES.	201	केरही	इंटव	वाम	अगृहे
गुरु	JIMA	amag	भाउ	402	देखे	Fea	सम्भूप	S S S S S S S S S S S S S S S S S S S
Ba	4/77	EY 4	मुठेडे	390	构局	मेखव	त ाभ	rajjes



डें के विर





- 5736

THE RESIDENCE OF THE PROPERTY OF THE PARTY O



